बजुज़

ग़ज़ल

वो यक़ीं है, न गुमाँ है, तनना हू या हू,
जान-ए-जानान-ए-जहाँ है, तनना हू या हू,

कौन आशोबगर-ए-दैर-ओ-हरम है आख़िर,
जो यहाँ है, न वहाँ है, तनना हू या हू,

किसने देखा है, मकाँ और ज़माँ को यारा,
न मकाँ है, न ज़माँ है, तनना हू या हू,

मैनें मा`नी में न पाए कोई मानी, या`नी,
लफ्ज़ ही मआल-ए-ज़ुबाँ है, तनना हू, या हू

मैं जो इक फासिक़-ओ-फाजिर हूँ, जो ज़िंदीक़ी हूँ,
रम्ज़-ए-"हक़" मुझमें निहाँ है, तनना हू या हू,

हज़र अरबाब-ए-"कलीसा", कि ये मा`मूरा-ए-तो,
सर दम-ए-एहरमनाँ है, तनना हू या हू,

क्या भला सूद-ओ-ज़ियाँ, सूद-ओ-ज़ियाँ क्या मा`नी,
कुछ न अरज़ाँ, न गिराँ है, तनना हू, या हू,

गुमाँ - शक़, जान-ए-जानान-ए-जहाँ - सारी दुनिया की जान, आशोबगर-ए-दैर-ओ-हरम - मंदिर और मस्जिद के नाम पर झगड़ा करवाने वाला, मकाँ - घर, ज़माँ - वक़्त, माल-ए-ज़ुबाँ - भाषा का परिणाम, फासिक़-ओ-फाजिर - बदचलन और पापी, ज़िनदीक़ी - अधर्मी और नास्तिक, रम्ज़-ए-हक़ - सच की पहेली, निहाँ - छुपा हुआ, हज़्र - बचाव, अरबाब-ए-कालिसा - गिरिजाघर में रहने वाले, मामूरा - बस्ती या मोहल्ला, सरदम-ए-एहेरमनाँ = शैतानों के ख़ुदा जादू, सूद-ओ-ज़ियाँ - फ़ायदा और नुक़सान, अर्ज़ां - सस्ता, गिराँ - महँगा,

ज़िंदगी क्या है मियाँ जान, भला क्या कहिए,
शायद इक अपना समाँ है, तनना हू या हू

सीना-ए-वक़्त, क़यामत का है छलनी, लेकिन,
न कमीं है, न कमाँ है, तनना हू या हू,

मुफ्लिसाँ ! दिल से ख़ुदावंद तुम्हारे पे दुरूद,
क्या ही रोज़ीना रसाँ है, तनना हू या हू,

ये जो मुन`अम है, इन्हीं का तो है फित्ना सारा,
और दीन इनकी दुकाँ है, तनना हू या हू,

शाम फ़ुरक़त की है, और मौज-ए-शुमाल-ए-सरसब्ज़,
मेरे सीने में वज़ाँ है, तनना हू या हू,

यार का नाफ़-ए-प्याला तो बला है याराँ,
हश्र, महशरतलबाँ है, तनना हू या हू,

वो मेरी जान, मेरी जान, शिकमरक़्क़ासा,
क्या ही वज्दआवर-ए-जाँ है, तनना हू या हू,

समाँ - मौसम, कमीं = छुपकर शिकार करने वाला, कमाँ - धनुष
मुफ्लिसाँ - ग़रीब, ख़ुदावंद - मालिक, दूरूद - दुआ और सलाम ख़ास तौर पर रसूल पर किया जाने वाला,
रोज़ीनारसां - प्रतिदिन वेतन मिलना, मुन`अम - अमीर, फित्ना - झगड़ा या मसअला, दीन - धर्म,
दुकाँ - दुकान, फ़ुरक़त - जुदाई या विरह, मौज-ए-शुमाल-ए-सरसब्ज़ - उत्तरी दिशा की हरियाली,
वज़ाँ - जो चल रहा है, नाफ़-ए-पियाला - प्याला रूपी नाभि, याराँ - दोस्तों, हश्र - प्रलय, महशर - प्रलय,
तलबाँ = याचक, शिकमरक़्क़ासा = अपना पेट पालने के लिए नाचने वाली औरत, वज्द आवर-ए-जाँ = नाचने में खोयी हुई है,

ख़ून ही थूक रहा हूँ, मैं बिछड़ के उससे,
वो ही तो रंग रसाँ है, तनना हू या हू,

धूल उड़ती है मेरी जान मेरे सीने में,
दिल मेरा दश्तफ़िशाँ है, तनना हू या हू,

"जौन" मैं जो हूँ, कहाँ हूँ, मुझे बतला तो सही,
"जौन" तू मुझमें तपाँ है, तनना हू या हू,

रसाँ = पहुँचा, दश्तफिशाँ - वन की तरह, तपाँ - तड़पने वाला

ग़ज़ल

कफ़-ए-सफ़ेद-ए-सर-ए-साहिल-ए-तमन्ना है,
और उसके बाद सराबों का एक दरिया है,

ये आरज़ू का फुसूँ, ज़ार-ए-जाविदाना क्या,
न आरज़ू, न फुसूँ, ज़ार-ए-जाविदाना है,

है कब से, पर्दा-ए-आवाज़ को सुकूत-ए-हवस,
सुकूत, पर्दा-ए-आवाज़ को तरसता है,

है दरमियाना अज़ल ही से एक तर्क-ए-सुख़न,
पर इक सुख़न, जो अज़ल ही से दरमियाना है,

ये ख़ाकदाँ है बस इक रोज़ ना तवह्हुम का,
ये रोज़ ना ही तवह्हुम का एक तोशा है,

न जाने कब से इक आशूब है सवालों का,
मगर सवाल तो ये है, कि मसअला क्या है,

न पूछ हालत-ए-जाँ, काह-ए-तुंदि-ए-परवाज़,
तकान-ए-बाल-ओ-पर-ए-जाँ ही राहतअफ़ज़ा है,

कफ़-ए-सफ़ेद-ए-सर-ए-साहिल-ए-तमन्ना - तमन्नाओं की नदी के किनारे पर सफेद रंग का झाग, सराब - वो रेत जो डोर से पानी की तरह चमकती हुई प्रतीत होती है, फुसूँ - जादू, राज़-ए-जाविदाना - वो भेद जो हमेशा बना रहे, सुकूत-ए-हवस - ख़ामोशी की तमन्ना, दरमियाना - बीच में, अज़ल - शुरू से, तर्क-ए-सुख़न - बोलचाल बंद कर देना, ख़ाकदाँ - इंसान, रोज़ना - नियमित, तवह्हुम - शंका या अंधविश्वास, तोशा - यात्रा का सामान, आशोब - शोर गुल, हालत-ए-जाँ - रूह की हालत, काह-ए-तुंदि-ए-परवाज़ - कटी हुई घास का उड़ना, तकान-ए-बाल-ओ-पर-ए-जाँ - आत्माबल की थकान, राहतअफ़ज़ा - आराम देने वाला,

वो जान-ए-ख़िल्वत-ए-मुमकिन है, दिल के पहलू में,
और एक हश्र-ए-मुराद-ए-मुहाल बरपा है,

है उसका नाफ़-ए-पियाला ग़ज़ब कि मत पूछो,
कि उसकी एक झलक, इक बला का नश्शा है,

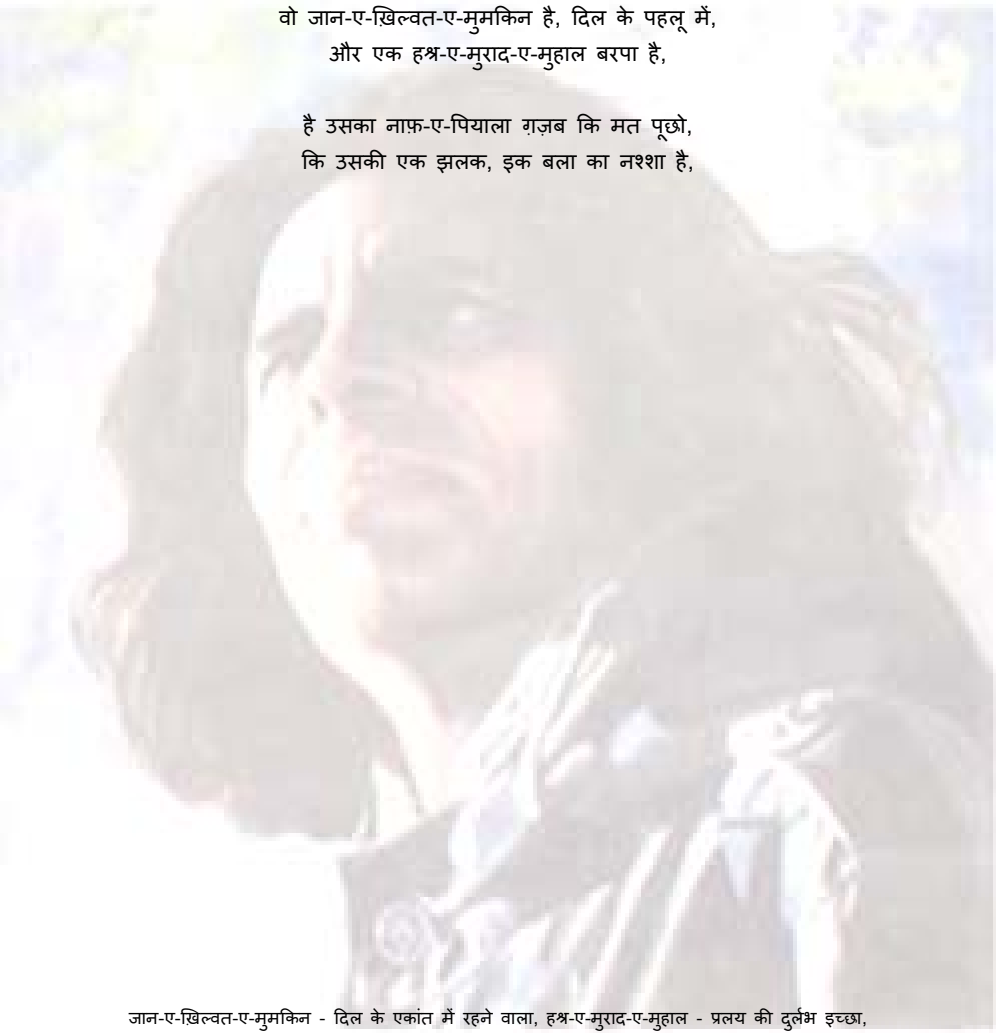

जान-ए-ख़िल्वत-ए-मुमकिन - दिल के एकांत में रहने वाला, हश्र-ए-मुराद-ए-मुहाल - प्रलय की दुर्लभ इच्छा,
नाफ़-ए-पियाला - प्याला रूपी नाभी,

ग़ज़ल

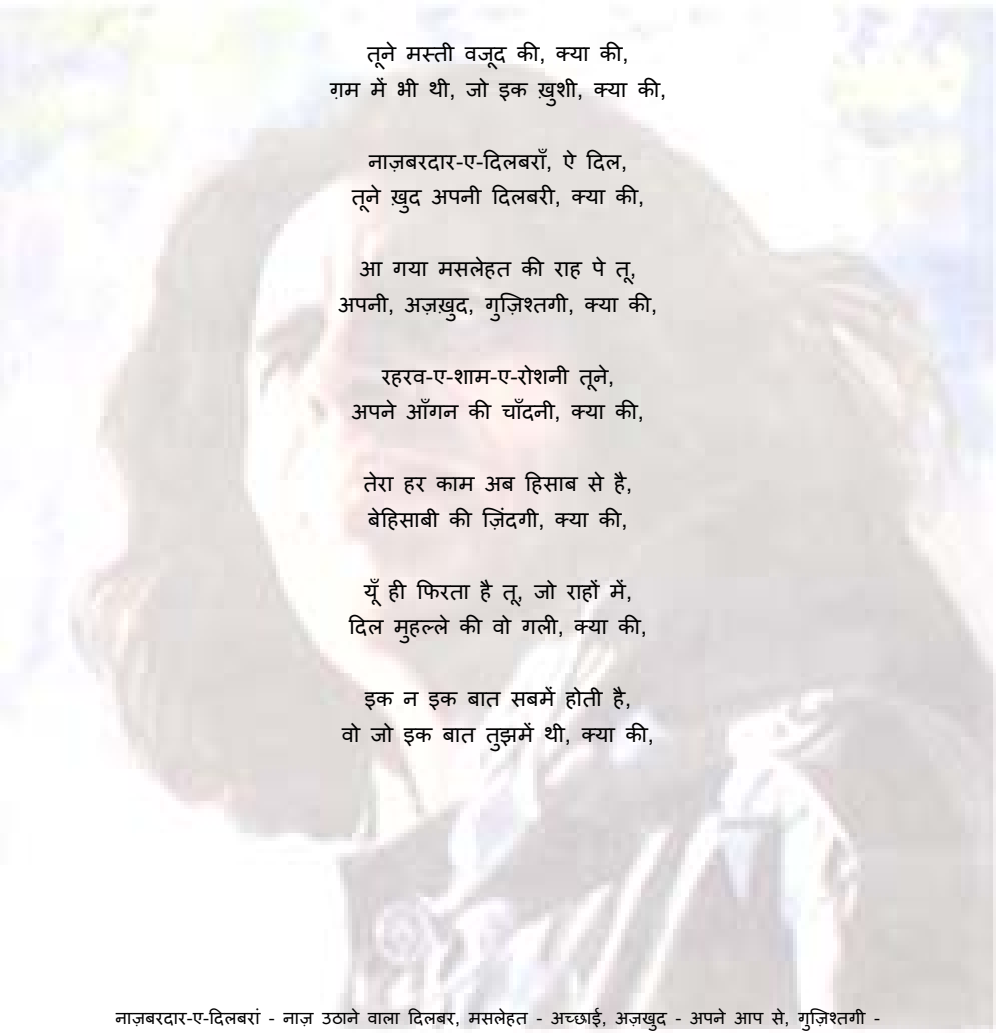

तूने मस्ती वजूद की, क्या की,
ग़म में भी थी, जो इक ख़ुशी, क्या की,

नाज़बरदार-ए-दिलबराँ, ऐ दिल,
तूने ख़ुद अपनी दिलबरी, क्या की,

आ गया मसलेहत की राह पे तू,
अपनी, अज़ख़ुद, गुज़िश्तगी, क्या की,

रहरव-ए-शाम-ए-रोशनी तूने,
अपने आँगन की चाँदनी, क्या की,

तेरा हर काम अब हिसाब से है,
बेहिसाबी की ज़िंदगी, क्या की,

यूँ ही फिरता है तू, जो राहों में,
दिल मुहल्ले की वो गली, क्या की,

इक न इक बात सबमें होती है,
वो जो इक बात तुझमें थी, क्या की,

नाज़बरदार-ए-दिलबरां - नाज़ उठाने वाला दिलबर, मसलेहत - अच्छाई, अज़ख़ुद - अपने आप से, गुज़िश्तगी - गुज़रना, रहरव-ए-शाम-ए-रोशनी - मुसाफ़िर की तरह गुज़रने वाली शाम की रोशनी,

जल उठा दिल, शुमाल-ए-शाम मेरा,
तूने भी मेरी दिलदही, क्या की,

नहीं मा`लूम हो सका दिल ने,
अपनी उम्मीद-ए-आख़िरी, क्या की,

"जौन" दुनिया की चाकरी करके,
तूने दिल की वो नौकरी, क्या की

शुमाल-ए-शाम - उत्तर की शाम, दिलदही - उत्साह बढ़ाना, उम्मीद-ए-आख़िरी - आख़िरी उम्मीद,

ग़ज़ल

हसरत-ए-रंग आई थी, दिल को लगा के ले गयी,
याद थी, अपने आप को, याद दिला के ले गयी,

ख़ेमागहे फ़िराक़ से, ख़ेमागह-ए-विसाल तक,
एक उदास सी अदा मुझको मना के ले गयी,

हिज्र में जल रहा था मैं, और पिघल रहा था मैं,
इक ख़ुनक सी रोशनी, मुझको बुझा के ले गयी,

इक शमीम-ए-पुरख़याल, शहर-ए-ख़याल से हमें,
ख़्वाब दिखा के लाई थी, ख़्वाब दिखा के ले गयी,

दिल को बस इक तलाश थी, बेसरोकार-ए-दश्त-ओ-दर,
इक महक सी थी कि बस, रंग में ला के ले गयी,

याद, ख़राब-ओ-ख़स्ता याद, बेसर-ओ-साज़-ओ-नामुराद,
जाने क़दम क़दम कहाँ, मुझको चला के ले गयी,

यार, ख़िज़ाँ ख़िज़ाँ था मैं, ऐसी फ़ज़ा-ए-ज़र्द में,
निकहत-ए-बाद-ए-सब्ज़फ़ाम, मुझको ख़ुद आ के ले गयी,

हसरत-ए-रंग - रंग की इच्छा, ख़ेमागहे फिराक़ से, ख़ेमागह-ए-विसाल तक - विरह के डेरे से मिलन के डेरे तक, हिज्र - विरह या जुदाई, ख़ुनक - ठंडी, शमीम-ए-पुरख़याल - ख़ुश्बू की तरह सुगंधित ख़याल, शहर-ए-ख़याल - ख़याल का शहर, बेसरोकार - बग़ैर किसी मतलब के, दश्त-ओ-दर - वन और चौखट, ख़राब-ओ-ख़स्ता - ख़राब और खोखली, बेसर-ओ-साज़ - जिसके पास राह का कोई समान न हो, नामुराद - बदनसीब, ख़िज़ाँ - पतझड़, फ़ज़ा-ए-ज़र्द - जहाँ पीले पीले फूल खिले हों, निकहत-ए-बाद-ए-सब्ज़फाम - बहार की ख़ुश्बू,

दश्त-ए-ज़ियान-ओ-सूद में, बूद में और नबूद में,
महमिल-ए-नाज़-ए-इश्वागर, मुझको बिठा के ले गयी

महफ़िल-ए-रंग-ए-तौर में, ख़ून-ए-जिगर था चाहिए,
वो मेरी नोशलब मुझे, ज़हर पिला के ले गयी,

सैल हक़ीक़तों के थे, दिल था कि मैं कहाँ टलूँ,
और गुमाँ की एक रौ, आई और आ के ले गयी,

तू कभी सोचना भी मत, तूने गँवा दिया मुझे,
मुझको मेरे ख़याल की, मौज बहा के ले गयी,

सरसर-ए-वक़्त ले गयी, उनको उड़ा के नागहाँ,
और न जानिए कहाँ, उनको उड़ा के ले गयी,

मौज-ए-शुमाल-ए-सब्ज़फ़ाम, क़रिया-ए-दर्द से मुझे,
जादा ब जादा, कू ब कू, धूम मचा के ले गयी,

दश्त-ए-ज़ियान-ओ-सूद - फ़ायदे और नुकसान का वन, बूद - अस्तित्व, नबूद - अस्तित्व विहीन, महमिल-ए-नाज़-ए-इश्वागर - नखरे करने वाली पालकी, महफ़िल-ए-रंग-ए-तौर - ऐसी सभा जो अच्छे से सजाई गयी हो, नोशलब - अमृत जैसे होठों वाली, सैल - सैलाब या बाढ़, गुमां - शंका, रौ - लहर, सरसर-ए-वक़्त - समय की आँधी, नागहाँ - अचानक, मौज-ए-शुमाल-ए-सब्ज़फाम - उत्तर दिशा की हरियाली, क़ारिया-ए-दर्द - दर्द का गाँव, जादा ब जादा - रस्ते रस्ते, कू ब कू - गली गली

ग़ज़ल

ज़मीं तो कुछ भी नहीं, आसमाँ तो कुछ भी नहीं,
अगर गुमान न हो, दरमियाँ तो कुछ भी नहीं,

हरीम-ए-जाँ में है, इक दासताँसरा पुरहाल,
ख़ुश उसका हाल, मगर दास्ताँ तो कुछ भी नहीं,

दुरूनियान-ए-तसल्ली से तू मिला है कभी ?
अज़ाब-ए-हसरत-ए-बेरूनियाँ तो कुछ भी नहीं,

सहे हैं मैनें अजब कर्ब सूदमंदी के,
गिला है तुझको ज़ियाँ का, ज़ियाँ तो कुछ भी नहीं,

किसे ख़बर सर-ए-मंज़िल, जो दिल ने हाल सहे,
अज़ीयत-ए-सफ़र-ए-रायगाँ तो कुछ भी नहीं,

नहीं है मुझसा, ज़ुबाँदाँ कोई ज़माने में,
जो मेरा ग़म है, वो ये है, ज़ुबाँ, तो कुछ भी नहीं,

है "जौन" क़ाफ़िला-ओ-राहला में शोर बपा,
यहाँ तो कुछ भी नहीं है, वहाँ तो कुछ भी नहीं,

गुमान - शंका, दरमियाँ - बीच में, हरीम-ए-जाँ - दिल का घर, दासताँसरा पुरहाल - आप बीती सुनाने वाला, दुरूनियान-ए-तसल्ली - मन की शांति, अज़ाब-ए-हसरत-ए-बेरूनियाँ - बाहर की इच्छाओं का सितम, कर्ब - दुख, सूदमंदी - फ़ायदा लेने के, गिला - शिकायत, ज़ियाँ - नुक़सान, सर-ए-मंज़िल - मंज़िल के सामने, अज़ीयत-ए-सफ़र-ए-रायगाँ - बेकार के सफ़र की परेशानियाँ, ज़ुबाँदाँ - भाषाओं को जानने वाला, क़ाफ़िला - पदयात्रा करने वालों का झुंड, राहला - ऐसे जानवर जिनकी सवारी की जा सके,

ग़ज़ल

तेरे ख्वाब भी हूँ गँवा रहा, तेरे रंग भी हैं बिखर रहे,
यही रोज़-ओ-शब हैं तो जाने जाँ, ये वज़ीफ़ाख़्वार तो मर रहे,

वही रोज़गार की मेहनतें, के नहीं है फ़ुर्सत-ए-यक नफस,
यही दिन थे काम के और हम, कोई काम भी नहीं कर रहे,

हमें शिकवा तेरी अदा से है, तेरी चश्म-ए-हालअफ़ज़ा से है,
के दरीचे आगे भी हम तेरे, यूँ ही बेनिशात-ए-हुनर रहे,

मेरा दिल है ख़ूँ के हुआ ये क्या, तेरे शहर-ए-माजराख़ेज़ को,
न वो होश है न ख़रोश है, न वो संग है, न वो सर रहे,

है मुक़ाबले की, हरीफ़ को, बहुत आरज़ू मगर इस तरह,
कि हमारे हाथ में दम को भी, कोई तेग़ हो, न सिपर रहे,

अजब एक हमने हुनर किया, वो हुनर बतौर-ए-दिगर किया,
के सफ़र था दूर-ओ-दराज़ का, सो हम आ के ख़ुद में ठहर रहे,

रोज़-ओ-शब - रात और दिन, वज़ीफ़ाख़्वार - वेतन लेने वाले, फ़ुर्सत-ए-यक नफस - एक पल की भी फ़ुर्सत, चश्म-ए-हालअफ़ज़ा - ख़ूबसूरत आँखें, दरीचे - दरवाज़ा, बेनिशात-ए-हुनर - कला से नाख़ुश, शहर-ए-माजराख़ेज़ - शहर के हालात, ख़रोश - शोर शराबा, संग - पत्थर, हरीफ़ - दुश्मन, तेग़ - तलवार, सिपर - ढाल, हुनर - जादू, बतौर-ए-दिगर - दूसरी तरह से, दूर-ओ-दराज़ - दूर,

यहाँ रात दिन का जो रन पड़ा, तो गिला ये है के यही हुआ,
रहे शहर में वही मोतबर, जो इधर रहे न उधर रहे,

हैं अजीब साये से गामज़न, के फ़ज़ा-ए-शहर है, पुरफ़तन,
नहीं शाम ये रह-ओ-रस्म की, जो है घर में अपने वो घर रहे,

रन - लड़ाई का मैदान, मोतबर - इज़्ज़तदार, गामज़न - चलना, फ़ज़ा-ए-शहर - शहर का वातावरण, पुरफ़तन - घटनाओं से भरा हुआ, नहीं शाम ये रह-ओ-रस्म - मिलने जुलने की शाम नहीं,

ग़ज़ल

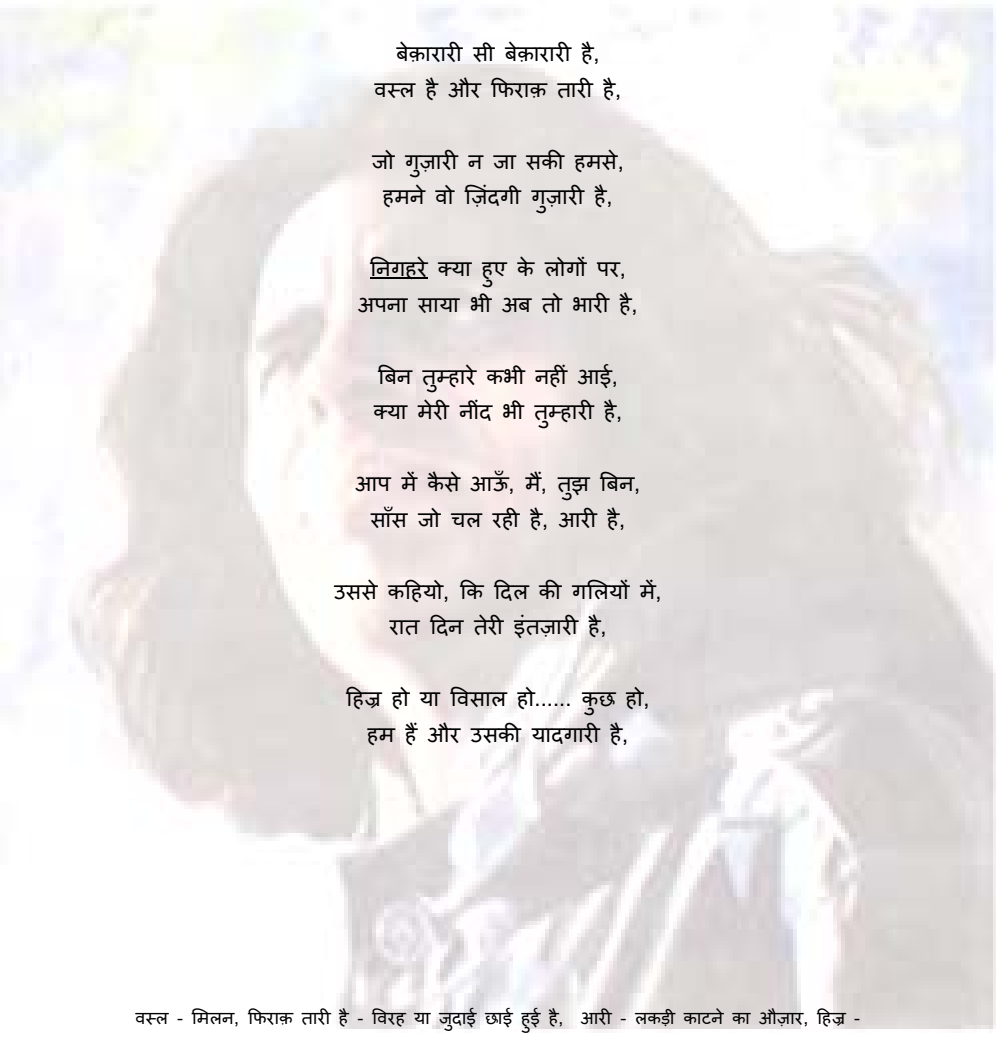

बेक़ारारी सी बेक़ारारी है,
वस्ल है और फिराक़ तारी है,

जो गुज़ारी न जा सकी हमसे,
हमने वो ज़िंदगी गुज़ारी है,

<u>निगहरे</u> क्या हुए के लोगों पर,
अपना साया भी अब तो भारी है,

बिन तुम्हारे कभी नहीं आई,
क्या मेरी नींद भी तुम्हारी है,

आप में कैसे आऊँ, मैं, तुझ बिन,
साँस जो चल रही है, आरी है,

उससे कहियो, कि दिल की गलियों में,
रात दिन तेरी इंतज़ारी है,

हिज्र हो या विसाल हो..... कुछ हो,
हम हैं और उसकी यादगारी है,

वस्ल - मिलन, फिराक़ तारी है - विरह या जुदाई छाई हुई है, आरी - लकड़ी काटने का औज़ार, हिज्र - विरह, विसाल - मिलन,

इक महक, सिम्त-ए-दिल से आती थी,
मैं ये समझा तेरी सवारी है,

हादसों का हिसाब है अपना,
वर्ना हर आन सबकी बारी है,

ख़ुश रहे तू, की ज़िंदगी अपनी,
उम्र भर की उमीदवारी है,

सिम्त-ए-दिल - दिल की तरफ़ से, हर आन - हर लम्हा

ग़ज़ल

कैसा दिल और उसके क्या ग़म जी,
यूँ ही बातें बनाते हैं, हम जी,

क्या भला आस्तीन और दामन,
कब से पलकें भी अब नहीं नम जी,

उससे अब कोई बात क्या करना,
ख़ुद से भी बात कीजे कम कम जी,

दिल जो दिल क्या था, एक महफ़िल था,
अब है दरहम जी और बरहम जी,

बात बेतौर हो गयी शायद,
ज़ख़्म भी अब नहीं है, मरहम जी,

हार दुनिया से मान लें शायद,
दिल, हमारे में अब नहीं, दम जी,

आपसे दिल की बात कैसे कहूँ,
आप ही तो हैं दिल के महरम जी,

दरहम जी और बरहम जी - यहाँ वहाँ बिखरा हुआ दिल, महरम - दोस्त, ज़िबह - कट जाना,

है ये हसरत के ज़िबह हो जाऊँ,
है शिकन इस शिकम की ज़ालम जी,

कैसे आख़िर न रंग खेलें हम,
दिल लहू हो रहा है, जानम जी,

है ख़राबा ये हुस्निया अपना,
रोज़ मजलिस है और मातम जी,

वक़्त दम भर का खेल है उसमें,
बेश अज़ बेश है, कम अज़ कम जी,

है अज़ल से अबद तलक का हिसाब,
और बस एक पल है पैहम जी,

बेशिकन हो गयीं है वो ज़ुल्फें,
इस गली में नहीं रहे ख़म जी,

दश्त-ए-दिल का ग़ज़ाल ही न रहा,
अब भला किस से कीजिए रम जी,

शिकन - बल, शिकम - पेट, ज़ालम - ज़ुल्म करने वाला, ख़राबा - वीराना, हुस्निया - ख़ूबसूरत, मजलिस - सभा, बेश अज़ बेश - अधिक से अधिक, अज़ - से, अज़ल से अबद तलक - शुरू से आख़िरी तक, पैहम - लगातार, बेशिकन - जिसके माथे पर बाल न हों, ख़म - बल, दश्त-ए-दिल का ग़ज़ाल ही न रहा - दिल के जंगल का हिरण ही न रहा, रम - भागना,

ग़ज़ल

बहुत दिल को कुशादा कर लिया क्या,
ज़माने भर से वादा कर लिया क्या,

तो क्या सचमुच जुदाई मुझसे कर ली,
तो ख़ुद अपने को आधा कर लिया क्या,

हुनरमंदी से अपने दिल का सफ़हा,
मेरी जाँ तुमने सादा कर लिया क्या,

जो यकसर जान है, उसके बदन से,
कहो कुछ इस्तेफ़ादा कर लिया क्या,

बहुत कतरा रहे हो, मुग़बचों से,
गुनाह-ए-तर्क-ए-बादा कर लिया क्या,

यहाँ के लोग कब के जा चुके हैं,
सफ़र जादा ब जादा कर लिया क्या,

उठाया इक क़दम तूने न उस तक,
बहुत अपने को माँदा कर लिया क्या,

कुशादा - बड़ा, हुनरमंदी - कला से, सफ़हा - पन्ना या पृष्ठ, यकसर - एक सिरे से दूसरे सिरे तक, इस्तेफ़ादा - फ़ायदा उठाना, मुग़बचों - शराब बेचने वाले के बच्चे, गुनाह-ए-तर्क-ए-बादा - शराब छोड़ने का पाप, जादा ब जादा - कई रास्तों का सफ़र, माँदा - थका हुआ,

तुम अपनी कजकुलाही हार बैठीं?
बदन को बेलबादा कर लिया क्या,

बहुत नज़दीक आती जा रही हो,
बिछड़ने का इरादा कर लिया क्या,

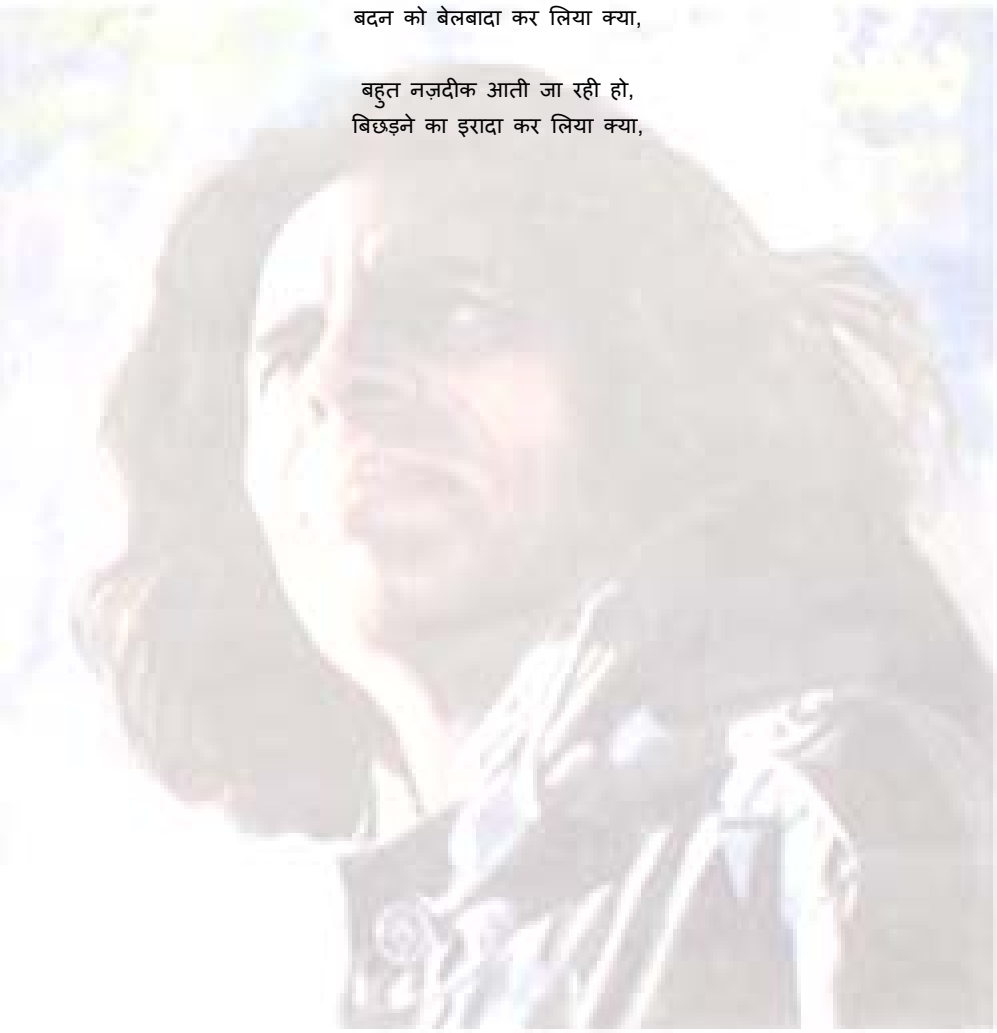

कजकुलाही - चंचलता, बेलबादा - निर्वस्त्र,

ग़ज़ल

अभी फ़रमान आया है वहाँ से,
कि हट जाऊँ मैं अपने दरमियाँ से,

यहाँ जो है, तनफ़ुस ही में गुम है,
परिंदे उड़ रहे हैं शाख़-ए-जाँ से,

दरीचा बाज़ है, यादों का और मैं,
हवा सुनता हूँ पेड़ों की ज़बां से,

ज़माना था वो दिल की ज़िंदगी का,
तेरी फ़ुरक़त के दिन लाऊँ कहाँ से,

था, अब तक मारका बाहर का दरपेश,
अभी तो घर भी जाना है यहाँ से,

फ़लाँ से थी ग़ज़ल बेहतर फलाँ की,
फ़लाँ के ज़ख़्म अच्छे थे फलाँ से,

ख़बर क्या दूँ मैं शहर-ए-रफ़्तगाँ की,
कोई लौटे भी शहर-ए-रफ़्तगाँ से,

यही अंजाम क्या तुझको हवस था,
कोई पूछे तो मीर-ए-दास्ताँ से,

फ़रमान - हुक्म, दरमियाँ - बीच में, , तनफ़ुस - साँसे लेना, शाख़-ए-जाँ - जान की डाली, दरीचा - दरवाज़ा, बाज़ - खुला हुआ, फ़ुरक़त - विरह या जुदाई, मारका - लड़ाई या जंग, दरपेश - सामने, फ़लाँ - किसी से या दूसरे से, रफ्तगाँ - बीता हुआ, मीर-ए-दास्ताँ - कहानी का राजा,

ग़ज़ल

शौक़ का रंग बुझ गया, याद के ज़ख़्म भर गये,
क्या मेरी फ़स्ल हो चुकी, क्या मेरे दिन गुज़र गये,

रहगुज़र-ए-ख़याल में, दोश ब दोश थे जो लोग,
वक़्त की गर्द बाद में, जाने कहाँ बिखर गये,

शाम है कितनी बेतपाक, शहर है कितना सहेमनाक,
हमनफ़सों कहाँ हो तुम, जाने ये सब किधर गये,

पास-ए-हयात का ख़याल, हमको बहुत बुरा लगा,
पस ब हुजूम-ए-मारका, जान के बेसिपर गये,

मैं तो सफ़ों के दरमियाँ, कब से खड़ा हूँ नीमजाँ,
मेरे तमाम जाँनिसार, मेरे लिए तो मर गये,

शौक़ - उमंग, रहगुज़र-ए-ख़याल - ख़याल के रास्ते पर, दोश ब दोश - कंधे से कंधा मिलाए हुए, गर्द बाद - धूल और हवा में, बेतपाक - भयानक, सहेमनाक - डरा हुआ, हमनफ़सों - साथियों, पास-ए-हयात का ख़याल - ज़िंदगी को बचाने का ख़याल, पस ब हुजूम-ए-मारका - और जुंग के मैदान में सैनिकों के बीच, बेसिपर - ढाल के बिना, सफ़ों - पंक्ति या क़तार, नीमजाँ - अधमरा, जाँनिसार - जान न्यौछावर करने वाले,

दो गजला

शाहिद-ए-रोज़-ए-वाक़या, सूरत-ए-माजरा है क्या,
कितने जत्थे बिखर गये, कितने हुजूम मर गये,

रौनक-ए-बज़्म-ए-ज़िंदगी, तुर्फ़ा हैं तेरे लोग भी,
इक तो कभी न आए थे, गये तो रूठकर गये,

ख़ुशनफ़सान-ए-बेनवा, बेख़बरान-ए-खुशअदा,
तीरानसीब थे मगर, शहर में नाम कर गये,

आज की शाम है अजीब, कोई नहीं मेरे क़रीब,
आज सब अपने घर रहे, आज सब अपने घर गये,

ख़्वाब-ए-तलाई-ए-ख़याल, दिल का ज़ियाँ था और मलाल,
होश के बावजूद हम, ख़्वाब-ओ-ख़याल पर गये,

सिम्त-ए-ज़म्मर-ए-दीन-ए-दिल, ख़ुद से है क्या बहुत ख़ुजल,
हम जो गुमान-ए-ज़र्द में, घर से गये न घर गये,

था जो नफ़स नफ़स का रंग, उसमें थी शोरिश-ए-बज़न,
ज़ख़्म बग़ैर वाँ से हम, ख़ून में तर बतर गये,

आपमें "जौन एलिया" सोचिए अब धरा है क्या,
आप भी अब सिधारिये, आपके चारागर गये,

शाहिद- गवाह, रोज़-ए-वाक़या - घटना का दिन, सूरत-ए-माजरा - घटना की स्थिति, हुजूम - भीड़, रौनक-ए-बज़्म-ए-ज़िंदगी - ज़िंदगी की सभा की रौनक, तुर्फ़ा - अजीब या अनोखे, ख़ुशनफ़सान-ए-बेनवा - वो लोग जो साँस की आवाज़ न निकालें, बेख़बरान-ए-खुशअदा - ऐसे लोग जो अपनी अपनी अच्छी चीज़ों से अंजान हैं, तीरानसीब - अभागे, ख़्वाब-ए-तलाई-ए-ख़याल - सोने चाँदी में जड़े हुए ख़्वाब और ख़याल, ज़ियाँ - नुक़सान, मलाल - दुख, सिम्त-ए-ज़म्मर-ए-दीन-ए-दिल - खुश दिल की तरफ़, ख़ुजल - लज्जित, गुमान - शंका में, ज़र्द - पीला,

ग़ज़ल

हंगामा-ए-निशात-ए-तबीयत भी जब्र है,
शायद कि इख़तियार की हालत भी जब्र है,

है जब्र इल्तिफ़ात-ओ-इनायत की आरज़ू,
और नाज़-ए-इल्तिफ़ात-ओ-इनायत भी जब्र है,

शिकवा ख़ुदा ग़रीब से तुमको है, जाओ भी,
उसके लिए तो उसकी मशीयत भी जब्र है,

आशुफ्त्गाँ को कौन बताए कि दोस्ताँ,
आशोब-ए-हा-ओ-हू, की ये फ़ुर्सत भी जब्र है,

वो जो था अपना शौक़-ए-फ़ुज़ूँ जब्र ही तो था,
ये अपना तर्ज़-ए-हुस्न-ए-मुरव्वत भी जब्र है,

आसाइश-ए-बक़ा की हवस जब्र थी, सो थी,
हर लम्हा ख़ुदकुशी की सहूलत भी जब्र है,

हमसे हमारी जुम्बिश-ए-लब का हिसाब क्या,
है शुक्र, जब्र, और शिकायत भी जब्र है,

हंगामा-ए-निशात-ए-तबीयत - मन की ख़ुशी का शोर, जब्र - ज़ुल्म या अत्याचार, इख़तियार - अपना लेना या क़ुबूल कर लेना, इल्तिफ़ात-ओ-इनायत - महरबानी और ध्यान, नाज़ - गर्व, मशीयत - मर्ज़ी, आशुफ्त्गाँ - पागलपन, आशोब-ए-हा-ओ-हू - शोर शराबा, शौक़-ए-फ़ुज़ूँ - बहुत ज़्यादा शौक़, आसाइश-ए-बक़ा की हवस - जीने के लिए आराम और सुख की इच्छा, सहूलत - आसानी, जुम्बिश-ए-लब - होठों के हिलने का

ग़ज़ल

बंद बाहर से मेरी ज़ात का दर है मुझमें,
मैं नहीं ख़ुद में ये इक आम ख़बर है मुझमें,

है मेरी उम्र जो हैरान तमाशाई है,
और इक लम्हा है जो ज़ेर-ओ-ज़बर है मुझमें,

क्या तरसता हूँ कि बाहर के किसी काम आए,
वो इक अन्बोह कि बस ख़ाकबसर है मुझमें,

डूबने वालों के, दरिया, मुझे पायाब मिले,
उसमें अब डूब रहा हूँ जो भंवर है मुझमें,

दर-ओ-दीवार तो बाहर के हैं ढहने वाले,
चाहे रहता नहीं मैं, पर मेरा घर है मुझमें,

मैं जो पैकार में, अंदर की हूँ बेतेग़-ओ-ज़िरा,
आख़िरश कौन है, जो सीनासिपर है मुझमें,

मारिका गर्म है, बेतौर सा कोई हरदम,
ना कोई तेग़ सलामत न सिपर है मुझमें,

ज़ख़्म हा ज़ख़्म हूँ, और कोई नहीं ख़ूं का निशाँ,
कौन है वो जो मेरे खून में तर है मुझमें,

ज़ात - व्यक्तित्व, दर - दरवाज़ा, तमाशाई - तमाशा देखने वाला, ज़ेर-ओ-ज़बर - उपर नीचे, अन्बोह - भीड़, ख़ाकबसर - दुखी हाल, पायाब - पाँव के निशान, पैकार - युद्ध, बेतेग़-ओ-ज़िरा - बिना तलवार और कवच के, आख़िरश - अंततः या आख़िरकार, सीनासिपर - ढाल जैसे सीने वाला, मारिका - युद्ध क्षेत्र, तेग़ - तलवार, सिपर - ढाल, ज़ख़्म हा ज़ख़्म - उपर से नीचे तक ज़ख़्मी

ग़ज़ल

न दो, नवीद, ख़ुशन्जाम डर गये हैं यहाँ,
दिलों पे वस्ल के सदमे गुज़र गये हैं यहाँ,

जुदा जुदा रहो यारों, जो आक़िबत है अज़ीज़,
के इख्तिलात के जलसे बिखर गये है यहाँ,

है तेरे जब्र में वो लुत्फ़-ए-इख्तियार कि बस,
तमाम हुक्म दिलों मे उतर गये हैं यहाँ

अजब तिलिस्म है, कुछ शहर-ए-सरशनासी का,
उधर जो पाओं उठे हैं, तो सर गये हैं यहाँ,

अमीर-ए-शहर बहुत, नासिपास है तेरा शहर,
हुआ है जश्न तो चेहरे उतर गये हैं यहाँ,

जो दूसरों के तकल्लुम में, जान डालते थे,
वो लोग अपने ही होठों पे मर गये हैं यहाँ,

नवीद - अच्छी खबर, खुशन्जाम - खुश रहने वाले, आक़िबत - परिणाम, इख्तिलात - प्रेम व्यवहार या मेल जोल, जब्र - अत्याचार, लुत्फ़-ए-इख्तियार - बात मान लेने का मज़ा, तिलिस्म - जादू, शहर-ए-सरशनासी - सर को पहचानने वाला शहर, नासिपास - जो तारीफ़ न करे, तकल्लुम - मुस्कुराहट,

ग़ज़ल

रूह प्यासी कहाँ से आती है,
ये उदासी कहाँ से आती है

है वो यकसर सुपुर्दगी तो भला,
बदहवासी कहाँ से आती है,

वो हम आग़ोश है, तो फिर दिल में,
नासिपासी कहाँ से आती है,

एक ज़िंदान-ए-बेदिली और शाम,
ये सबा सी कहाँ से आती है,

तू है पहलू में, फिर तेरी ख़ुश्बू,
हो के बासी कहाँ से आती है,

दिल है, शब, सोख्ता, सिवाय उमीद,
तू निदा सी कहाँ से आती है,

मैं हूँ तुझमें और आस हूँ तेरी,
तू निरासी कहाँ से आती है

यकसर - पूरा या तमाम, बदहवासी - बेहोश, हम आगोश - बाहों में, नासिपासी - नाशुक्राना, ज़िंदान-ए-बेदिली - उदासी का क़ैद खाना, सबा - हवा, सोख्ता - जला हुआ, निदा - आवाज़, निरासी - निराश को उर्दू में निरास कहा जाता है,

ग़ज़ल

सारे रिश्ते भुलाए जाएँगे,
अब तो ग़म भी गँवाए जाएँगे,

जानिये किस क़दर बचेगा वो,
उससे जब हम घटाए जाएँगे,

उसको होगी बड़ी पशेमानी,
अब जो हम आज़माए जाएँगे,

क्या गरज़ दौर-ए-जाम से हमको,
हम तो शीशे चबाए जाएँगे,

मेरी उम्मीद को बजा कहकर,
सब मेरा दुख बढ़ाए जाएँगे,

कम से कम तुझ गली में जानानाँ,
धूम तो हम मचाए जाएँगे,

ज़ख़्म पहले के अब मुफ़ीद नहीं,
अब नये ज़ख़्म खाए जाएँगे,

पशेमानी - शर्मिंदगी या लज्जित होना, गरज़ - मतलब, दौर-ए-जाम - शराब के प्याले का दौर, बजा - ठीक,
मुफ़ीद - फ़ायदा करने वाले,

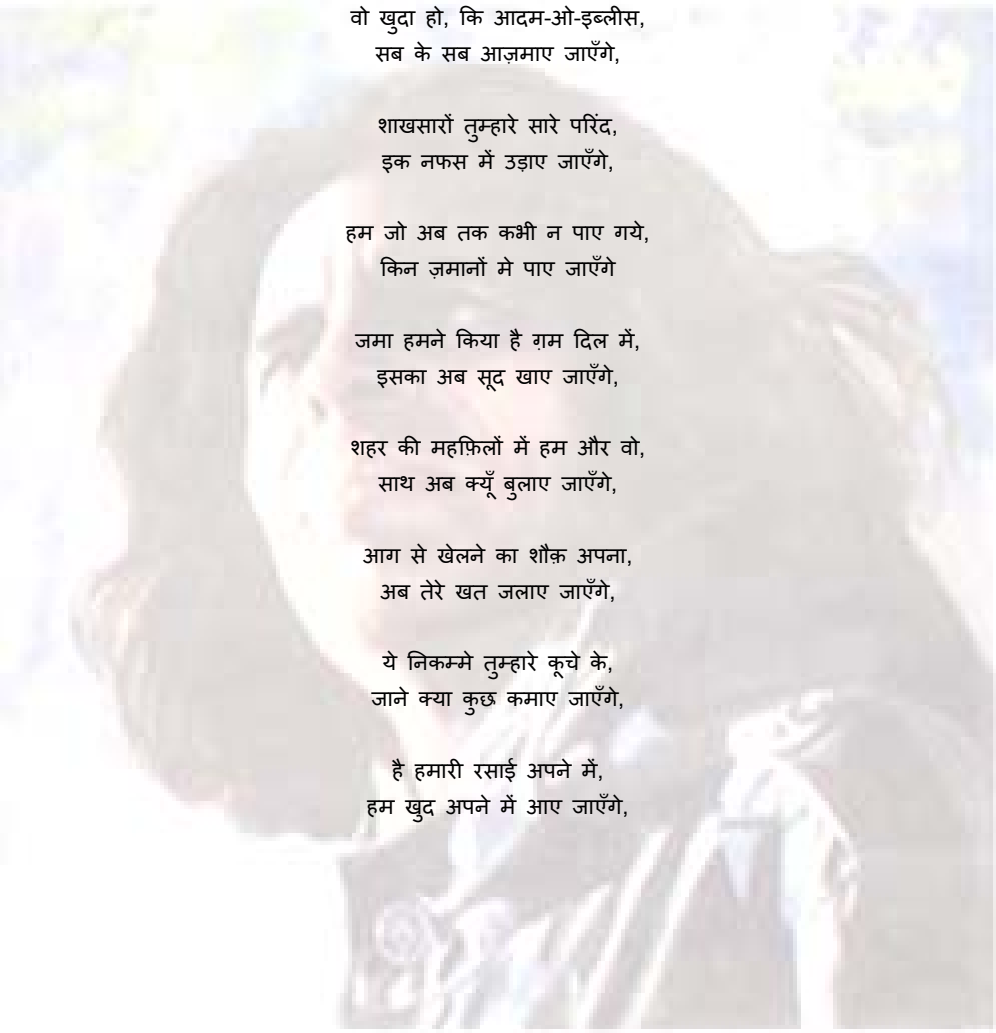

वो खुदा हो, कि आदम-ओ-इब्लीस,
सब के सब आज़माए जाएँगे,

शाखसारों तुम्हारे सारे परिंद,
इक नफस में उड़ाए जाएँगे,

हम जो अब तक कभी न पाए गये,
किन ज़मानों मे पाए जाएँगे

जमा हमने किया है ग़म दिल में,
इसका अब सूद खाए जाएँगे,

शहर की महफ़िलों में हम और वो,
साथ अब क्यूँ बुलाए जाएँगे,

आग से खेलने का शौक़ अपना,
अब तेरे खत जलाए जाएँगे,

ये निकम्मे तुम्हारे कूचे के,
जाने क्या कुछ कमाए जाएँगे,

है हमारी रसाई अपने में,
हम खुद अपने में आए जाएँगे,

आदम-ओ-इब्लीस - इंसान और शैतान, शाखसारों - डालियों या टहनियों, कूचे - गली के, रसाई - पहुँच,

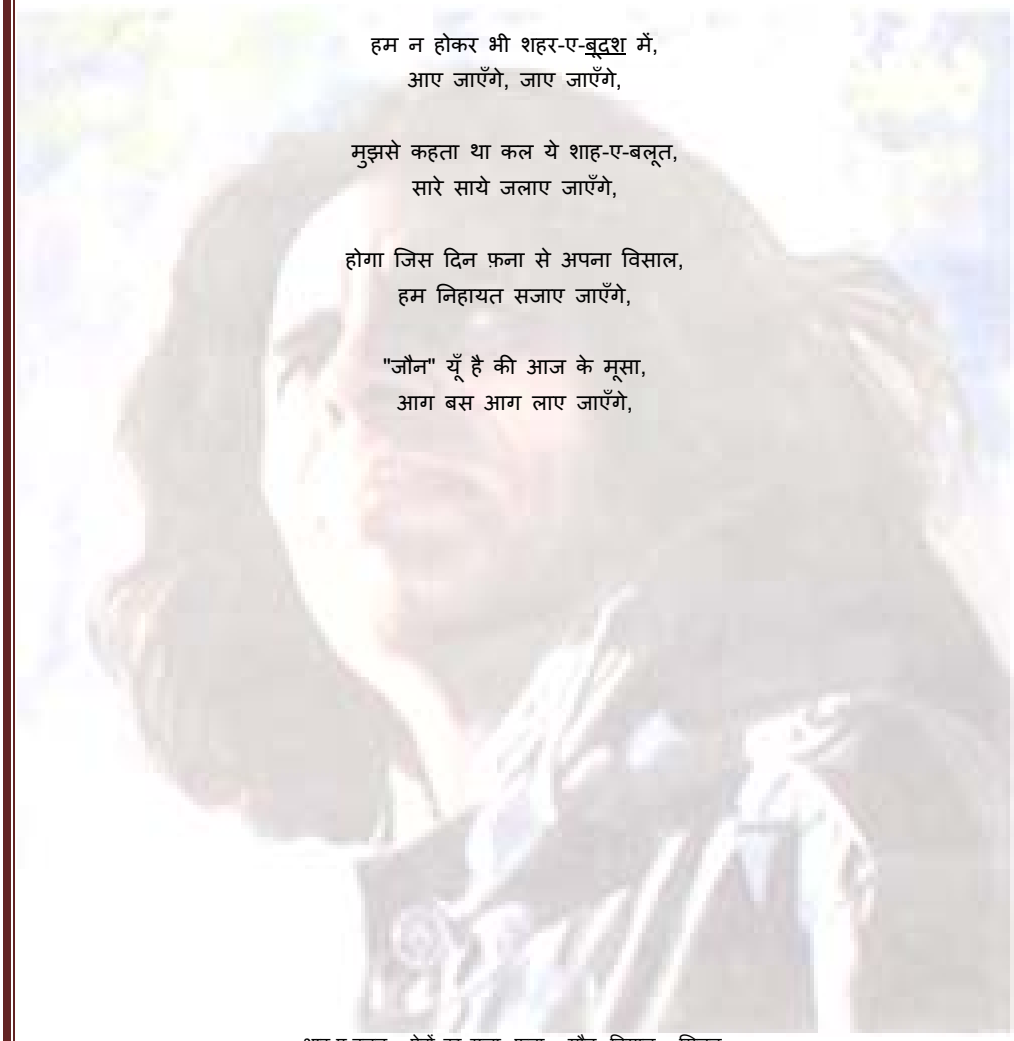

हम न होकर भी शहर-ए-बुदश में,
आए जाएँगे, जाए जाएँगे,

मुझसे कहता था कल ये शाह-ए-बलूत,
सारे साये जलाए जाएँगे,

होगा जिस दिन फ़ना से अपना विसाल,
हम निहायत सजाए जाएँगे,

"जौन" यूँ है की आज के मूसा,
आग बस आग लाए जाएँगे,

शाह-ए-बलूत - पेड़ों का राजा, फ़ना - मौत, विसाल - मिलन,

ग़ज़ल

ख़ुद से हम इक नफ़स हिले भी कहाँ,
उसको ढूँढें तो वो मिले भी कहाँ,

ग़म न होता जो खिल के मुरझाते,
ग़म तो ये है कि हम खिले भी कहाँ,

ख़ुश हो सीने की इन ख़राशों पर,
फिर तनफ्फुस के ये सिले भी कहाँ,

आगही ने किया हो चाक जिसे,
वो गिरेबां भला सिले भी कहाँ,

अब तअम्मुल न कर दिल-ए-ख़ुदकाम,
रूठ ले, फिर ये सिलसिले भी कहाँ,

ख़ेमा ख़ेमा गुज़ार ले, ये शब,
बामुदादाँ, ये क़ाफ़िले भी कहाँ,

आओ, आपस में कुछ गिले कर लें,
वरना यूँ है, कि, फिर गिले भी कहाँ,

नफ़स - पल भर, तनफ्फुस - साँस लेना, सिले - फल, आगही - अक़्ल या बुद्धि, चाक - फटा हुआ, तमम्मुल - सोच विचार, दिल-ए-ख़ुदकाम - मतलबी दिल, ख़ेमा ख़ेमा - डेरे डेरे पर, बामुदादाँ - रौशनी,

ग़ज़ल

दिल में और दुनिया में, अब नहीं मिलेंगे हम,
वक़्त के हमेशा में, अब नहीं मिलेंगे हम,

अपनी बेतक़ाज़ाई, अपनी वज़`अ ठहरी है,
हाल-ए-पुरतक़ाज़ा में, अब नहीं मिलेंगे हम,

बूद या नबूद अपनी, इक गुमान थी अपना,
यानी, या में और या में, अब नहीं मिलेंगे हम

अब नहीं मिलेंगे हम कूचा-ए-तमन्ना में,
कूचा-ए-तमन्ना में, अब नहीं मिलेंगे हम,

एक ख्वाब था देरोज़, इक फुसून था इमरोज़,
और किसी भी फर्दा में, अब नहीं मिलेंगे हम,

अब जुनून है अपना, गोशागीर-ए-तन्हाई,
सो दयार-ओ-सेहरा में, अब नहीं मिलेंगे हम,

हर्फ़ज़न न होंगे लब, जाविदां ख़ामोशी में,
हाँ किसी भी माना में, अब नहीं मिलेंगे हम,

हमेशा - रात दिन, बेतक़ाज़ाई - बेज़रूरत, वज़`अ - हाल, हाल-ए-पुरतक़ाज़ा - ज़रूरत के दिनों में, बूद - अस्तित्व, नबूद - जिसका अस्तित्व न हो, गुमान - शंका, कूचा-ए-तमन्ना - इच्छा की गली, देरोज़ - गुज़रा हुआ दिन, फूसून - जादू, इमरोज़ - आज का दिन, फर्दा - आने वाला कल, गोशागीर-ए-तन्हाई - एक कोने अकेले में बैठे रहना, दयार-ओ-सेहरा - शहर और वन, हर्फ़ज़न न होंगे लब - होठों पर शब्दों का न आना, जाविदां - हमेशा, माना - मानी में,

ज़िंदगी शिताबां है, शहर-ए- ख़ुफ़्ता की जानिब,
शहर-ए-शोर-ओ-ग़ोग़ा में, अब नहीं मिलेंगे हम,

एक हाल-ए-बेहाली, दिल का तौर ठहरा है,
हाल-ए-हालतअफज़ा में, अब नहीं मिलेंगे हम,

शिताबां - जल्दबाज़ी, शहर-ए- ख़ुफ़्ता - सोया हुआ शहर, जानिब - की तरफ़, शहर-ए-शोर-ओ-ग़ोग़ा - शोर शराबे का शहर, हाल-ए-हालतअफज़ा - अच्छे हालत,

ग़ज़ल

रौनक, गिरान-ए-कूचा-ए-जानाँ चले गये,
सामानीयान-ए-बेसार-ओ-सामाँ चले गये,

थी रौनकें कभी, जो शबों की वो अब कहाँ,
ख़ाबिदा गर्द-ए-शहर-ए-निगाराँ चले गये,

कर तहनियत क़ुबूल, तेरे आस्ताने से,
दुश्वारतर थे जो, बहुत आसाँ चले गये,

लब जुम्बिशी की, और ही सूरत हो अब कोई,
बzम-ए-नवा के पर्दाशनासाँ चले गये,

अब आप सुबह-ओ-शाम मसीहाई कीजिए,
वो चारा नापज़ीर, मियाँ जाँ, चले गये,

अब देर बावरों का, किया कीजिए सुराग़,
वो ज़ूद बावरान-ए-अदबदाँ चले गये,

ऐ सिम्त-ए-अम्बरीन-ए-शब-ए-इंतेज़ार-ए-यार,
वो इंतेज़ारयान-ए-सदअर्मा चले गये,

रौनक, गिरान-ए-कूचा-ए-जानाँ - प्रेमिका की गली में जिनसे रौनक थी, वो लोग, सामानीयान-ए-बेसार-ओ-सामाँ - जिनके पास सामान था, ख़ाबिदा - सोया हुआ, गर्द-ए-शहर - शहर की धूल निगाराँ - सजा हुआ, तहनियत - बधाई, आस्ताने - चौखट, दुश्वारतर - बहुत मुश्किल, आसाँ - आसानी से, लब जुम्बिशी - होंठ हिलना, बज़्म-ए-नवा - गाने बजाने की महफ़िल, पर्दाशनासाँ - राज़ को जानने वाले, मसीहाई - उपचार, चारा नापज़ीर - इलाज न लेने वाले, बावरों - पागलों का, ज़ूद - जल्दी, बावरान-ए-अदबदाँ - अदब को पहचानने वाले, ऐ सिम्त-ए-अम्बरीन-ए-शब-ए-इंतेज़ार-ए-यार - प्रेमिका के इंतेज़ार की रात की खुश्बू की तरफ़, इंतेज़ारयान-ए-सदअर्मा - बहुत सारे अरमान दिल में लिए जो इंतेज़ार कर,

उसका बदन अजब हवसंगेज़ है कि है,
हम तो मियाँ चले भी गये, हाँ चले गये,

उस हिंदनी ने ऐसी जफायें करीं कि बस,
हिंदू थे हम, सो हो के मुसलमाँ चले गये,

था "जौन" उसका नाफ़-ए-पियाला, कि मैकदा,
बस लड़खड़ा के तश्नालबानाँ चले गये,

हवसंगेज़ - इच्छाओं से भरा हुआ, हिंदनी - हिंदू लड़की, जफायें - अत्याचार, नाफ़-ए-पियाला - प्याले रूपी नाभि, तश्नालबानाँ - प्यास होंठ वाले,

ग़ज़ल

शमशीर मेरी, मेरी सिपर किसके पास है,
दो मेरा खुद, पर, मेरा सर किसके पास है,

दरपेश एक काम है, हिम्मत का साथियों,
कसना है मुझको, मेरी कमर किसके पास है,

तारी हो मुझपे, कौन सी हालत मुझे बताओ,
मेरा हिसाब-ए-नफा-ओ-ज़रर किसके पास है,

ऐ अहल-ए-शहर, मैं तो दुआगो-ए-शहर हूँ,
लब पर मेरे दुआ है, असर किसके पास है,

दाद-ओ-सितद के शहर में, होने को आई शाम,
ख़्वाहिश है मेरे पास, ख़बर किसके पास है,

पुरहाल हूँ, पा सूरत-ए-एहवाल कुछ नहीं,
हैरत है मेरे पास, नज़र किसके पास है,

इक आफताब है मेरी, जेब-ए-निगाह में,
पहनाइ-ए-नुमूद-ए-सहर किसके पास है,

शमशीर - तलवार, सिपर - ढाल, दरपेश - सामने, तारी - छाई हुई, हिसाब-ए-नफा-ओ-ज़रर - फ़ायदे और नुक़सान का हिसाब, अहल-ए-शहर - शहर वालों, दुआगो - दुआ देने वाला, दाद-ओ-सितद - रुपये के लेन देन का कारोबार, पुरहाल - अच्छा ख़ासा , पा - पर, सूरत-ए-एहवाल - हालात बताने जैसा, आफताब - सूर्य, जेब-ए-निगाह - जेब जैसी निगाह, नुमूद-ए-सहर - सुबह की निशान फैलाव,

क़िस्सा किश्वर का नहीं, कोशक का है, कि है,
दरवाज़ा सबके पास है, घर किसके पास है,

मेहमान-ए-क़स्र हैं, हमें कुछ रम्ज़ चाहिए,
ये पूछ के बताओ खंडहर किसके पास है,

उथला सा नाफ़-ए-पियाला, हमारी नहीं तलाश,
ऐ लड़कियों बताओ, भंवर किसके पास है,

नाखुन बढ़े हुए हैं मेरे, मुझसे कर हज़र,
ये जा के देख नेलकटर किसके पास है,

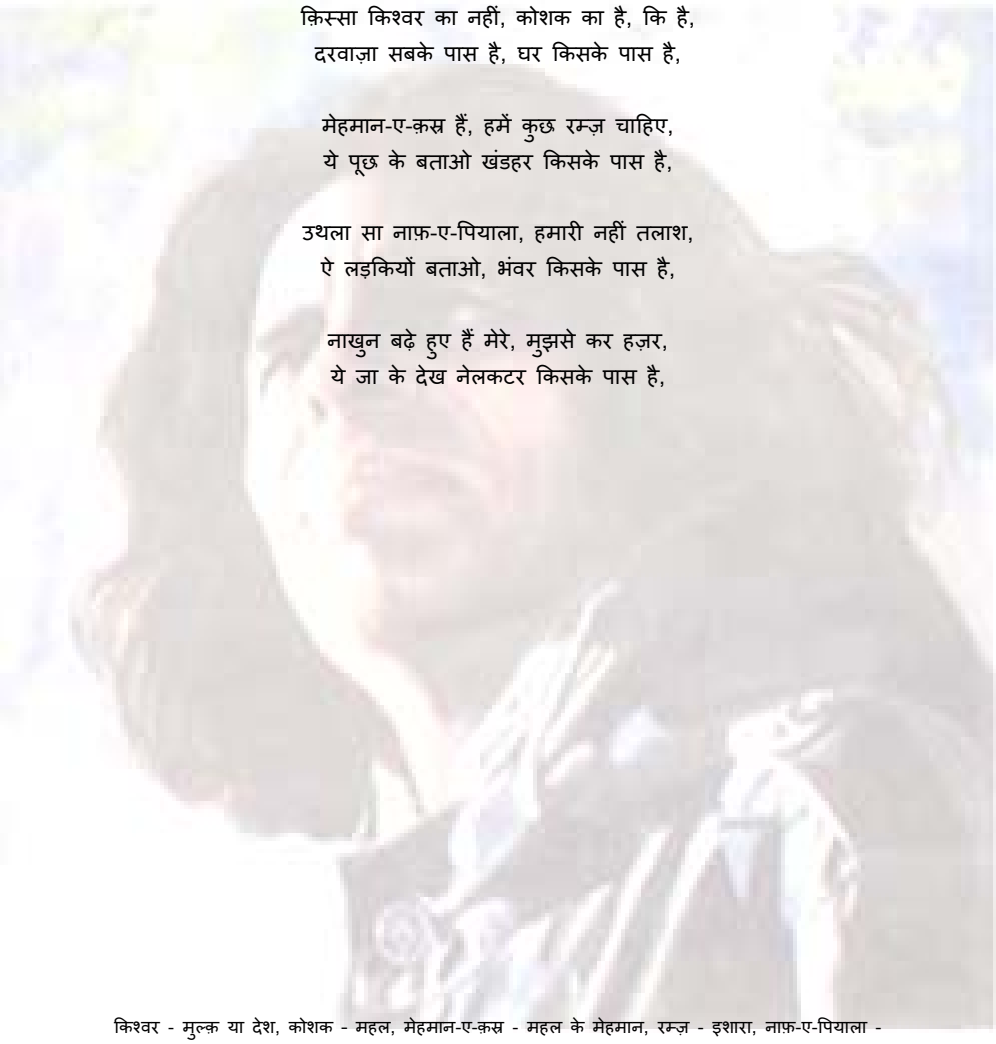

किश्वर - मुल्क़ या देश, कोशक - महल, मेहमान-ए-क़स्र - महल के मेहमान, रम्ज़ - इशारा, नाफ़-ए-पियाला - नाभि रूपी प्याला, हज़र - बचाव, इजरा - विमोचन, मज़ारह-ए-शहर-ए-हरामियाँ

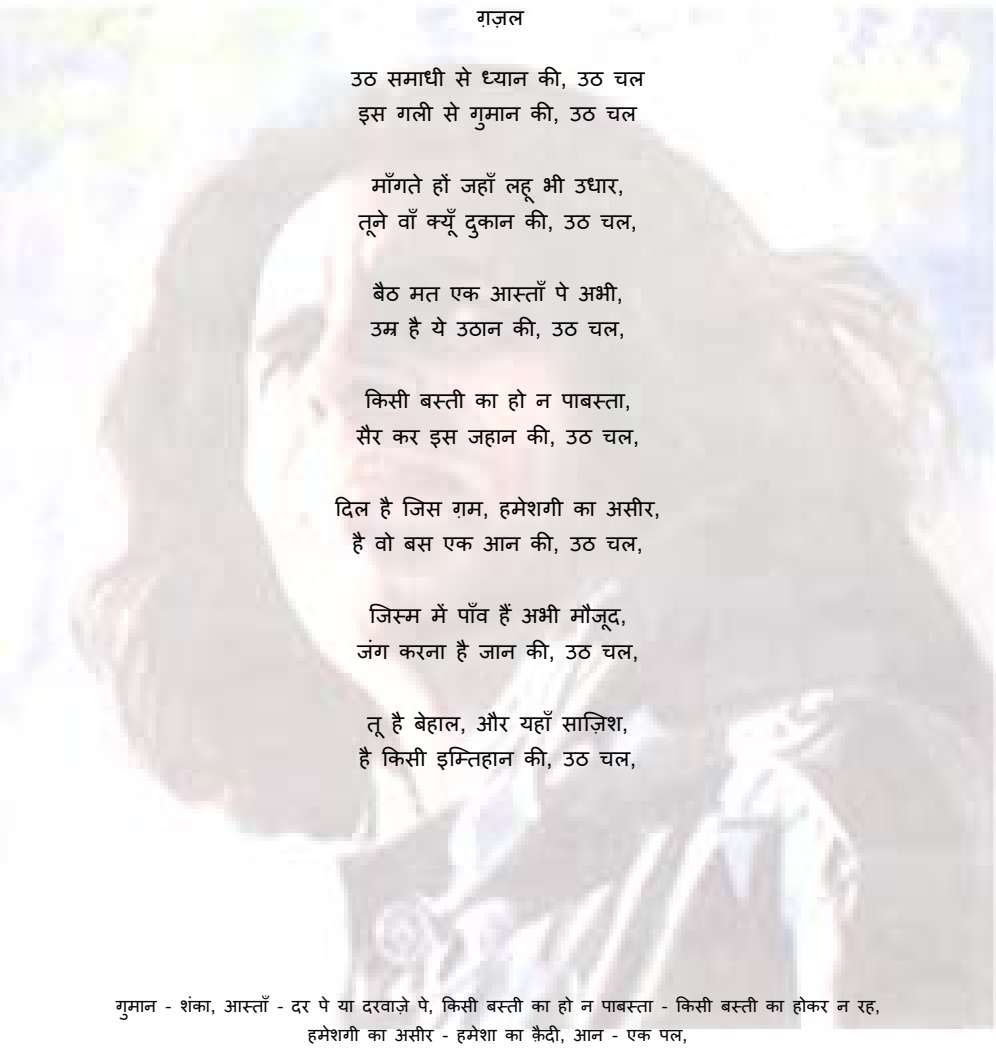

ग़ज़ल

उठ समाधी से ध्यान की, उठ चल
इस गली से गुमान की, उठ चल

माँगते हों जहाँ लहू भी उधार,
तूने वाँ क्यूँ दुकान की, उठ चल,

बैठ मत एक आस्ताँ पे अभी,
उम्र है ये उठान की, उठ चल,

किसी बस्ती का हो न पाबस्ता,
सैर कर इस जहान की, उठ चल,

दिल है जिस ग़म, हमेशगी का असीर,
है वो बस एक आन की, उठ चल,

जिस्म में पाँव हैं अभी मौजूद,
जंग करना है जान की, उठ चल,

तू है बेहाल, और यहाँ साज़िश,
है किसी इम्तिहान की, उठ चल,

गुमान - शंका, आस्ताँ - दर पे या दरवाज़े पे, किसी बस्ती का हो न पाबस्ता - किसी बस्ती का होकर न रह,
हमेशगी का असीर - हमेशा का क़ैदी, आन - एक पल,

हैं मदारों में अपने सैयारे,
ये घड़ी है अमान की, उठ चल,

क्या है परदेस को जो देस कहा,
थी वो लुकनत, ज़बान की, उठ चल,

हर किनारा, ख़िराम-ए-मौज तुझे,
याद करती है बान की, उठ चल,

मदारों - गर्दिश या परेशानी, सैयारे - तारे, अमान - शांति या सुकून, लुकनत - हकलापन, ख़िराम-ए-मौज - मौज का चलना या बहना, बान - अमरोहे की एक नदी का नाम,

ग़ज़ल

ज़िंदानियान-ए-शाम-ओ-सहर ख़ैरियत से हैं,
हर लम्हा जी रहे हैं, मगर ख़ैरियत से हैं,

शहर-ए-यक़ीं में अब कोई दमख़म नहीं रहा,
दश्त-ए-गुमां के खाकबसर ख़ैरियत से हैं,

आख़िर है कौन जो किसी पल कह सके ये बात,
अल्लाह और तमाम बशर ख़ैरियत से हैं,

है अपने अपने तौर पे हर चीज़ इस घड़ी,
मिज़्गान-ए-खुश्क, दामन-ए-तर ख़ैरियत से हैं,

अब फ़ैसलों का कमनज़रों पर मदार है,
यानी तमाम एहल-ए-नज़र ख़ैरियत से हैं,

पैरों से आबलों का वही है मुआम्ला,
सौदाइयान-ए-हाल के सर, ख़ैरियत से हैं,

हम जिन घरों को छोड़ के आए थे नागहाँ,
शिकवे की बात है, वो अगर ख़ैरियत से हैं,

ज़िंदानियान-ए-शाम-ओ-सहर - सुबह और शाम के क़ैदी, शहर-ए-यक़ीं - यक़ीन का शहर, दश्त-ए-गुमां - शंकाओं का जंगल, खाकबसर - परेशान, बशर - इंसान, मिज़्गान-ए-खुश्क - सूखी पलकें, दामन-ए-तर - गीला दामन, कमनज़रों - जो आँख होते हुए भी कुछ नहीं देखते, मदार - निर्भर, एहल-ए-नज़र - आँखों वाले, आबलों - छाले, सौदाइयान-ए-हाल - इस दौर के आहिक़ या दीवाने, नागहाँ - अचानक,

लू चल रही है, महव है अपने में दोपहर,
ख़ाक उड़ रही है और खंडहर ख़ैरियत से हैं,

बर्बाद हो चुका है हुनर इक हुनर के साथ,
और अपने साहिबान-ए-हुनर ख़ैरियत से हैं,

शुक्र-ए-ख़ुदा शहीद हुए एहल-ए-हक़ तमाम,
बरगुस्तवान-ओ-तेग़-ओ-तबर, ख़ैरियत से हैं,

अब उसका क़स्र-ए-नाज़ कहाँ, और वो कहाँ,
बस दर है और बंदा-ए-दर ख़ैरियत से हैं,

हम है की शायरी है हमारे लिए अज़ाब,
वरना तमाम जोश-ओ-जिगर ख़ैरियत से हैं,

हम एहल-ए-शहर अपने जवानों के दरमियाँ,
"जौन" एक मोजिज़ा है, अगर ख़ैरियत से हैं,

महव - खोई हुई, साहिबान-ए-हुनर - कलाकार लोग, शुक्र-ए-ख़ुदा - ख़ुदा का शुक्र है, एहल-ए-हक़ - सच बोलने वाले, बरगुस्तवान-ओ-तेग़-ओ-तबर - कवच और तलवारें और फर्से, क़स्र-ए-नाज़ - गर्व का महल, जोश-ओ-जिगर - उर्दू के दो मशहूर शायर, (जिगर मोरादाबादी और जोश मलीहाबादी), एहल-ए-शहर - शहर वाले, दरमियाँ - बीचे में, मोजिज़ा - चमत्कार,

ग़ज़ल

वही हिसाब-ए-तमन्ना है, अब भी आ जाओ,
वही है सर वही सौदा है, अब भी आ जाओ,

जिसे गये हुए खुद से, अब इक ज़माना हुआ,
वो अब भी तुममें भटकता है, अब भी आ जाओ,

वो दिल से हार गया है, पर अपनी दानिश में,
वो शख़्स अब भी यगाना है, अब भी आ जाओ,

मैं खुद नहीं हूँ, कोई और है मेरे अंदर,
जो तुमको अब भी तरसता है, अब भी आ जाओ,

मैं याँ से जाने ही वाला हूँ, अब मगर अब तक,
वही है घर, वही हुजरा है, अब भी आ जाओ,

वही कशाकश-ए-एहसास है, बहर लम्हा,
वही है दिल, वही दुनिया है, अब भी आ जाओ,

तुम्हें था नाज़ बहुत, जिसकी नामदारी पर,
वो सारे शहर में रुसवा है, अब भी आ जाओ,

दानिश - समझदारी, यगाना - अकेला, हुजरा - कुटिया, कशाकश - खींचा तानी, नाज़ - गर्व, नामदारी - इज़्ज़तदार व्यक्ति

यहाँ से साथ ही ख्वाबों के शहर जाएँगे,
वही जुनूँ वही सहरा है, अब भी आ जाओ,

मेरी शराब का शुहरा है, अब ज़माने में,
सो ये करम है तो किसका है, अब भी आ जाओ,

ये तौर ! जान जो है, मेरी बदशराबी का,
मुझे भला नहीं लगता है, अब भी आ जाओ,

किसी से कोई भी शिकवा नहीं मगर तुमसे,
अभी तलक मुझे शिकवा है, अब भी आ जाओ,

वो दिल की अब है, लहू थूकना हुनर जिसका,
वो कम से कम अभी ज़िंदा है, अब भी आ जाओ,

ना जाने क्या है कि, अब तक मेरा खुद अपने से,
वही जो था, वही रिश्ता है, अब भी आ जाओ,

वजूद एक तमाशा था, हम जो देखते थे,
वो अब भी एक तमाशा है, अब भी आ जाओ,

जुनूँ - पागलपन, सहरा - जंगल, शुहरा - चर्चा, बदशराबी - शराब पीने की बुरी आदत,

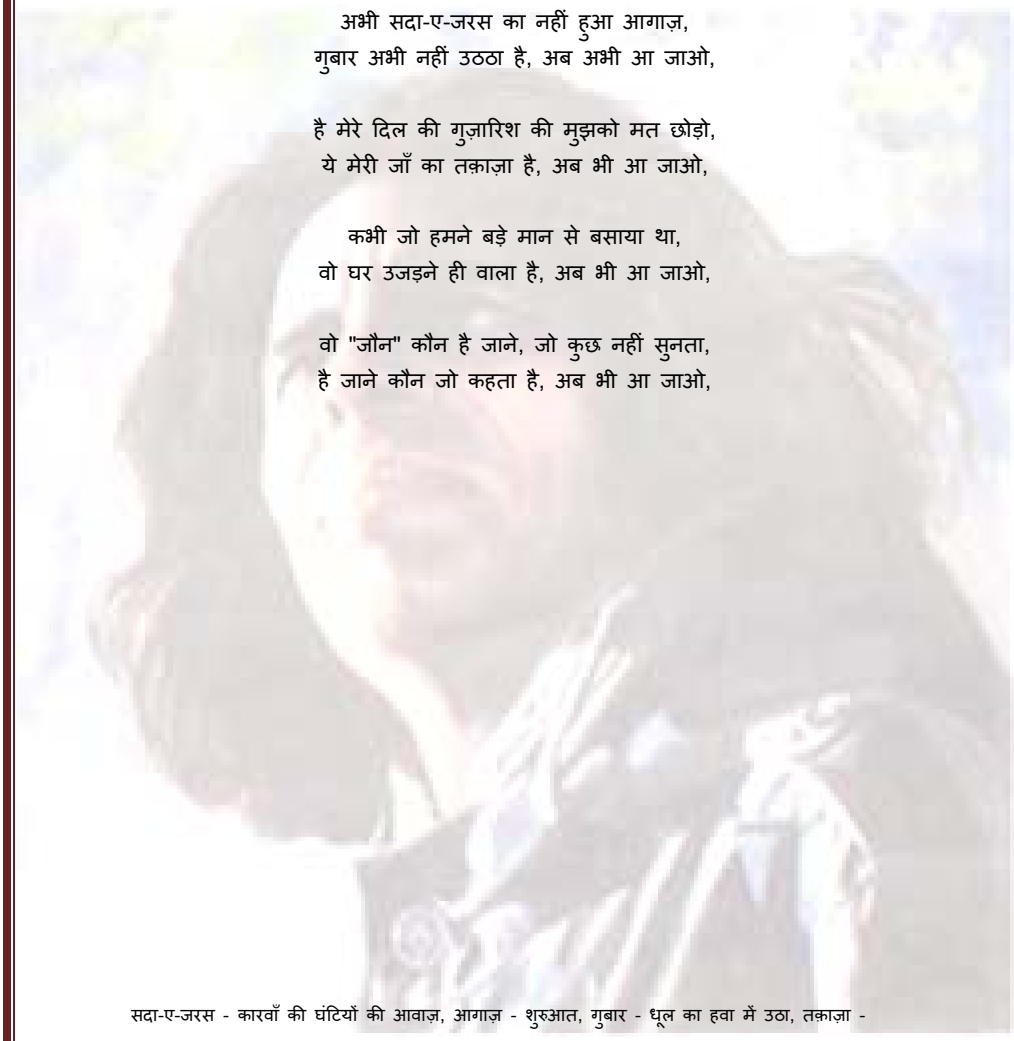

अभी सदा-ए-जरस का नहीं हुआ आगाज़,
गुबार अभी नहीं उठठा है, अब अभी आ जाओ,

है मेरे दिल की गुज़ारिश की मुझको मत छोड़ो,
ये मेरी जाँ का तक़ाज़ा है, अब भी आ जाओ,

कभी जो हमने बड़े मान से बसाया था,
वो घर उजड़ने ही वाला है, अब भी आ जाओ,

वो "जौन" कौन है जाने, जो कुछ नहीं सुनता,
है जाने कौन जो कहता है, अब भी आ जाओ,

सदा-ए-जरस - कारवाँ की घंटियों की आवाज़, आगाज़ - शुरुआत, गुबार - धूल का हवा में उठा, तक़ाज़ा - अनुमान,

ग़ज़ल

ये पैहम तल्ख़कामी सी रही क्या ?
मुहब्बत ज़हर खा के आई थी क्या ?

मुझे अब तुमसे डर लगने लगा है,
तुम्हें मुझसे मुहब्बत हो गयी क्या?

शिकस्त-ए-ऐत्माद-ए-ज़ात के वक़्त,
क़यामत आ रही थी, आ गयी क्या?

मुझे शिकवा नहीं बस पूछना है,
ये तुम हँसती हो अपनी ही हँसी क्या?

हमें शिकवा नहीं इक दूसरे से,
मनाना चाहिए इस पर खुशी क्या ?

पड़े हैं एक गोशे में गुमां के,
भला हम क्या ? हमारी ज़िंदगी क्या ?

मैं रुखसत हो रहा हूँ, पर तुम्हारी,
उदासी हो गयी है मुल्तवी क्या ?

पैहम - लगातार, तल्ख़कामी - कड़वाहट, शिकस्त-ए-ऐत्माद-ए-ज़ात के वक़्त - खुद के विश्वास की हार के समय, गोशे - कोना, गुमां - शंका, रुखसत - जाना, मुल्तवी - स्थगित,

मैं अब हर शख़्स से उकता चुका हूँ,
फक़त कुछ दोस्त हैं, और दोस्त भी क्या ?

मुहब्बत में हमें पास-ए-अना था,
बदन की इशतेहा सादिक़ न थी क्या?

नहीं रिश्ता समोचा, ज़िंदगी से,
ना जाने हममें है अपनी कमी क्या ?

अभी होने की बातें हैं सो कर लो,
अभी तो कुछ नहीं होना, अभी क्या ?

यही पूछा किया मैं आज दिन भर,
हर इक इंसान को रोटी मिली क्या ?

फक़त - सिर्फ़, पास-ए-अना - आत्मसम्मान का ख़याल, इशतेहा - भूख सादिक़ - सच्चा, समोचा - पूरा,

ग़ज़ल

"जौन" गुज़िश्त-ए-वक़्त की हालत-ए-हाल पर सलाम,
उसके फ़िराक़ को दुआ, उसके विसाल पर सलाम,

तेरा सितम भी था करम, तेरा करम भी था सितम,
बंदगी, तेरी तेग़ को, और तेरी ढाल पर सलाम

सूद-ओ-ज़ियाँ के फ़र्क़ का, अब नहीं हमसे वास्ता,
सुबह को अर्ज़-ए-कोर्निश, शाम-ए-मलाल पर सलाम,

अब तो नहीं है लज़्ज़त-ए-मुमकिन-ए-शौक़ भी नसीब,
रोज़-ओ-शब-ए-ज़माना-ए-शौक़-ए-मुहाल पर सलाम,

हिज्र सवाल के हैं दिन, हिज्र जवाब के हैं दिन,
इसके जवाब पर सलाम, इसके सवाल पर सलाम,

जाने वो रंग-ए-मस्ती-ए-ख़्वाब-ओ-ख़याल क्या हुई,
इशरत-ए-ख़्वाब की सना, ऐश-ए-ख़याल पर सलाम,

अपना कमाल था अजब, अपना ज़वाल था अजब,
अपने कमाल पर दूरूद, अपने ज़वाल पर सलाम,

गुज़िश्त-ए-वक्त - बीता हुआ समय, फ़िराक़ - जुदाई या विरह, विसाल - मिलन, तेग़ - तलवार, सूद-ओ-ज़ियाँ - फ़ायदा और नुक़सान, अर्ज़ - निवेदन, कोर्निश - प्रणाम, शाम-ए-मलाल - दुख भरी शाम, लज़्ज़त - मज़ा, मुमकिन - संभव, शौक़ - इच्छा, रोज़-ओ-शब - दिन रात, शौक़-ए-मुहाल - अजीब इच्छाएँ, हिज्र - विरह या जुदाई, रंग-ए-मस्ती-ए-ख़्वाब-ओ-ख़याल - ख्वाबों और ख़यालों की मस्ती का रंग, इशरत-ए-ख़्वाब - सपने की खुशी सना - तारीफ़, ज़वाल - पतन, दूरूद - दुआ और सलाम के लिये प्रयुक्त होने वाला शब्द

ग़ज़ल

वो अपने आप से भी, जुदा चाहिए हमें,
उसका जमाल उसके सिवा चाहिए हमें,

हर लम्हा जी रहे हैं, दवा के बग़ैर हम,
चारगरों तुम्हारी दुआ चाहिए हमें,

फिर देखिए जो हर्फ भी निकले ज़बान से,
इक दिन जो पूछ बैठिए क्या चाहिए हमें,

जाना नहीं है घर से, निकल के कहीं मगर,
हर माहरू के घर का पता चाहिए हमें,

कहने को हक़निगर हैं, हक़ीक़त है आरज़ू,
सच पूछिए अगर तो ख़ुदा चाहिए हमें,

हम मौजा-ए-शमीम की सूरत बरहना हैं,
तू रंग बन के आ कि रिदा चाहिए हमें,

अंदाज़ा-ए-सदा-ए-जरस से हुसूल क्या?
वामान्दगाँ हैं, दोश-ए-सबा चाहिए हमें,

जमाल - खूबसूरती, चारागर - चिकित्सक, हर्फ - शब्द, माहरू - जिसका चेहरा चाँद जैसा हो,
मौजा-ए-शमीम - ख़ुश्बू की लहर, बरहना - नग्न, रिदा - चादर, अंदाज़ा-ए-सदा-ए-जरस से हुसूल क्या - कारवाँ की घंटियों की आवाज़ के अनुमान से क्या फ़ायदा, वामान्दगाँ - थके हुए, दोश-ए-सबा - हवा का कंधा,

मुद्दत से हम किसी को नहीं दे सके फ़रेब,
ऐ शहर-ए-इलतिफ़ात, वफ़ा चाहिए हमें,

हर आन आख़री है, मगर इसके बावजूद,
इस आन भी यक़ीन-ए-फ़ना चाहिए हमें,

इलतिफ़ात - ध्यान, आन - पल, यक़ीन-ए-फ़ना - मरने का विश्वास,

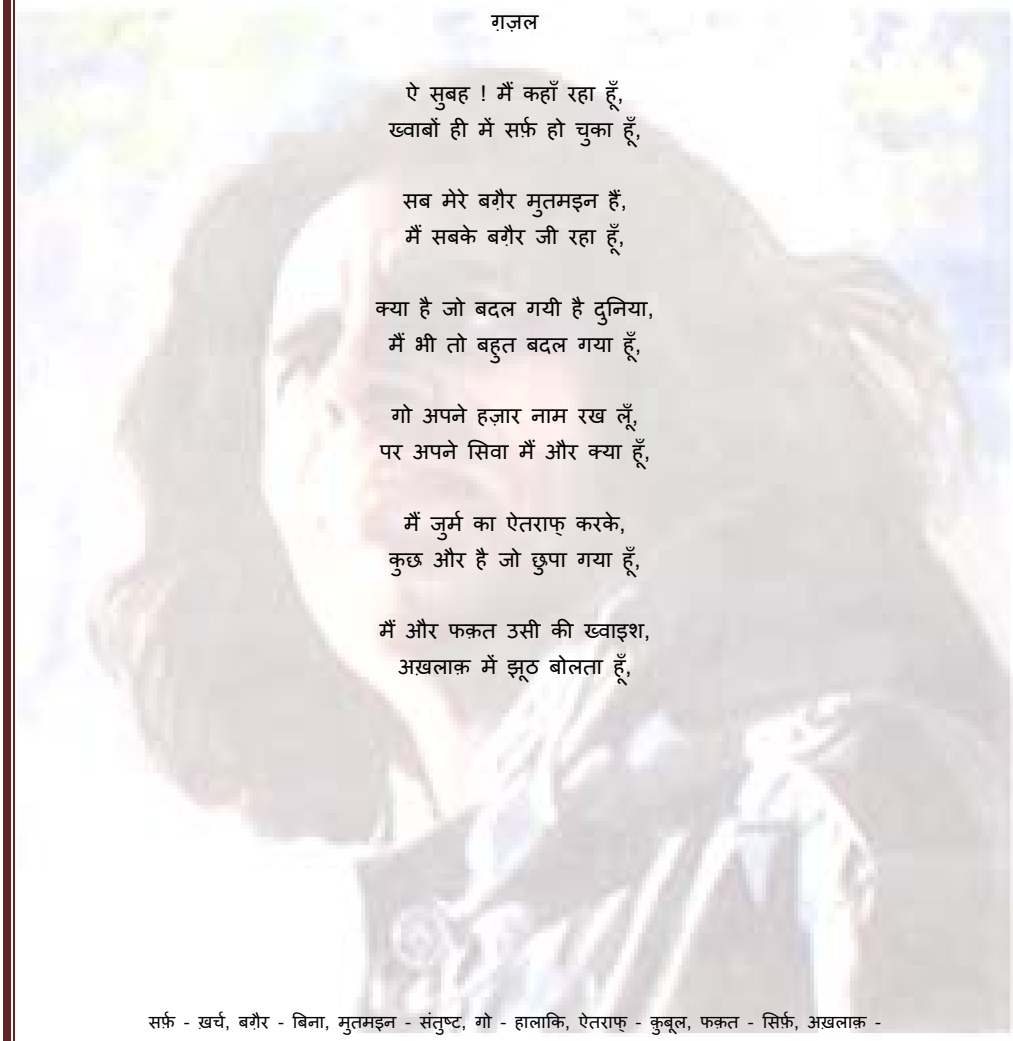

ग़ज़ल

ऐ सुबह ! मैं कहाँ रहा हूँ,
ख्वाबों ही में सर्फ़ हो चुका हूँ,

सब मेरे बग़ैर मुतमइन हैं,
मैं सबके बग़ैर जी रहा हूँ,

क्या है जो बदल गयी है दुनिया,
मैं भी तो बहुत बदल गया हूँ,

गो अपने हज़ार नाम रख लूँ,
पर अपने सिवा मैं और क्या हूँ,

मैं जुर्म का ऐतराफ़् करके,
कुछ और है जो छुपा गया हूँ,

मैं और फक़त उसी की ख्वाइश,
अख़लाक़ में झूठ बोलता हूँ,

सर्फ़ - ख़र्च, बग़ैर - बिना, मुतमइन - संतुष्ट, गो - हालाकि, ऐतराफ़् - क़ुबूल, फक़त - सिर्फ़, अख़लाक़ - मुहब्बत में,

इक शख़्स जो मुझसे वक़्त लेकर,
आज न आ सका तो ख़ुश हुआ हूँ,

हर शख़्स से बेनियाज़ हो जा,
फिर सब से कह कि मैं ख़ुदा हूँ,

चीर के तो तुझे दिए हैं मैंनें,
पर ख़ून भी मैं ही थूकता हूँ,

रोया हूँ तो अपने दोस्तों में,
पर तुझसे तो हंस के ही मिला हूँ,

ऐ शख़्स, मैं तेरी जूस्तजू से,
बेज़ार नहीं हूँ, थक गया हूँ,

मैं शाम-ओ-सहर का नग़मागर था,
अब थक के कराहने लगा हूँ,

कल पर ही रखो वफ़ा की बातें,
आज मैं बहुत बुझा हुआ हूँ,

बेनियाज़ - बेपरवाह या आज़ाद, जूस्तजू - तलाश, बेज़ार - मजबूर या विवश, शाम-ओ-सहर - सुबह और शाम, नग़मागर - गीत गाने वाला

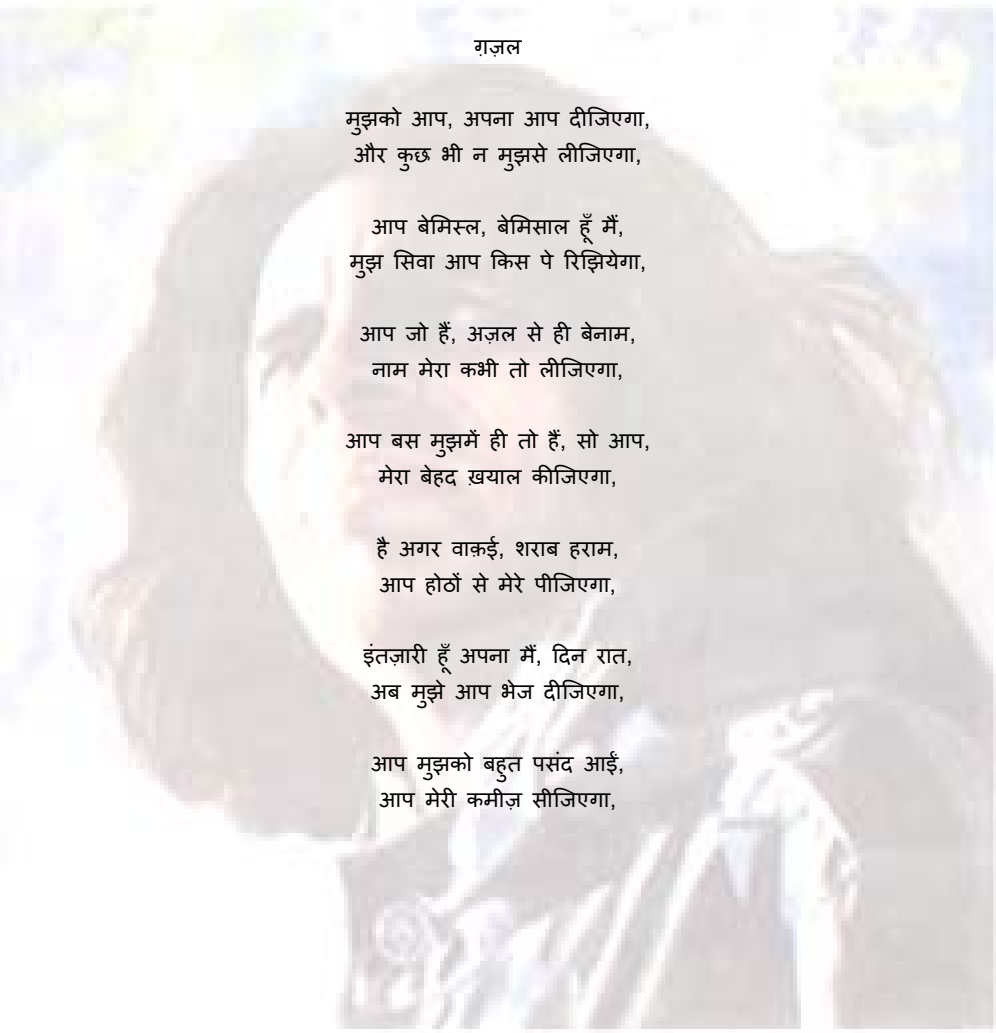

ग़ज़ल

मुझको आप, अपना आप दीजिएगा,
और कुछ भी न मुझसे लीजिएगा,

आप बेमिस्ल, बेमिसाल हूँ मैं,
मुझ सिवा आप किस पे रिझियेगा,

आप जो हैं, अज़ल से ही बेनाम,
नाम मेरा कभी तो लीजिएगा,

आप बस मुझमें ही तो हैं, सो आप,
मेरा बेहद ख़याल कीजिएगा,

है अगर वाक़ई, शराब हराम,
आप होठों से मेरे पीजिएगा,

इंतज़ारी हूँ अपना मैं, दिन रात,
अब मुझे आप भेज दीजिएगा,

आप मुझको बहुत पसंद आईं,
आप मेरी कमीज़ सीजिएगा,

बेमिस्ल - बेमिसाल, अज़ल - शुरू से, इंतज़ारी - इंतेज़ार करने वाला,

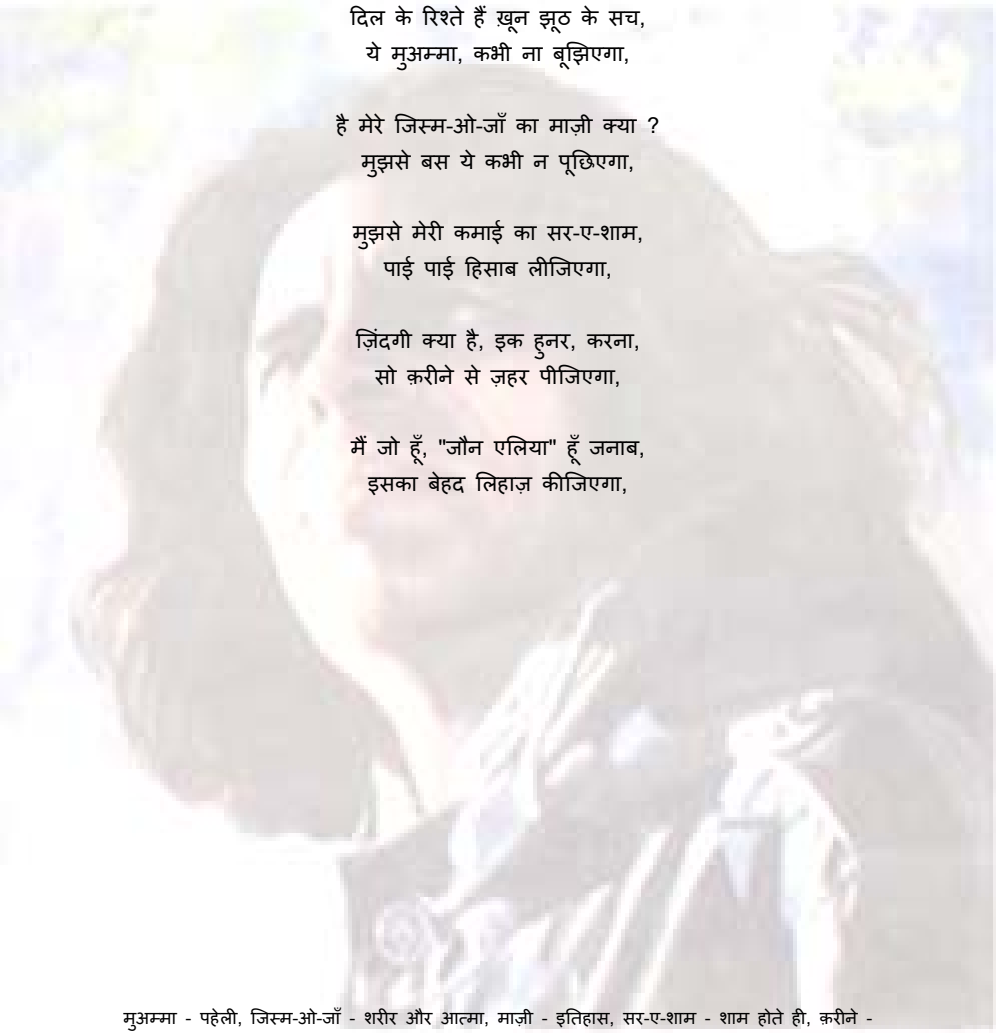

दिल के रिश्ते हैं ख़ून झूठ के सच,
ये मुअम्मा, कभी ना बूझिएगा,

है मेरे जिस्म-ओ-जाँ का माज़ी क्या ?
मुझसे बस ये कभी न पूछिएगा,

मुझसे मेरी कमाई का सर-ए-शाम,
पाई पाई हिसाब लीजिएगा,

ज़िंदगी क्या है, इक हुनर, करना,
सो क़रीने से ज़हर पीजिएगा,

मैं जो हूँ, "जौन एलिया" हूँ जनाब,
इसका बेहद लिहाज़ कीजिएगा,

मुअम्मा - पहेली, जिस्म-ओ-जाँ - शरीर और आत्मा, माज़ी - इतिहास, सर-ए-शाम - शाम होते ही, क़रीने - सही तरीक़े से, लिहाज़ - आदर,

ग़ज़ल

कोई नहीं यहाँ खामोश, कोई पुकारता नहीं,
शहर में इक शोर है, और कोई सदा नहीं,

आज वो पढ़ लिया गया, जिसको पढ़ा न जा सका,
आज किसी किताब में कुछ लिखा हुआ नहीं,

अपने सभी गिले बजा, पर है यही कि दिलरुबा,
मेरा तेरा मुआम्ला, इश्क़ के बस का था नहीं,

ख़र्च चलेगा अब मेरा, किसके हिसाब में भला,
सबके लिए बहुत हूँ मैं, अपने लिए ज़रा नहीं,

जाइये खुद में रायगाँ, और वो यूँ की दोस्ताँ,
ज़ात का कोई माजरा, शहर का माजरा नहीं,

सीना ब सीना, लब ब लब, एक फिराक़ है की है,
एक फिराक़ है की है, एक फिराक़ क्या नहीं,

अपना शुमार कीजियो, ऐ मेरी जान तू कभी,
मैनें भी अपने को, आज तलक गिना नहीं,

सदा - आवाज़, बजा - ठीक या सही, मुआम्ला - मामला, रायगाँ - व्यर्थ, दोस्ताँ - दोस्त का बहुवचन, ज़ात - समाज, सीना ब सीना - सीने से सीने का मिलना, लब ब लब - होंठ से होंठ का मिलना, फिराक़ - जुदाई या विरह, शुमार - गिनती, तलक - तक

तू वो बदन है जिसमें जान, आज लगा है जी मेरा,
जी तो कहीं लगा तेरा, सुन, तेरा जी लगा नहीं,

नाम ही नाम चारसू, एक हुजूम रु ब रु,
कोई तो हो मेरे सिवा, कोई मेरे सिवा नहीं,

अपनी जबीं पे मैनें आज, दीं कई बार दस्तकें,
कोई पता भी है तेरा, मेरा कोई पता नहीं,

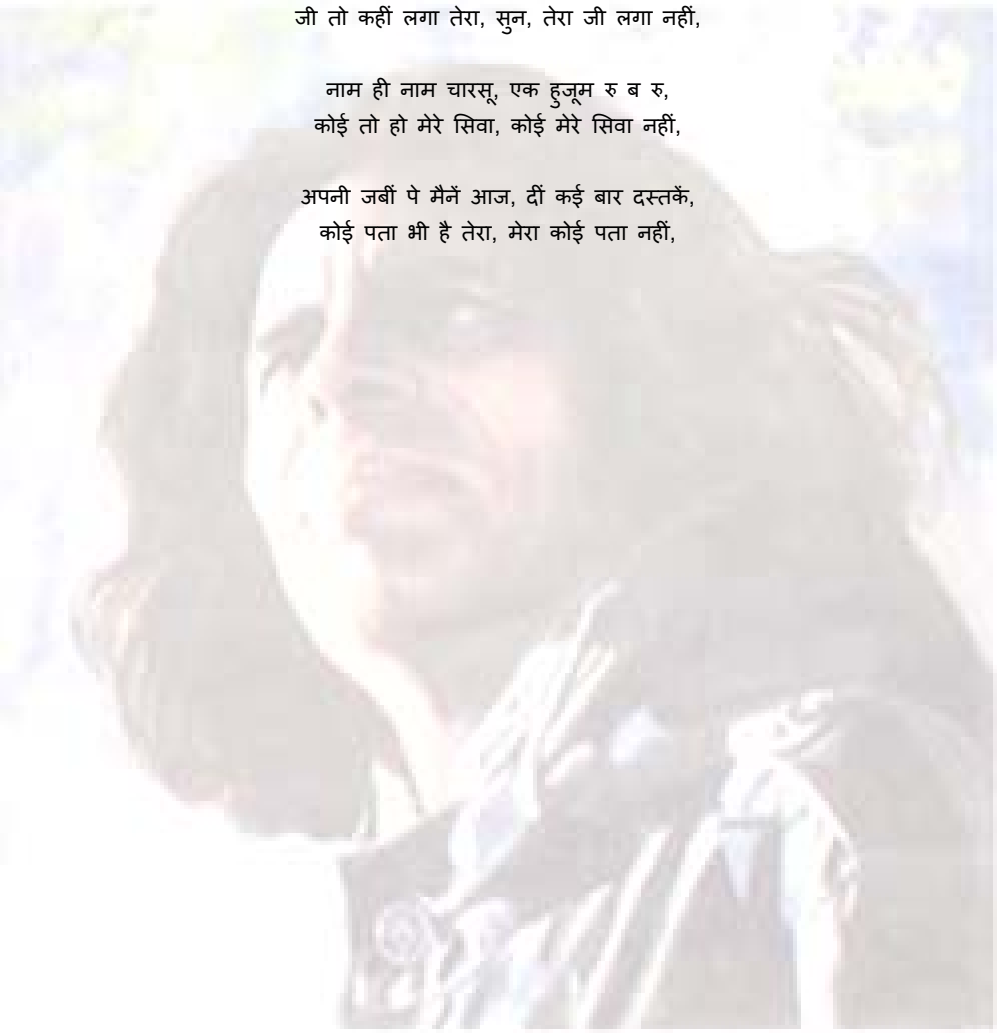

चारसू - चारों तरफ़, हुजूम - भीड़, जबीं - माथा या ललाट,

ग़ज़ल

ये जो सुना, इक दिन वो, हवेली यकसर बेआसार गिरी,
हम जब भी साए में बैठे, दिल पर इक दीवार गिरी,

जूँ ही मुड़कर देखा मैनें, बीच उठी थी इक दीवार,
बस यूँ समझो मेरे उपर, बिजली सी इक बार गिरी,

धार पे बाड़ रखी जाए और, हम उसके घायल ठहरें,
मैने देखा और नज़रों से, उन पलकों की धार गिरी,

गिरने वाली उन तामीरों, में भी एक सलीक़ा था,
तुम ईंटों की पूछ रहे हो, मिट्टी तक हमवार गिरी,

बेदारी के बिस्तर पर मैं, उनके ख्वाब सजाता हूँ,
नींद भी जिनकी टाट के उपर, ख्वाबों से नादार गिरी,

खूब ही थी, वो क़ौम-ए-शहीदां, यानी सब बेज़ख्म-ओ-ख़राश,
मैं भी उस सफ़ में था शामिल, वो सफ़ जो बेवार गिरी,

हर लम्हा, घमसान का रन है, कौन अपने औसान में है,
कौन है ये ? अच्छा तो मैं हूँ, लाश तो हाँ इक यार गिरी,

यकसर - पूरा, बेआसार - बेवक्त या असमय, जूँ ही - जैसे ही, तामीरों - बनी हुई इमारतें, सलीक़ा - तरीक़ा, हमवार - एक साथ, बेदारी - जागे हुए, नादार - कंगाल, क़ौम-ए-शहीदां - जो क़ौम शहीद हो गयी हो, बेज़ख्म-ओ-ख़राश - जिसके उपर न घाव है न घाव का निशान, सफ़ - क़तार या पंक्ति, बेवार - बिना वार किये, रन - युद्ध का मैदान, औसान - होश,

गज़ल

जो ज़िंदगी बची है उसे मत गँवाइए,
बेहतर है ये, कि आप मुझे भूल जाइए,

हर आन, इक जुदाई है, ख़ुद अपने आप से,
हर आन का है ज़ख़्म, जो हर आन खाइए,

थी मशवरत की हमको बसाना है घर नया,
दिल ने कहा कि मेरे दर-ओ-बाम ढाइए,

थूका है मैनें ख़ून हमेशा मज़ाक़ में,
मेरा मज़ाक़ आप हमेशा उड़ाइए,

हरगिज़ मेरे हुज़ूर कभी आइए न आप,
और आइए अगर, तो ख़ुदा बन के आइए,

अब कोई भी नहीं है, कोई दिल मुहल्ले में,
किस किस गली में जाइए, और गुल मचाईए,

इक तौर-ए-देह सदी था, जो बेतौर हो गया,
अब जंतरी बजाईए, तारीख़ गाइए,

आन - पल, मशवरत - राय, दर-ओ-बाम - दरवाज़ा और छत, गुल - हल्ला गुल्ला या शोर, तौर-ए-देह सदी - आराम देने वाला युग, जंतरी - पाठशाला में प्रयोग की जाने वाली घंटी, तारीख़ - इतिहास,

इक लाल क़िला था, जो मियाँ ज़र्द पड़ गया,
अब रंगरेज़ कौन से, किस जा से लाइए,

शायर हैं आप, यानी कि सस्ते लतीफ़ागो,
रिश्तों को दिल से रोइये सबको हंसाइए,

जो हालतों का दौर था, वो तो गुज़र गया,
दिल को जला चुके हैं, सो अब घर जलाइए,

अब क्या फ़रेब दीजिए, और किसको दीजिए,
अब क्या फ़रेब खाइए, और किससे खाइए,

है याद पर मदार मेरे कारोबार का,
है अर्ज़ आप मुझको बहुत याद आइए,

बस फाइलों का बोझ उठाया करें जनाब,
मिसरा ये "जौन" का है इसे मत उठाइए,

ज़र्द - पीला, जा - जगह, लतीफ़ागो - चुटकुले सुनानेवाला, मदार - निर्भर, अर्ज़ - विनती, मिस्रा - शेर की पंक्ति

ग़ज़ल

मुझे ग़रज़ है मेरी जान ग़ुल मचाने से,
न तेरे आने से मतलब न तेरे जाने से,

अजीब है मेरी फ़ितरत की आज ही मसलन,
मुझे सुकून मिला है तेरे न आने से,

इक इज्तिहाद का पहलू ज़रूर है तुझमें,
ख़ुशी हुई तेरे नावक़्त मुस्कुराने से,

ये मेरा जोश-ए-मुहब्बत फक़त इबारत है,
तुम्हारी चम्पई, रानों को नोच खाने से,

मुहज़्ज़ब आदमी पतलून के बटन तो लगा,
कि इर्तिक़ा है, इबारत बटन लगाने से,

ग़रज़ - मतलब, ग़ुल - शोर, फ़ितरत - आदत, मसलन - जैसे, इज्तिहाद - नयी बात , नावक़्त - असमय,
फक़त - सिर्फ़, इबारत - लिखा हुआ, रानों - जाँघ, मुहज़्ज़ब - सभ्य, इर्तिक़ा - तरक़्क़ी, इबारत - लक्ष्य,

ग़ज़ल

आफ़रीनश ही फ़न की है ईजाद,
यही बाबा, अलिफ का है इरशाद,

फ़न है अपने ज़ियाद से भी ज़ियाद,
यही बाबा, अलिफ का है इरशाद

है गुमां ही गुमान की बुनियाद,
यही बाबा, अलिफ का है इरशाद,

तुम भी तो इक जहाँ करो ईजाद,
यही बाबा, अलिफ का है इरशाद,

ख़ुद भी ख़ुद से कभी रहो आज़ाद,
यही बाबा, अलिफ का है इरशाद,

और भी हममें हैं कई अफ़राद,
यही बाबा, अलिफ का है इरशाद,

कोई बुनियाद की नहीं बुनियाद,
यही बाबा, अलिफ का है इरशाद,

आफरीनश - पैदाइश या दुनिया, फ़न - कला, ईजाद - अविष्कार, अलिफ - उर्दू, फ़ारसी और अरबी भाषा का पहला शब्द, इरशाद - कहना, ज़ियाद - अधिक, गुमां - शंका, अफ़राद - लोग का बहुवचन,

नहीं अंदर जहाँ जहाँ आबाद,
यही बाबा, अलिफ का है इरशाद,

सख़्त आफ़तरसां है याद की याद,
यही बाबा, अलिफ का है इरशाद,

है जो उस्ताद वो है बेउस्ताद,
यही बाबा, अलिफ का है इरशाद,

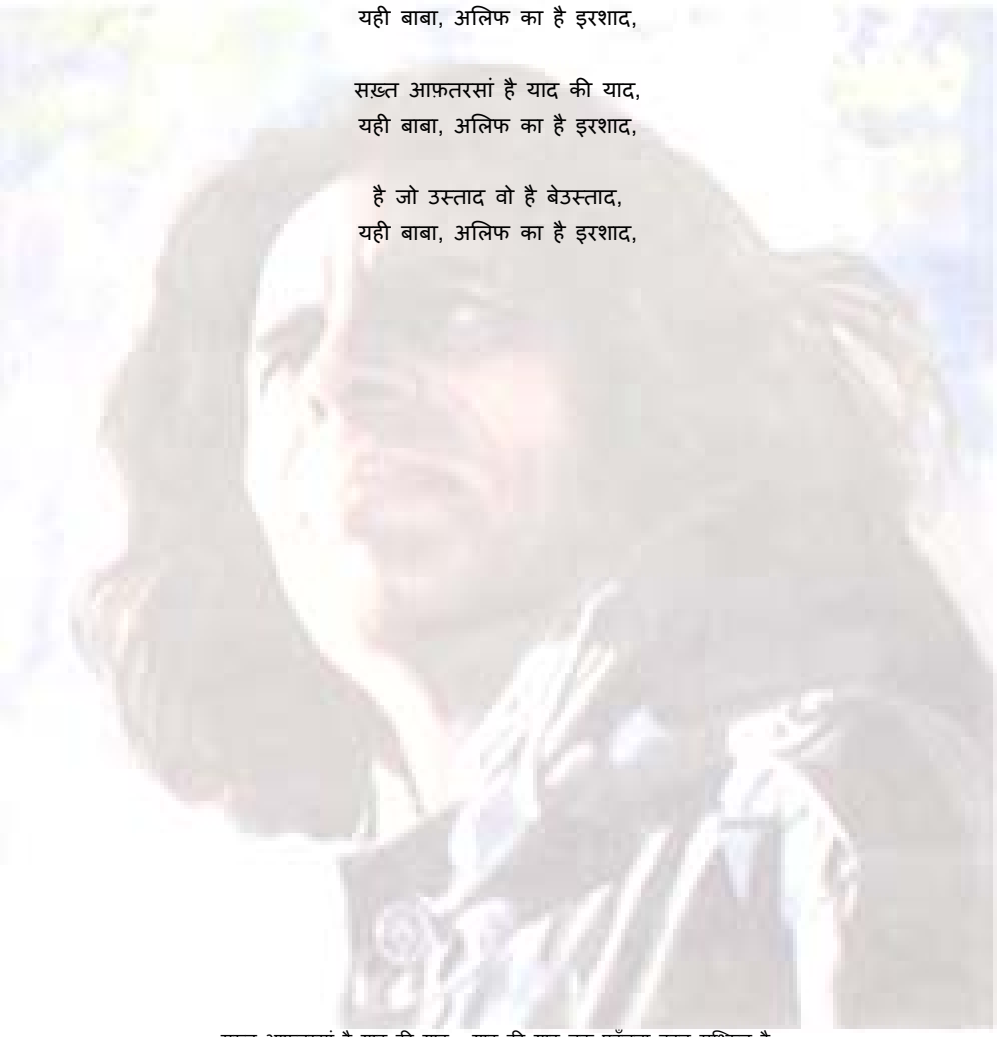

सख़्त आफ़तरसां है याद की याद - याद की याद तक पहुँचना बहुत मुश्किल है,

गज़ल

बददिली में बेक़ारारी को क़रार आया तो क्या
पा पियादा होके कोई शेहसवार आया तो क्या

ज़िंदगी की धूप में मुरझा गया मेरा शबाब,
अब बहार आई तो क्या, अब्र-ए-बहार आया तो क्या

मेरे तेवर बुझ गये, मेरी निगाहें जल गयीं,
अब कोई आईना रू, आईनादार आया तो क्या

अब की जब जानानाँ तुमको है सभी पर ऐतबार,
अब तुम्हें जानानाँ मुझ पर ऐतबार आया तो क्या,

अब मुझे खुद अपनी बाहों पर नहीं है इख्तियार,
हाथ फैलाए कोई बेइख्तियार आया तो क्या,

वो तो अब भी ख़्वाब है, बेदार बीनाई का ख़्वाब,
ज़िंदगी, में, ख्वाब में उसके गुज़ार आया तो क्या,

हम यहाँ बेगाना हैं, सो हममें से "जौन एलिया",
कोई जीत आया यहाँ, और कोई हार आया तो क्या,

बददिली - बुरी हालत, पाप्यादा - पैदल चलकर, शेहसवार - घोड़े की सवारी करने वाला, शबाब - जवानी, अब्र-ए-बहार - बहार का बादल, आईना रू - आईने जैसे चेहरे वाला, आईनादार - आईने वाला, जानानाँ - प्रेमिका, इख्तियार - नियंत्रण, बेदार बीनाई - जागी हुई आँखों का

ग़ज़ल

एक आफ़त है ये प्याला-ए-नाफ़,
क्या क़यामत है ये प्याला-ए-नाफ़,

अब कहाँ होश हमको हश्र तलक,
के सलामत है ये प्याला-ए-नाफ़,

"जौन", बाबा अलिफ का है इरशाद,
कार-ए-वहदत है ये प्याला-ए-नाफ़,

शब ख़राबात में रहा ये सुखन,
दिल की रुख़सत है ये प्याला-ए-नाफ़,

ज़िंदगी आरज़ू की क़ामत है,
नाफ़-ए-क़ामत है ये प्याला-ए-नाफ़,

है इसी की गदाई पर गुज़रान,
दिल की दौलत है ये प्याला-ए-नाफ़,

इसकी जुम्बिश है तिश्नगीअंगेज़,
हश्र-ए-हालत है ये प्याला-ए-नाफ़,

प्याला-ए-नाफ़ - प्याले रूपी नाभि, हश्र - प्रलय, अलिफ - उर्दू, फ़ारसी और अरबी भाषा का पहला शब्द, इरशाद - कहना, कार-ए-वहदत - ख़ुदा एक है ये बताने का काम, शब - रात, ख़राबात - वीराना, सुखन - बात, रुख़सत - विदा, क़ामत - क़द, नाफ़-ए-क़ामत - नाभि का क़द, गदाई - फ़क़ीरी, गुज़रान - गुज़र बसर, जुम्बिश - थरथराना, तिश्नगीअंगेज़ - बहुत ज़्यादा प्यास, हश्र-ए-हालत - प्रलय जैसा

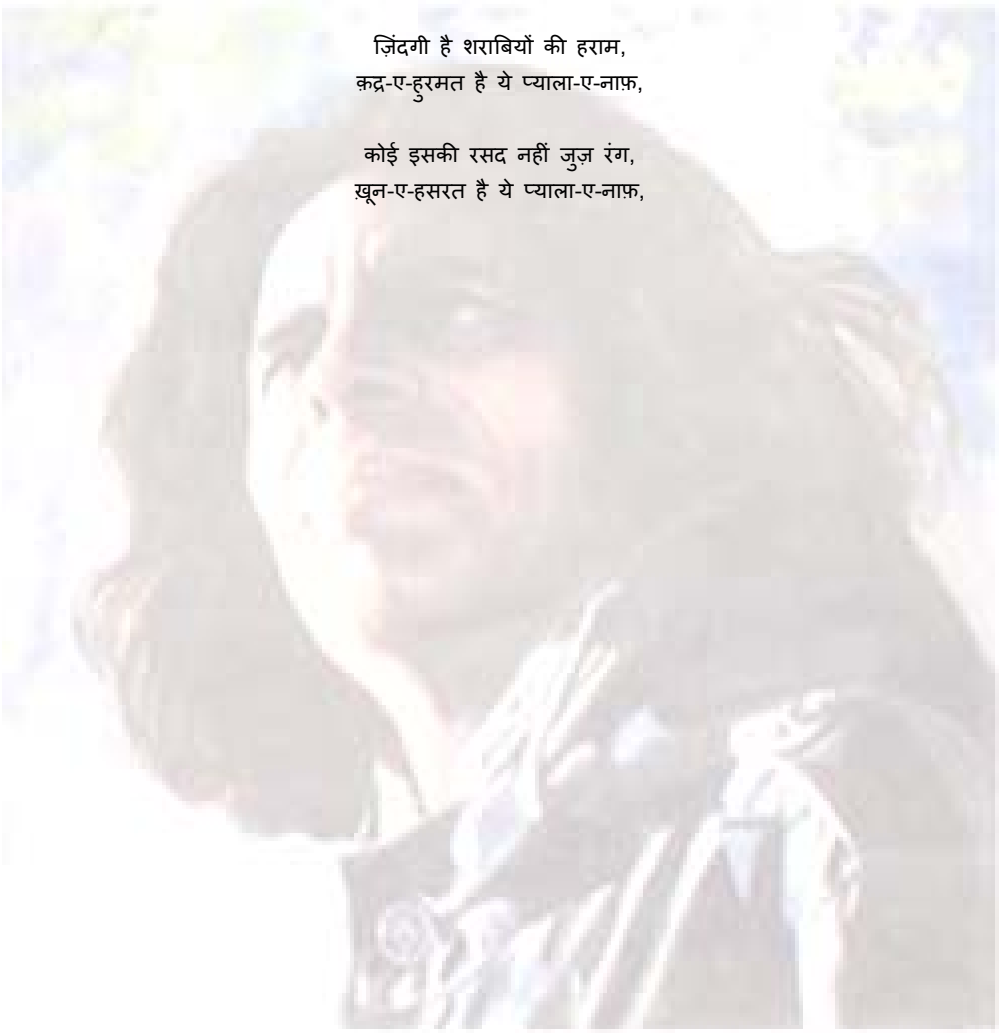

ज़िंदगी है शराबियों की हराम,
क़द्र-ए-हुरमत है ये प्याला-ए-नाफ़,

कोई इसकी रसद नहीं जुज़ रंग,
ख़ून-ए-हसरत है ये प्याला-ए-नाफ़,

हराम - बेकार, क़द्र-ए-हुरमत - इज़्ज़त की क़द्र, रसद - हिस्सा, जुज़ - सिवा

ग़ज़ल

आलम सा आलम है, अब तुम याद नहीं आते,
कैसा क़ातिल ग़म है, अब तुम याद नहीं आते,

दुनिया यानी दुनिया, यानी मेरी दिल दुनिया,
दरहम और बरहम हैं, अब तुम याद नहीं आते,

इक बेएहवाली सी है, ऐसी जो है, बेश अज़ बेश,
हालत-ए-दिल कम कम है, अब तुम याद नहीं आते,

ज़ख़्म है सीने के कजलाए, और सर-ए-शब से,
दाग़ की लौ मध्धम है, अब तुम याद नहीं आते,

अब हैं तुम्हारी उलझी ज़ुल्फें, सुलझाना आसान,
ज़ुल्फ-ए-शब बेख़म है, अब तुम याद नहीं आते,

ज़ख़्मों की हर फ़स्ल है गुज़री, बस बेफ़सली है,
मरहम ही मरहम है, अब तुम याद नहीं आते,

दश्त-ए-तहय्युर बेजुम्बिश है, और अजब कुछ है,
हर आहू बेरम है, अब तुम याद नहीं आते,

आलम - दशा, दरहम और बरहम - इधर उधर बिखरी हुई, बेएहवाली - बहाली, बेश अज़ बेश - अधिक से अधिक, कजलाये - बुझे हुए, सर-ए-शब - रात के शुरू होते ही, ज़ुल्फ-ए-शब - रात के बाल, बेख़म - सुलझी हुई, दश्त-ए-तहय्युर - पत्थर की तरह कड़ा जंगल, बेजुम्बिश - जिसमें थरथराहट न हो, आहू - हिरण, बेरम - जो भागता न हो,

अब नहीं दिल का कोई ज़माना, कोई ज़माना भी,
आन सी अब जमजम है, अब तुम याद नहीं आते,

अब तो बस रोज़ अंगी-ए-यकतौर की हालत है,
जो कुछ है, पैहम है, अब तुम याद नहीं आते,

सोज़-ओ-सलाम-ओ-मर्सिया कैसा, कैसा ज़िक्र भला,
मजलिस-ए-बेमातम है, अब तुम याद नहीं आते,

आन - पल, जमजम - मौत ही मौत, अंगी-ए-यकतौर - पैहम - लगातार, सोज़-ओ-सलाम-ओ-मर्सिया - ये तीनों शब्द मर्सिये के लिए प्रयोग होते हैं, मर्सिये - किसी मृत व्यक्ति के लिए दुख की बात लिखी जाए, मजलिस-ए-बेमातम - ऐसी सभा जहाँ कोई शोक प्रकट न करे,

ग़ज़ल

ग़मगुसारों को मुझसे मतलब क्या,
जो भी होना था हो चुका, अब क्या,

पुर्सिश-ए-हाल है, न रस्म-ए-तपाक,
हो गया हूँ, बहुत मुक़र्रब क्या ?

हो रहा हूँ, यहाँ वहाँ, रूपोश,
बस्तियाँ हो गयीं मुहज़्ज़ब क्या ?

ख़ुद से करना है, सोज़-ए-फ़न का सुख़न,
हैं मेरे दाग़, सब मुरत्तब क्या?

हाल-ए-शोला, वर-ए-लब-ए-फरियाद,
राख भी हो सके तेरे लब क्या ?

वो जो है, है अजब हवसअंगेज़,
है बहुत पाक, उसका क़ालब क्या,

क्या कहूँ रिज़्क-ए-अव्वल-ए-शब की,
है मेरा रिज़्क-ए-आख़िर-ए-शब क्या ?

ग़मगुसारों - दुख बाँटने वाले, पुर्सिश-ए-हाल - हाल चाल पूछना, रस्म-ए-तपाक - गर्मजोशी से मिलना, मुक़र्रब - पास, रूपोश - छुपना, मुहज़्ज़ब - पवित्र, सोज़ - जलन, फ़न - शायरी, सुखन - बात, मुरत्तब - क्रमवार लगाया हुआ, हाल-ए-शोला - अंगारे जैसा हाल, वर-ए-लब-ए-फरियाद - होठों पर फ़रियाद की गर्मी, लब - होंठ, हवसअंगेज़ - हवस से भरा हुआ, पाक - पवित्र, क़ालब - शरीर, रिज़्क-ए-अव्वल-ए-शब - पहली रात का खाना, रिज़्क-ए-आख़िर-ए-शब - आखरी रात का खाना,

अब तो अपने से, दूर पा रहूं मैं,
तू अगर मिल गया मुझे, तब क्या ?

वारकारी है साथियों, यारों,
लो संभालो, चले गये सब क्या ?

ऐ ख़ुदासाज़ बंदगान-ए-खुदा,
खुद सबब बन गया मसब्बब क्या?

चाहिए दफ़्तर-ए-हमेशा-ए-बूद,
यानी होना है आख़िरश कब क्या ?

दिल को करना है ज़िंदगी दो पल,
इसका है नुस्ख़ा-ए-मुजर्रब क्या ?

कोई मानी नहीं किसी शै के,
और अगर हों भी, तो मियाँ तब क्या ?

"जौन" ओ ख़ून थूकने वाले,
अब दिखाना तुझे है करतब क्या ?

मेरे अज़ीज़ सहर अंसारी ने बहुत पहले इस ज़मीन में एक आतिशी ग़ज़ल कही थी, सो ये उसका पर्तव है

पा - अपने से एक क़दम दूर, वारकारी - गहरा वार, ख़ुदासाज़ - ख़ुदा को पहचानने वाले, बंदगान-ए-खुदा - ख़ुदा के बंदे, सबब - कारण, मसब्बब - कारण पैदा करने वाला, दफ़्तर-ए-हमेशा-ए-बूद - अस्तित्व का हमेशा का दफ़्तर, आख़िरश - आख़िरकार, नुस्ख़ा-ए-मुजर्रब - आज़माने का इलाज, मानी - अर्थ, शै - चीज़, करतब - खेल,

ग़ज़ल

दिल है बिस्मिल, पड़ा तड़पता है,
अपना क़ातिल पड़ा तड़पता है,

इक मुक़ाबिल तलब सर-ए-मैदां,
बेमुक़ाबिल पड़ा तड़पता है,

वो तलब में है, जिसके महमिल-ए-रंग,
पस-ए-महमिल पड़ा तड़पता है,

राह-ए-मंज़िल में था जो, रक़्सकिनां,
सर-ए-मंज़िल पड़ा तड़पता है,

बस तड़पने की थी हवस जिसको,
अब बमुश्किल पड़ा तड़पता है,

कुछ तो एहसास कर कि तेरे हुज़ूर,
कैसा क़ाबिल पड़ा तड़पता है,

मीर-ए-महफ़िल का तौर है बेतौर,
बीच महफ़िल पड़ा तड़पता है,

बिस्मिल - अधमरा, इक मुक़ाबिल तलब सर-ए-मैदां - युद्ध के मैदान में प्रतियोगी के होने की इच्छा, बेमुक़ाबिल - जिसके सामने कोई मुक़ाबला करने वाला न हो, महमिल-ए-रंग - डोली का रंग, पस-ए-महमिल - डोली के पीछे, राह-ए-मंज़िल - मंज़िल का रास्ता, रक़्सकिनां - नाचने वाला, सर-ए-मंज़िल - मंज़िल के सामने, बमुश्किल - बहुत मुश्किल से, मीर-ए-महफ़िल - सभा का राजा

इक नफ़स है की दो नफ़स के बीच,
होके हाइल पड़ा तड़पता है,

न तो कोई विसाल है न फिराक़,
बस मियाँ दिल पड़ा तड़पता है,

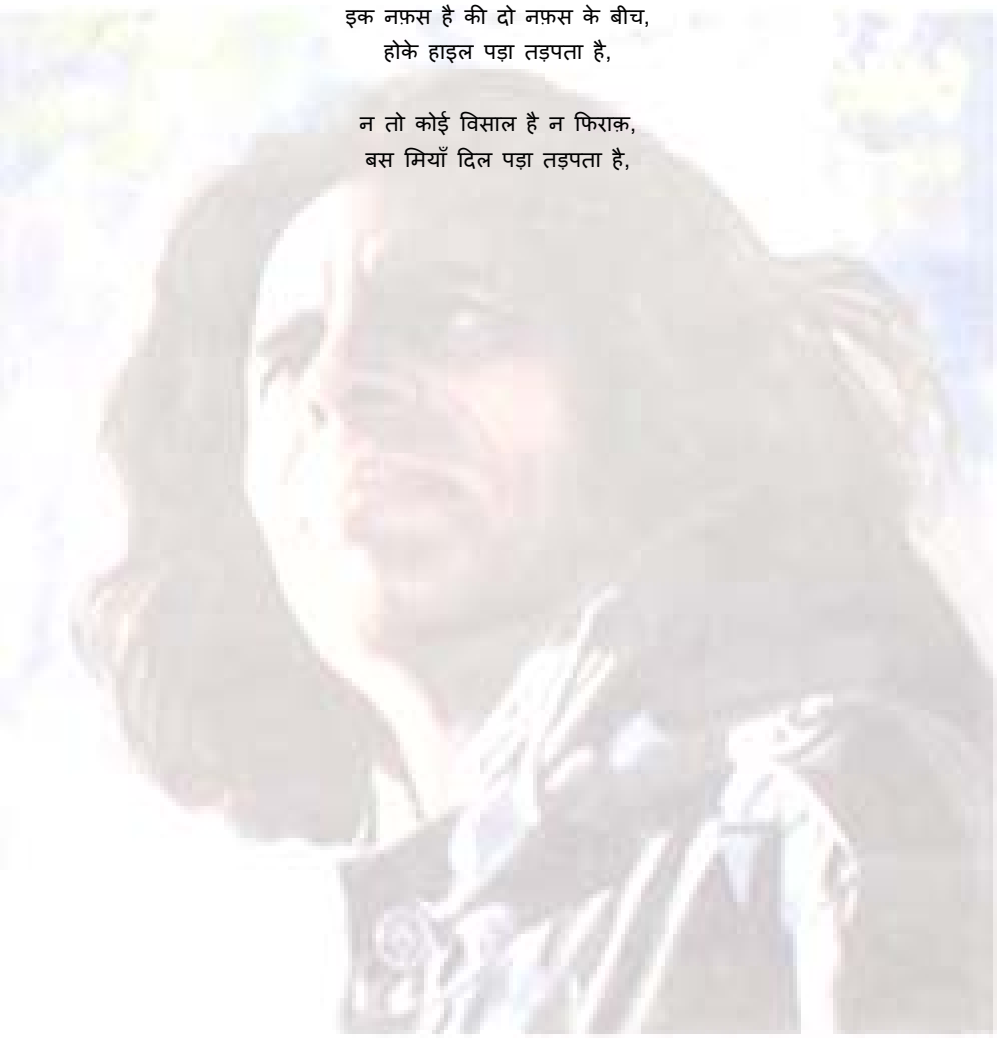

नफ़स - साँस, हाइल - बीच में, विसाल - मिलन, फिराक़ - जुदाई,

ग़ज़ल

सिलसिला जुन्बां इक तन्हा से, रूह किसी तन्हा की थी,
एक आवाज़ अभी आई थी, वो आवाज़ हवा की थी,

बेदुनियाई ने इस दिल की और भी दुनियादार किया,
दिल पर ऐसी टूटी दुनिया, तर्क ज़रा दुनिया की थी,

मेरी रंग तमन्नाई भी, फसलों, मेरे काम आई,
मेरे गुमां की खुश्बू उसकी, रंगत को पहना, की थी,

अपने अंदर हंसता हूँ मैं, और बहुत शरमाता हूँ,
खून भी थूका, सचमुच थूका, और ये सब चालाकी थी,

अपने आप से जब मैं गया हूँ, तब की रवायत सुनता हूँ,
आकर कितने दिन तक उसकी, याद मुझे पूछा, की थी,

हूँ सौदाई, सौदाई सा, जबसे मैने जाना है,
तय वो राह-ए-सर सौदाई, मैने बेसौदा, की थी,

गर्द थी बेगानागर्दी की, जो थी, निगह मेरी, ताहम,
जब भी कोई सूरत बिछड़ी, आँखों में नमनाकी थी,

ये है क़िस्सा कितना अच्छा, पर मैं अच्छा समझूँ तो,
एक था कोई जिसने यकदम, ये दुनिया पैदा की थी,

सिलसिला - किस चीज़ का क्रमवार होना, जुन्बां - हिलता हुआ, बेदुनियाई - जिसको दुनियादारी नहीं आती, तर्क - छोड़ना, रंग तमन्नाई - तमन्नाओं के रंग, गुमां - शंका, रवायत - चलन, सौदाई - पागल, राह-ए-सर सौदाई - पागलपन का रास्ता, बेसौदा - बिना पागलपन के, गर्द - धूल, बेगानागर्दी - अजनबी सी, निगह - आँखें, ताहम - फिर भी, नमनाकी - गीलापन,

ग़ज़ल

हम आँधियों के बन में किसी कारवाँ के थे,
जाने कहाँ से आए हैं, जाने कहाँ के थे,

ऐ जान-ए-दास्ताँ तुझे आया कभी ख़याल,
वो लोग क्या हुए जो तेरी दास्ताँ के थे,

हम तेरे आस्ताँ पे ये कहने को आए हैं,
वो ख़ाक हो गये जो तेरे आस्ताँ के थे,

मिलकर तपाक से न हमें किजीए उदास,
ख़ातिर न कीजिए, कभी हम भी यहाँ के थे,

क्या पूछते हो नाम-ओ-निशान-ए-मुसाफिरां
हिंदोस्ताँ से आए हैं, हिंदोस्ताँ के थे,

अब ख़ाक उड़ रही है यहाँ इंतेज़ार की,
ऐ दिल ये बाम-ओ-दर किसी जान-ए-जहाँ के थे,

हम किसको दें भला, दर-ओ-दीवार का हिसाब,
ये हम जो हैं, ज़मीं के न थे आसमाँ के थे,

बन - जंगल, जान-ए-दास्ताँ - कहानी की जान, आस्ताँ - चौखट, तपाक - गर्मजोशी से, ख़ातिर - आव भगत, नाम-ओ-निशान-ए-मुसाफिरां - राही का नाम और निशान या पता, बाम-ओ-दर - दरवाज़ा और छत, जान-ए-जहाँ - प्रेमिका, दर-ओ-दीवार - दरवाज़ा और दीवार,

हमसे छिना है, नाफ़-ए-प्याला तेरा मियाँ
गोया अज़ल से हम सफ़-ए-लबतश्नगां के थे,

हमको हक़ीक़तों ने किया है, ख़राब-ओ-ख्वार,
हम ख़्वाब-ए-ख़्वाब और गुमान-ए-गुमां के थे,

वो रिश्ता हाय ज़ात, जो बर्बाद हो गये,
मेरे गुमां के थे न तुम्हारे गुमां के थे,

सद याद याद "जौन" वो हंगाम-ए-दिल कि जब,
हम एक गाम के न थे, पर हफ्तखवाँ के थे,

नाफ़-ए-प्याला - प्याले रूपी नाभि, गोया - जैसे की, अज़ल - शुरुआत से, सफ़-ए-लबतश्नगां के - प्यासे होठों की पंक्ति के, ख़राब-ओ-ख्वार - बदनाम. गुमान - शंका, सद - सैकड़ों, हंगाम-ए-दिल - दिल का हंगामा, गाम - क़दम, हफ्तखवाँ - सात दिन,

ठीक है ख़ुद को हम बदलते हैं,
शुक्रिया, मशवरत का चलते हैं,

हो रहा हूँ मैं किस तरह बर्बाद,
देखने वाले हाथ मलते हैं,

है वो जान अब हर एक महफ़िल की,
हम भी अब घर से कम निकलते हैं,

क्या तकल्लुफ करें ये कहने में,
जो भी खुश हैं हम उनसे जलते हैं,

है उसे दूर का सफ़र दरपेश,
हम संभाले नहीं संभलते हैं,

तुम बनो रंग, तुम बनो खुश्बू,
हम तो अपने सुख़न में ढलते हैं,

मैं उसी तरह तो बहलता हूँ,
और सब जिस तरह बहलते हैं,

है अजब फ़ैसले का सेहरा भी,
चल न पड़िये तो पाँव जलते हैं,

मशवरत - राय, तकल्लुफ - हिचकिचाहट, दरपेश - सामने, सुख़न - शायरी, अजब - अजीब, सेहरा - जंगल,

गज़ल

हम बसद नाज़ दिल-ओ-जाँ में बसाए भी गये,
फिर गँवाए भी गये, और भुलाए भी गये,

हम तेरा नाज़ थे, फिर तेरी ख़ुशी की ख़ातिर,
करके बेचारा तेरे सामने लाए भी गये,

कजअदाई से सज़ा, कजकुलाही की पाई,
मीर-ए-महफ़िल थे, सो महफ़िल से उठाए भी गये,

क्या गिला, खून जो अब थूक रहे हैं जानां,
हम तेरे रंग के परतव से सजाए भी गये,

हमसे रूठा भी गया, हमको मनाया भी गया,
फिर सभी नक़्श ताल्लुक़ के मिटाए भी गये,

जमअ-ओ-तफ़रीक़ थे, हम मक़तब-ए-जिस्म-ओ-जाँ की,
के बढ़ाए भी गये, और घटाए भी गये,

"जौन" दिल शहर-ए-हक़ीक़त को उजाड़ा भी गया,
और फिर शहर तवह्हुम के बसाए भी गये,

बसद नाज़ - सैकड़ों बार के नखरे, दिल-ओ-जाँ - दिल और जान, नाज़ - घमंड, कजअदाई - बेवफ़ाई, कजकुलाही - चंचलता, मीर-ए-महफ़िल - महफ़िल के राजा, परतव - रोशनी, नक़्श - निशान, जमअ -ओ-तफ़रीक़ - मक़तब-ए-जिस्म-ओ-जाँ - जिस्म और जान की पाठशाला से, जमअ-ओ-तफ़रीक़ - जोड़ घटाव, शहर-ए-हक़ीक़त - सच्चाई का शहर, तवह्हुम - अंधविश्वास,

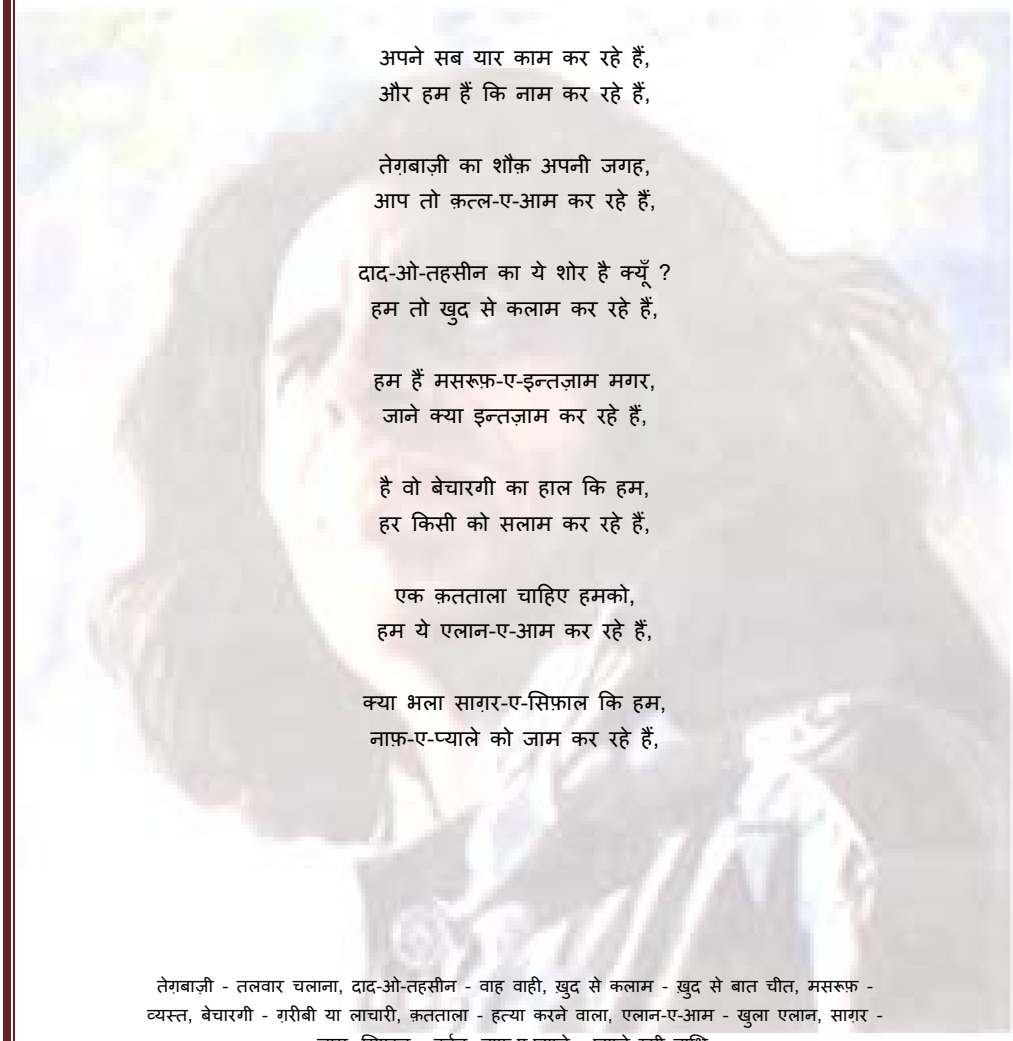

ग़ज़ल

अपने सब यार काम कर रहे हैं,
और हम हैं कि नाम कर रहे हैं,

तेग़बाज़ी का शौक़ अपनी जगह,
आप तो क़त्ल-ए-आम कर रहे हैं,

दाद-ओ-तहसीन का ये शोर है क्यूँ ?
हम तो ख़ुद से कलाम कर रहे हैं,

हम हैं मसरूफ़-ए-इन्तज़ाम मगर,
जाने क्या इन्तज़ाम कर रहे हैं,

है वो बेचारगी का हाल कि हम,
हर किसी को सलाम कर रहे हैं,

एक क़तताला चाहिए हमको,
हम ये एलान-ए-आम कर रहे हैं,

क्या भला साग़र-ए-सिफ़ाल कि हम,
नाफ़-ए-प्याले को जाम कर रहे हैं,

तेग़बाज़ी - तलवार चलाना, दाद-ओ-तहसीन - वाह वाही, ख़ुद से कलाम - ख़ुद से बात चीत, मसरूफ़ - व्यस्त, बेचारगी - ग़रीबी या लाचारी, क़तताला - हत्या करने वाला, एलान-ए-आम - खुला एलान, साग़र - जाम, सिफ़ाल - बर्तन, नाफ़-ए-प्याले - प्याले रूपी नाभि,

हम तो आए थे अर्ज़-ए-मतलब को,
और वो एहतराम कर रहे हैं,

न उठे आह का धुआँ भी, कि वो,
कू-ए-दिल में ख़िराम कर रहे हैं,

उसके होठों पे रख के होंठ अपने,
बात को हम तमाम कर रहे हैं,

हम अजब हैं कि उसके कूचे में,
बेसबब धूमधाम कर रहे हैं,

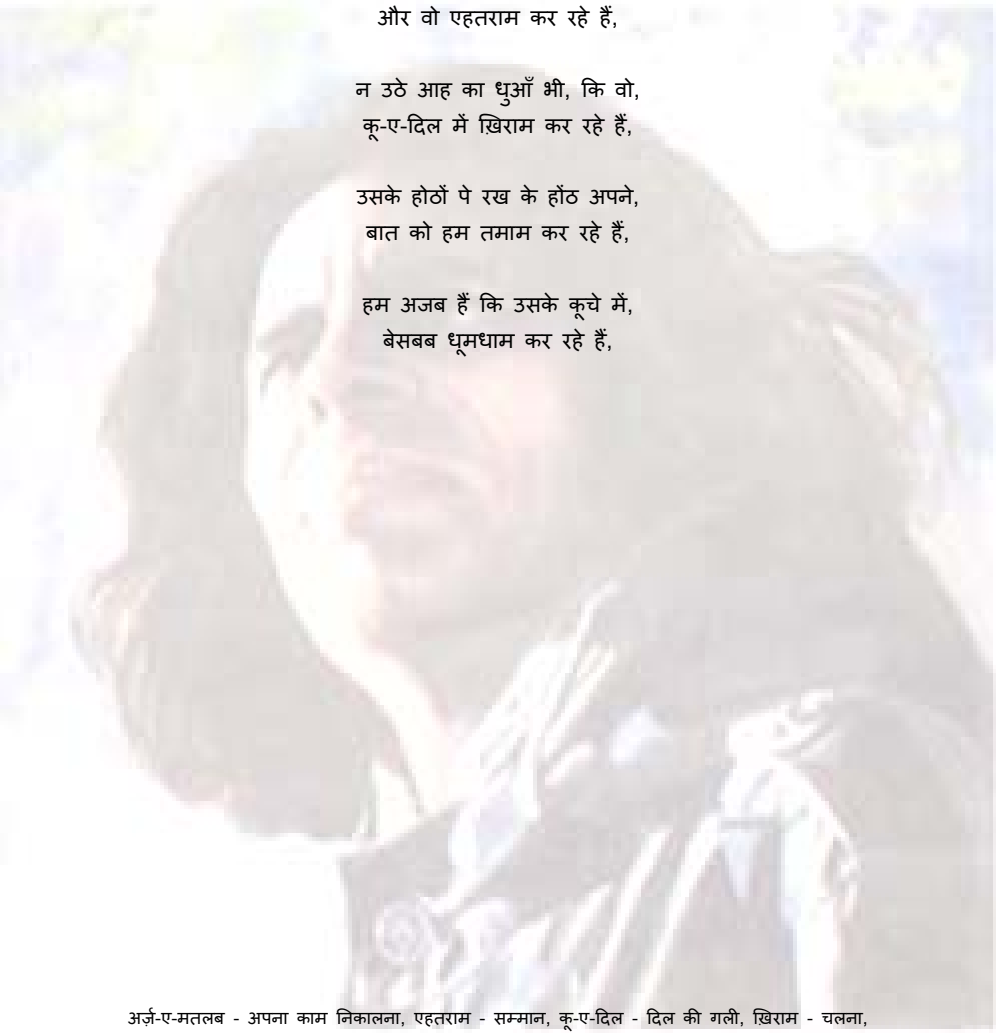

अर्ज़-ए-मतलब - अपना काम निकालना, एहतराम - सम्मान, कू-ए-दिल - दिल की गली, ख़िराम - चलना,
तमाम - ख़त्म, अजब - अजीब, कूचे - गली, बेसबब - व्यर्थ ही

ग़ज़ल

तुम हक़ीक़त नहीं हो हसरत हो,
जो मिले ख़्वाब में वो दौलत हो,

मैं तुम्हारे ही दम से ज़िंदा हूँ,
मर ही जाऊं जो तुमसे फ़ुर्सत हो,

तुम हो ख़ुश्बू के ख़्वाब की ख़ुश्बू,
और उतनी ही बेमुरव्वत हो,

तुम हो पहलू में पर क़रार नहीं,
यानी ऐसा है, जैसे फ़ुरक़त हो,

तुम हो अंगड़ाई रंग-ओ-निकहत की,
कैसे अंगड़ाई से शिकायत हो,

किस तरह छोड़ दूँ तुम्हें जानाँ,
तुम मेरी ज़िंदगी की आदत हो,

किसलिए देखती हो आईना,
तुम तो ख़ुद से भी ख़ूबसूरत हो,

दास्ताँ ख़त्म होने वाली है,
तुम मेरी आख़री मुहब्बत हो,

हसरत - इच्छा, दम से - वजह से, बेमुरव्वत - जिसमें आदर न हो, पहलू - बाहों में, क़रार - चैन, रंग-ओ-निकहत - रंग और ख़ुश्बू की, दास्ताँ - कहानी,

ग़ज़ल

दिल में कम कम मलाल तो रखिए,
निसबत-ए-माह-ओ-साल तो रखिए,

आपको अपनी तमकिनत की क़सम,
कुछ लिहाज़-ए-जमाल तो रखिए,

सब्र तो आने दीजिए दिल को,
अपना पाना मुहाल तो रखिए,

रहे, जानां की याद तो दिल में,
दश्त में इक ग़ज़ाल तो रखिए,

आप अपनी गली के साइल को,
कम से कम पुरसवाल तो रखिए,

जाने मुझसे ये कौन कहता था,
आप अपना ख़याल तो रखिए,

हालत-ए-फ़ुरक़त-ए-हमेशा में,
दरमियाँ कोई हाल तो रखिए,

मलाल - दुख, निसबत-ए-माह-ओ-साल - महीनों और साल से लगाव, तमकिनत - शान-ओ- शौकत, लिहाज़-ए-जमाल - खूबसूरती का आदर, मुहाल - मुश्किल, दश्त - जंगल, ग़ज़ाल - हिरण, साइल - भिखारी, पुरसवाल - सवालों से भरा हुआ, हालत-ए-फ़ुरक़त-ए-हमेशा - हमेशा की जुदाई की हालत में, दरमियाँ - बीच में,

आज दो लम्हा अपनी बाहों को,
मेरी बाहों में डाल तो रखिए,

एक नासूर लेके आया हूँ,
ख्वाहिश-ए-इन्दिमाल तो रखिए,

एक शै एहतराम-ए-इल्म भी है,
इसका कुछ कुछ ख़याल तो रखिए,

ढूँढकर लाइए कहीं से हमें,
अपनी कोई मिसाल तो रखिए,

है निगाह-ए-हवस मेरी हाज़िर,
अपने गालों को लाल तो रखिए,

नाफ़-ए-प्याला न आप छलकाएँ,
इसको हम पर हलाल तो रखिए,

है वो नापेद, हो मगर, ख़ुद में,
तौर-ए-हिज्र-ओ-विसाल तो रखिए,

नासूर - ज़ख़्म, ख्वाहिश-ए-इन्दिमाल - घाव के भरने की इच्छा, शै - चीज़, एहतराम-ए-इल्म - जानकारी का सम्मान, निगाह-ए-हवस - हवस भरी निगाह, नाफ़-ए-प्याला - प्याले रूपी नाभि, हलाल - अप्रतिबंधित, नापेद - गुम, तौर-ए-हिज्र-ओ-विसाल - मिलन और जुदाई का तरीक़ा,

"जौन" बेहाल तो हो लेकिन आप,
हालत-ए-हाल-ए-हाल तो रखिए,

तेग़ तो "जौन" फेंक दीजिए मगर,
हाथ में अपने ढाल तो रखिए,

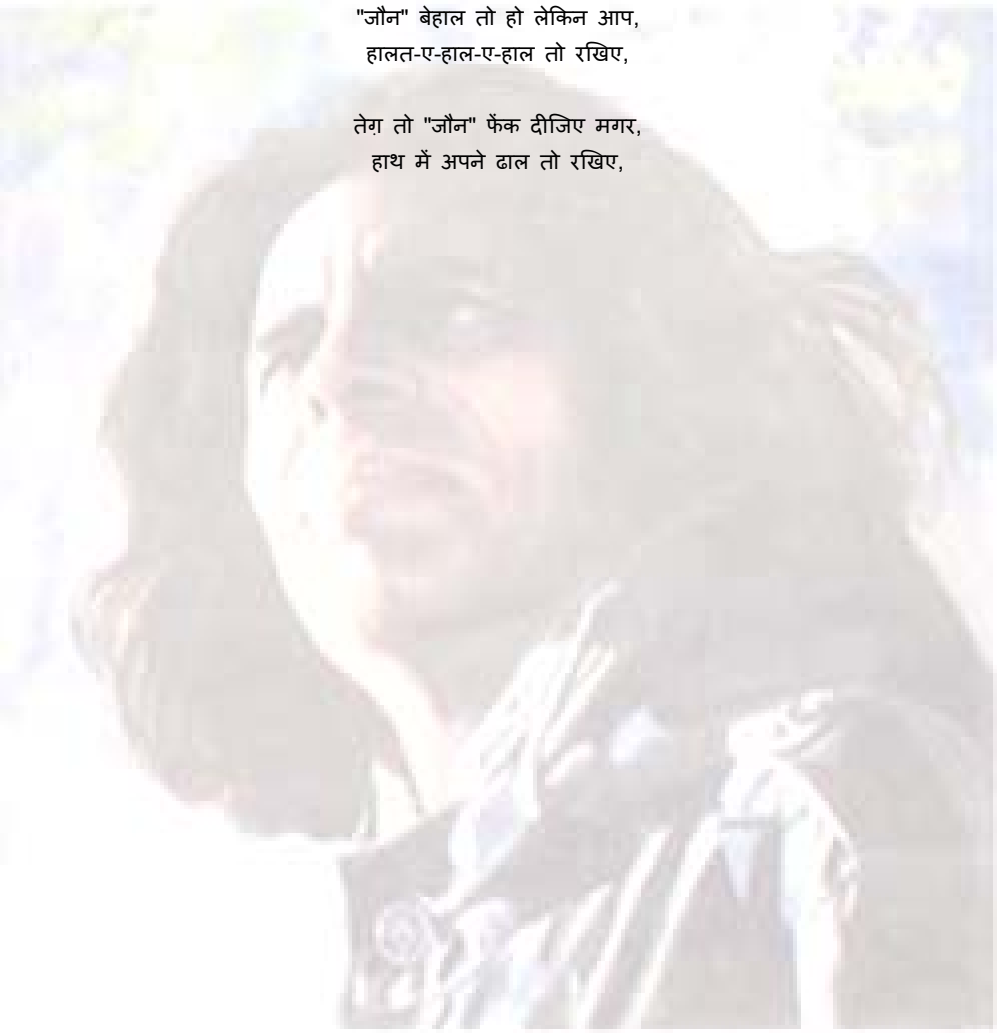

बेहाल - बेहोश, समय के हालात की ख़बर, तेग़ - तलवार

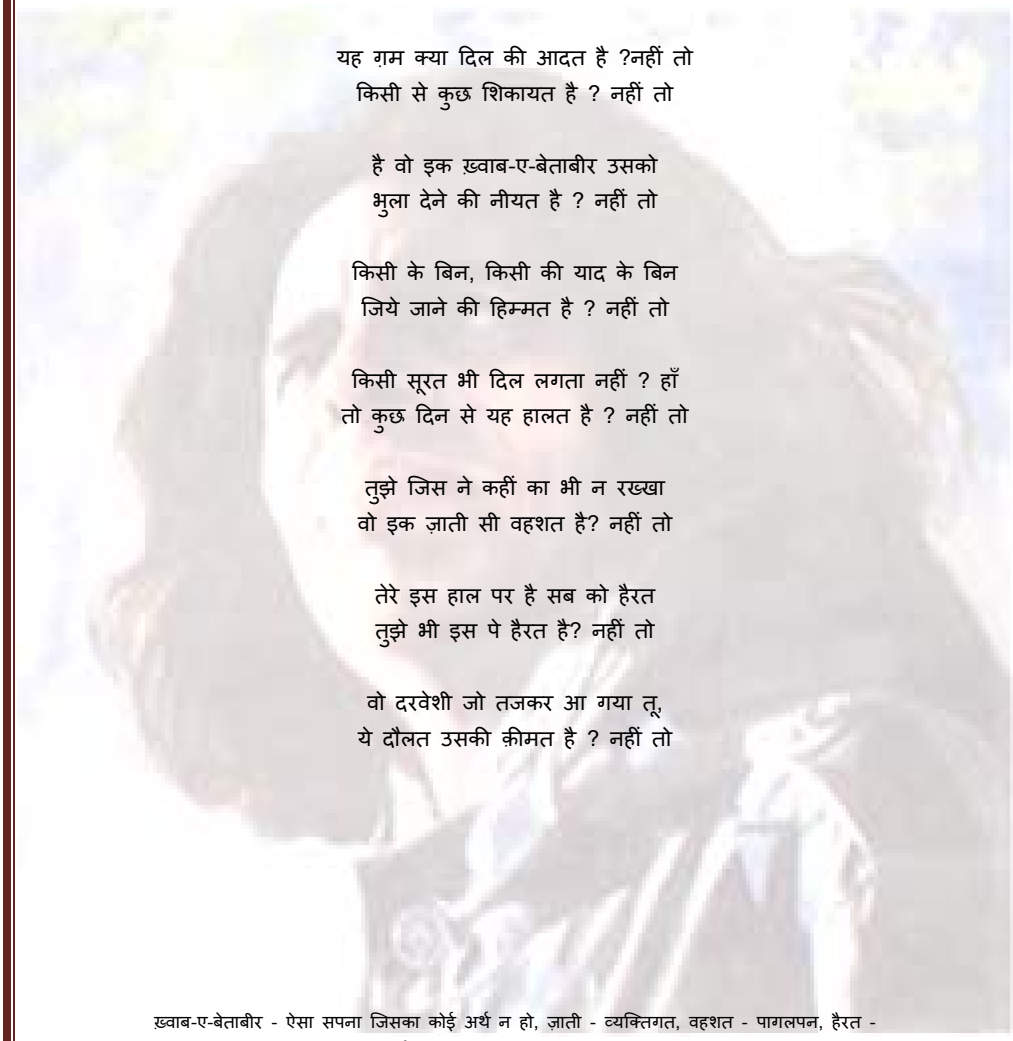

ग़ज़ल

यह ग़म क्या दिल की आदत है ?नहीं तो
किसी से कुछ शिकायत है ? नहीं तो

है वो इक ख़्वाब-ए-बेताबीर उसको
भुला देने की नीयत है ? नहीं तो

किसी के बिन, किसी की याद के बिन
जिये जाने की हिम्मत है ? नहीं तो

किसी सूरत भी दिल लगता नहीं ? हाँ
तो कुछ दिन से यह हालत है ? नहीं तो

तुझे जिस ने कहीं का भी न रख्खा
वो इक ज़ाती सी वहशत है? नहीं तो

तेरे इस हाल पर है सब को हैरत
तुझे भी इस पे हैरत है? नहीं तो

वो दरवेशी जो तजकर आ गया तू,
ये दौलत उसकी क़ीमत है ? नहीं तो

ख़्वाब-ए-बेताबीर - ऐसा सपना जिसका कोई अर्थ न हो, ज़ाती - व्यक्तिगत, वहशत - पागलपन, हैरत - आश्चर्य, दरवेशी - फ़क़ीरी, तज्कर - छोड़कर,

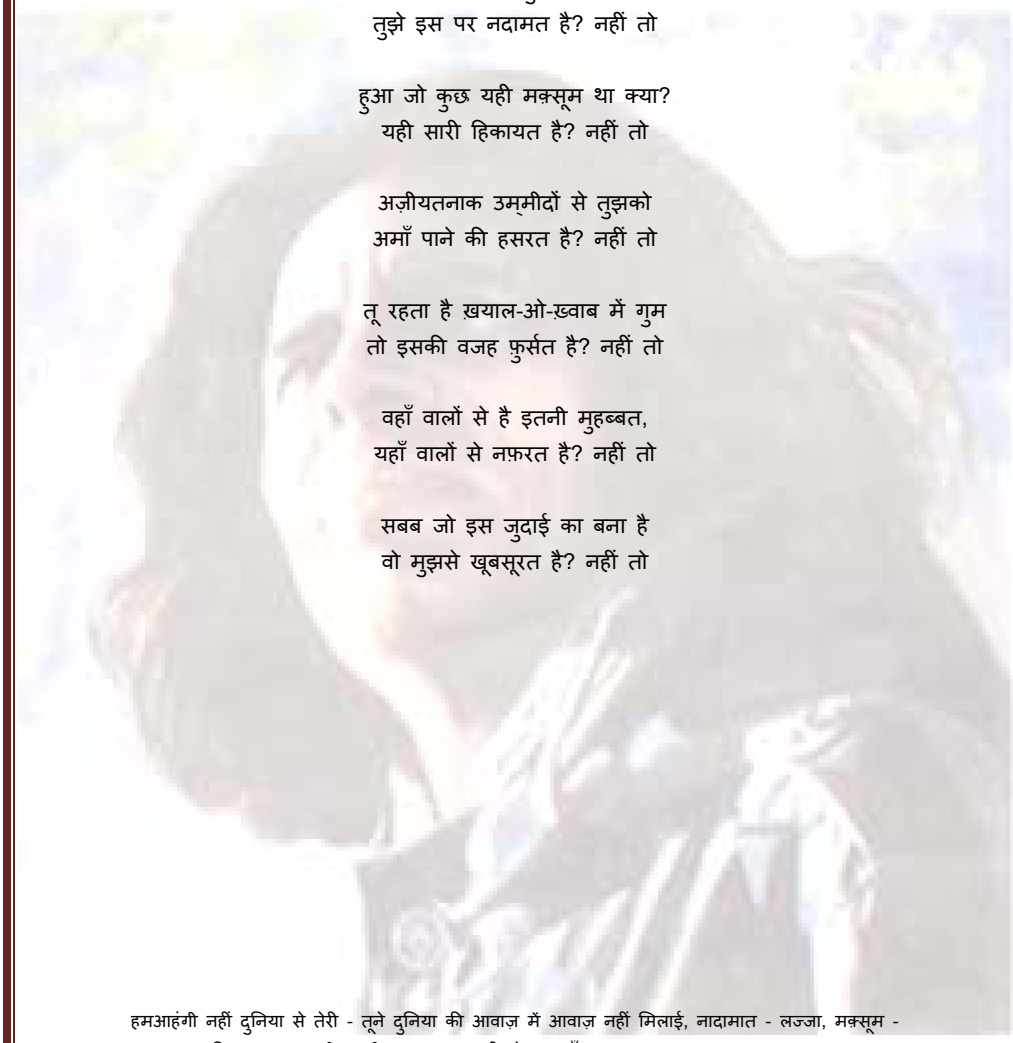

हमआहंगी नहीं दुनिया से तेरी
तुझे इस पर नदामत है? नहीं तो

हुआ जो कुछ यही मक़्सूम था क्या?
यही सारी हिकायत है? नहीं तो

अज़ीयतनाक उम्मीदों से तुझको
अमाँ पाने की हसरत है? नहीं तो

तू रहता है ख़याल-ओ-ख़्वाब में गुम
तो इसकी वजह फ़ुर्सत है? नहीं तो

वहाँ वालों से है इतनी मुहब्बत,
यहाँ वालों से नफ़रत है? नहीं तो

सबब जो इस जुदाई का बना है
वो मुझसे ख़ूबसूरत है? नहीं तो

हमआहंगी नहीं दुनिया से तेरी - तूने दुनिया की आवाज़ में आवाज़ नहीं मिलाई, नादामात - लज्जा, मक़्सूम - भाग्य, हिकायत - कहानी, अज़ीयतनाक - तक़लीफ़देह, अमाँ - पनाह, हसरत - इच्छा, सबब - कारण,

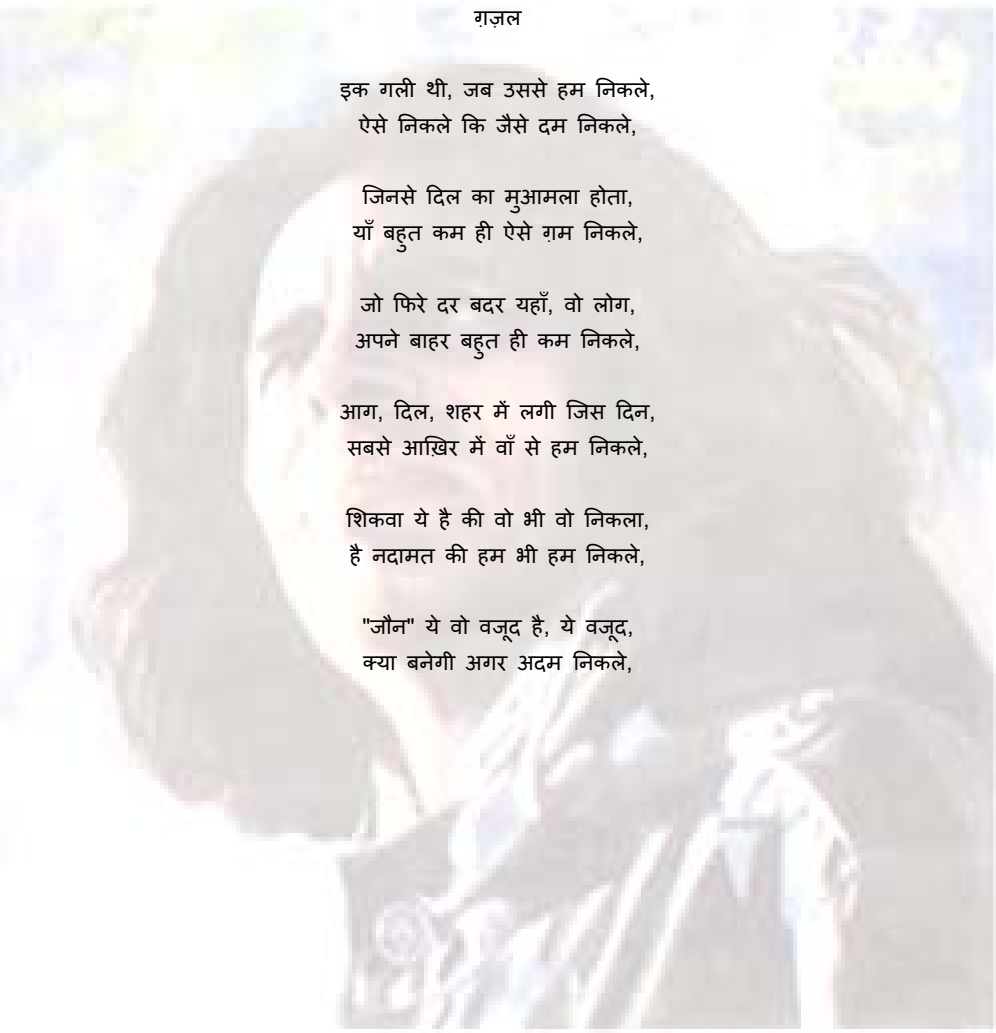

ग़ज़ल

इक गली थी, जब उससे हम निकले,
ऐसे निकले कि जैसे दम निकले,

जिनसे दिल का मुआमला होता,
याँ बहुत कम ही ऐसे ग़म निकले,

जो फिरे दर बदर यहाँ, वो लोग,
अपने बाहर बहुत ही कम निकले,

आग, दिल, शहर में लगी जिस दिन,
सबसे आख़िर में वाँ से हम निकले,

शिकवा ये है की वो भी वो निकला,
है नदामत की हम भी हम निकले,

"जौन" ये वो वजूद है, ये वजूद,
क्या बनेगी अगर अदम निकले,

मुआमला - मामला, नदामत - लज्जा, अदम - मरने के बाद में जहाँ आत्माएँ वास करतीं हैं

ग़ज़ल

ख़िल्वत-ए-जाँ की ज़िंदगी, नज़्र-ए-सफ़र तो हो गयी,
यानी हमारी आरज़ू, ख़ाकबसर तो हो गयी,

सोज़-ए-फ़ुगान-ए-हाल से, जल गये लब मेरे मगर,
एहल-ए-मुहल्ला-ए-फ़िराक़, तुमको ख़बर तो हो गयी,

है मेरा ख़्वाब पुरअज़ाब, सबके हैं ख़्वाब महरताब,
मेरी सहर नहीं हुई, सबकी सहर तो हो गयी,

वस्ल-ओ-फिराक़ क्या भला, वक़्त तो सह लिया गया,
उसकी गुज़र तो हो गयी, मेरी बसर तो हो गयी,

दिल हमा ज़ख़्म ज़ख़्म है, जाँ हमा दाग़ दाग़ है,
पैकर-ए-पुरनिगार पर एक नज़र तो हो गयी,

सू-ए-शुमाल-ए-सब्ज़ से, आई थी एक सुर्ख़ मौज,
यानी निशात-ए-दिल की याद, ख़ून में तर तो हो गयी,

तुझको भला गिला है क्यूँ, तू जो है ज़ार और ज़बूं,
"जौन" तेरी मुहम जो थी, हार के सर तो हो गयी,

ख़िल्वत-ए-जाँ - अकेली जान, नज़्र-ए-सफ़र - सफ़र पर न्यौछावर, ख़ाकबसर - परेशान, सोज़-ए-फ़ुगान-ए-हाल - हाल की चीख की जलन से, लब - होंठ, एहल-ए-मुहल्ला-ए-फ़िराक़ - जुदाई के मुहल्ले वाले, पुरअज़ाब - यातनाओं से भरा हुआ, महरताब - सूरज की तरह चमकते हुए, सहर - सुबह, वस्ल-ओ-फिराक़ - मिलन और जुदाई, हमा - पूरा, पैकर-ए-पुरनिगार - खूबसूरत तस्वीर पर, सू-ए-शुमाल-ए-सब्ज़ - हरियाली वाली उत्तरी दिशा से, सुर्ख़ मौज - लाल लहर, निशात-ए-दिल - दिल की ख़ुशी, ज़ार - कमज़ोर, ज़बूं - बुरा, मुहम - युद्ध,

गज़ल

कुछ भी हुआ पर अपने साथ, अपनी गुज़र तो हो गयी,
चाहे किसी तरह हुई, उम्र बसर तो हो गयी,

इसका न था कोई मलाल, और न कोई हाल-ए-हाल,
शामगह-ए-मलाल में, मुझको ख़बर तो हो गयी,

रूद-ए-फ़ुग़ान-ए-खामोशी, दिल में है एक मोजज़न,
एक अजीब वारदात, लब के उधर तो गयी,

उसको नहीं था मेरा पास, जाते हुए, निगाह से,
मुझको ख़ुशी है, रोज़ी-ए-दीदा-ए-तर तो हो गयी,

अब लब-ए-पुरनफ़स से है, अपना गुज़र नफ़स नफ़स,
अपने लिए इक आप में, राहगुज़र तो हो गयी,

तमकिनत, ख़याल में, मैनें कहा कि तुम हो क्या,
यानी कि इक गुज़ारिश-ए-बार-ए-दिगर तो हो गयी,

पुरसुखनान-ए-पुरसुकूत, शिकवाकिनां हो किसलिए,
अर्ज़-ए-हुनर किए बग़ैर, अर्ज़-ए-हुनर तो हो गयी,

है शब-ए-दिल में ख़ेमाज़न, एक सुरूद-ए-रोशनी,
तुमको सहर की थी हवस, "जौन" सहर तो हो गयी,

मलाल - दुख, हाल-ए-हाल - ख़बर लेने वाला, शामगह-ए-मलाल - दुख भरी शाम, रूद-ए-फ़ुगान-ए-खामोशी - खामोशी की चीख़ की नदी, मोजज़न - बहना, लब - होंठ, पास - ख़याल, रोज़ी-ए-दीदा-ए-तर - आँसू भारी आँखों की नौकरी, लब-ए-पुरनफ़स - साँस लेते हुए होंठ, नफ़स नफ़स - पल पल, राहगुज़र - रास्ता, तमकिनत - घमंड, गुज़ारिश-ए-बार-ए-दिगर - दूसरे तरीक़े से विनती कर ली, पुरसुखनान-ए-पुरसुकूत - बिल्कुल खामोशी से बहुत सारी बातें हो गयीं, शिकवाकिनां - शिकवा करने वाले, अर्ज़-ए-हुनर - कला दिखाने की विनती, शब-ए-दिल - दिल की रात, ख़ेमाज़न - डेरा डाले हुए, सरोद-ए-रोशनी - रोशनी का गीत, सहर - सुबह,

ग़ज़ल

रंग आ जाएगा, रँगींनज़रां, आएँ कहीं,
बज़्म बेरंग है, खूनीं जिगरां आएँ कहीं,

नहीं अब याद में उस शोख़ की, फरियाद-ओ-फुगां,
शहर ख़ामोश है शोरीदासरां आएँ कहीं,

बुझ न जाए कहीं अब शॅमअ के साथ आँखें भी,
हालत-ए-आख़िर-ए-शब खुशखबराँ आएँ कहीं,

किससे महरूमी-ए-दीदार का, छेड़ूं मैं सुखन,
दीद कम कम है यहाँ, दीदावरां आएँ कहीं,

हालत-ए-हाल में, बिस्मिल है, अबस की महफ़िल,
अब दम-ए-रक़्स है क़ातिलकमरां आएँ कहीं,

तरफ़-ए-इश्क़ से, कुछ एहल-ए-हवस निकले थे,
सिपरअंदाज़ हैं सब, बेसिपरां आएँ कहीं,

रँगींनज़रां - रंगीन नज़र वाले, बज़्म - सभा, खूनीं जिगरां - खून में सने हुए जिगर वाले, शोख़ - चंचल प्रेमिका, फरियाद-ओ-फुगां - याचना और चीख़, शोरीदासरां - जले हुए सर वाले, शोरीदासरां - पागल या दीवाने, शॅमअ - दीप, हालत-ए-आख़िर-ए-शब - आखरी रात की हालत, खुशखबराँ - खुशख़बरी देने वाले, महरूमी-ए-दीदार - देखने से वंचित, सुखन - बात, दीद - दर्शन, दीदावरां - दर्शन करवाने वाले, हालत-ए-हाल - ऐसी हालत, बिस्मिल - अधमरा, अबस - व्यर्थ, दम-ए-रक़्स - नाचते वक़्त, क़ातिलकमरां - क़ातिल कमर वाले, तरफ़-ए-इश्क़ से - इश्क़ की तरफ से, एहल-ए-हवस - हवस वाले, सिपरअंदाज़ - ढाल लिये हुए, बेसिपरां - बगैर ढाल वाले,

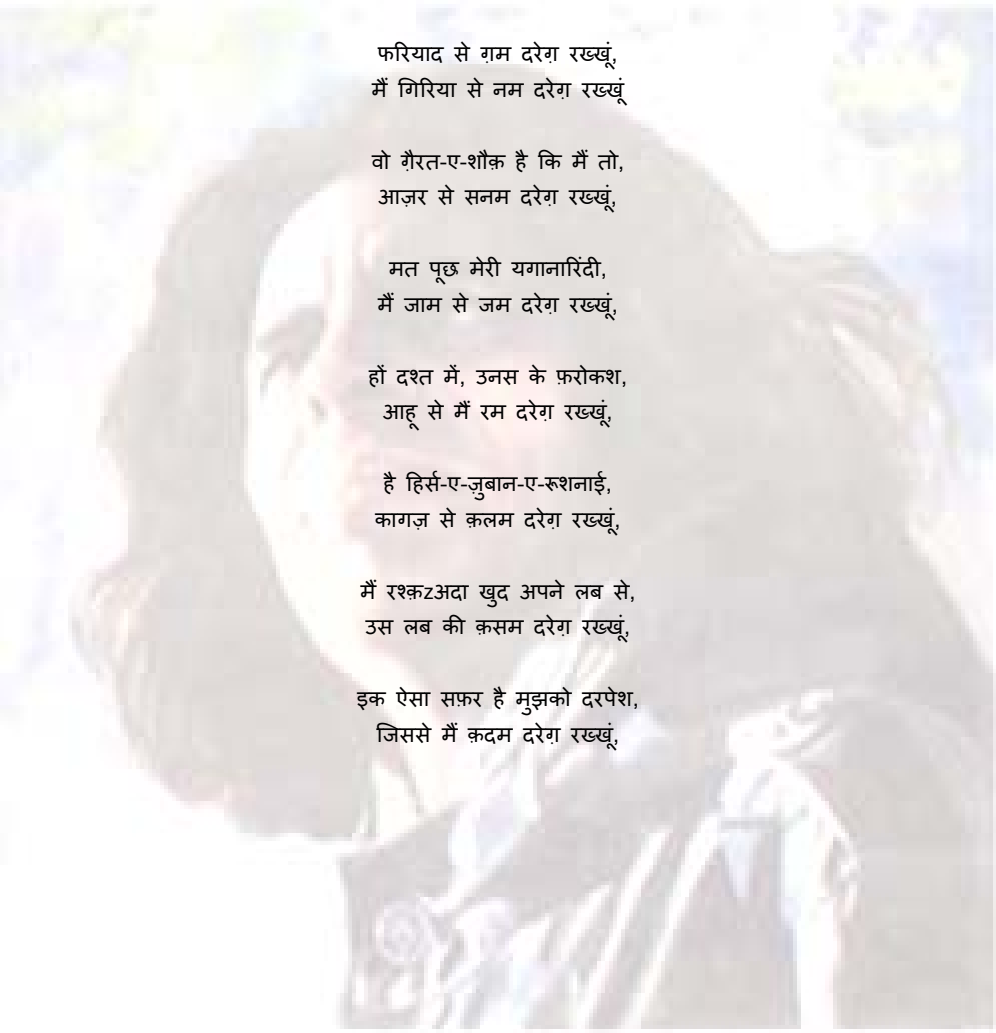

फरियाद से ग़म दरेग़ रख्खूं,
मैं गिरिया से नम दरेग़ रख्खूं

वो ग़ैरत-ए-शौक़ है कि मैं तो,
आज़र से सनम दरेग़ रख्खूं,

मत पूछ मेरी यगानारिंदी,
मैं जाम से जम दरेग़ रख्खूं,

हों दश्त में, उनस के फ़रोकश,
आहू से मैं रम दरेग़ रख्खूं,

है हिर्स-ए-ज़ुबान-ए-रूशनाई,
कागज़ से क़लम दरेग़ रख्खूं,

मैं रश्क़zअदा खुद अपने लब से,
उस लब की क़सम दरेग़ रख्खूं,

इक ऐसा सफ़र है मुझको दरपेश,
जिससे मैं क़दम दरेग़ रख्खूं,

हूँ जिस रह-ए-खम ब खम का रहरौ,
मैं उससे ही खम दरेग़ रख्खूं,

जिस शख़्स का है, बहा मेरी जान,
मैं उससे दिरम दरेग़ रख्खूं,

ग़ज़ल

तुम्हारी याद से जब हम गुज़रने लगते हैं,
जो काम न हो, बस वो करने लगते हैं,

तुम्हारे आईना-ए-ज़ात के तसव्वुर में,
हम अपने आइने आगे सँवरने लगते हैं,

तुम्हारे कूचा-ए-जाँबख़्श के क़लन्दर भी,
अजीब लोग हैं, हर लम्हा मरने लगते हैं,

हम अपनी हालत-ए-बेहालती-ए-अज़ीयत में,
न जाने किसको, किसे याद करने लगते हैं,

बहुत उदास हूँ मैं ग़म सदा नहीं रहता,
बहुत उदास हूँ मैं, ज़ख़्म भरने लगते हैं,

उन्हें मैं तेरी तमन्ना, का फ़न सिखाता हूँ,
जो लोग तेरी तमन्ना से डरने लगते हैं,

यहाँ मैं ज़िक्र नहीं कर रहा मकीनों का,
कभी कभी दर-ओ-दीवार मरने लगते हैं,

आईना-ए-ज़ात - व्यक्तित्व, तसव्वुर - ख़याल, कूचा-ए-जाँबख़्श - जान बचाने वाली गली, क़लन्दर - एक प्रकार के फ़क़ीर जो आज़ाद और मस्त रहते थे, हालत-ए-बेहालती-ए-अज़ीयत - बुरे हाल की तक़लीफ़, फ़न - कला, मकीनों - मकान में रहने वाले,

गज़ल

कितने ऐश से रहते होंगे, कितने इतराते होंगे,
जाने कैसे लोग वो होंगे, जो उसको भाते होंगे,

शाम हुए ख़ुशबाश यहाँ के, मेरे पास आ जाते हैं,
मेरे बुझने का नज़्ज़ारा, करने आ जाते होंगे,

वो जो न आनेवाला है ना !! उससे मुझको मतलब था,
आने वालों से क्या मतलब, आते हैं, आते होंगे,

उसकी याद की याद-ए-सबा में, और तो क्या होता होगा,
यूँ ही मेरे बाल हैं बिखरे, और बिखर जाते होंगे,

यारों ! कुछ तो ज़िक्र करो तुम, उसकी क़यामत बाहों का,
वो जो सिमटे होंगे उनमें, वो तो मर जाते होंगे,

मेरा साँस उखड़ते ही सब, बेन करेंगे, रोएंगे,
यानी, मेरे बाद भी यानी, साँस लिये जाते होंगे,

ख़ुशबाश - ख़ुश रहने वाले, नज़्ज़ारा - नज़ारा, याद-ए-सबा - हवा की याद में, बेन - मुर्दे की ख़ूबियाँ बयान करते हुए

ग़ज़ल

ईज़ादही की दाद जो पाता रहा हूँ मैं,
हर नाज-ए-आफ़रीं को सताता रहा हूँ मैं,

ऐ ख़ुशख़िराम ! पाँव के छाले तो गिन ज़रा,
तुझको कहाँ कहाँ न फिराता रहा हूँ मैं,

तुझको ख़बर नहीं कि तेरा हाथ देखकर,
अक्सर तेरा मज़ाक़ उड़ाता रहा हूँ मैं,

जिस दिन से ऐत्माद में आया तेरा शबाब,
उस दिन से तुझपे ज़ुल्म ही ढाता रहा हूँ मैं,

बेदार करके तेरे बदन की ख़ुदआगही,
तेरे बदन की उम्र घटाता रहा हूँ मैं,

इक सत्र भी कभी न लिखी, मैनें तेरे नाम,
पागल, तुझी को याद भी आता रहा हूँ मैं,

शायद मुझे किसी से मुहब्बत नहीं हुई,
लेकिन यक़ीन सबको दिलाता रहा हूँ मैं,

ईज़ादही - दुख, ख़ुशख़िराम - जिसके चलने का तरीक़ा अच्छा हो, ऐत्माद - विश्वास, बेदार करके - जगा के, ख़ुदआगही - ख़ुद की पहचान, सत्र - पंक्ति,

इक हुस्न-ए-बेमिसाल की तम्सील के लिए,
परछाईयों पे रंग गिराता रहा हूँ मैं,

अपना मिसालिया मुझे अब तक न मिल सका,
ज़र्रों को आफताब बनाता रहा हूँ मैं,

क्या मिल गया ज़मीर-ए-हुनर बेचकर मुझे,
इतना कि, सिर्फ़ काम चलाता रहा हूँ मैं,

कल दोपहर अजीब सी इक बेदिली रही,
बस तीलियाँ जला के बुझाता रहा हूँ मैं,

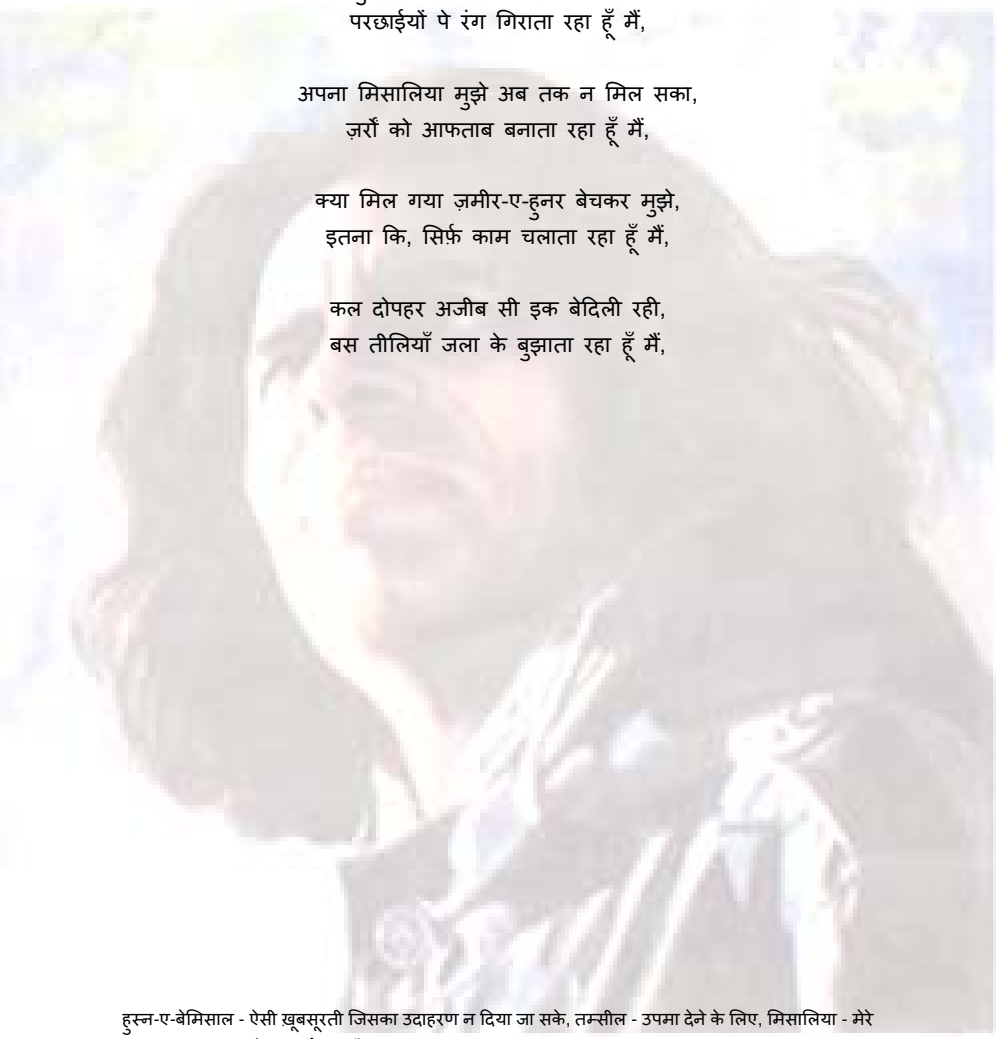

हुस्न-ए-बेमिसाल - ऐसी ख़ूबसूरती जिसका उदाहरण न दिया जा सके, तम्सील - उपमा देने के लिए, मिसालिया - मेरे जैसा, ज़र्रों - कणों, आफताब - सूरज, ज़मीर-ए-हुनर - कला का आत्मसम्मान,

ग़ज़ल

जी ही जी में वो जल रही होगी,
चाँदनी में टहल रही होगी,

चाँद ने तान ली है चादर-ए-अब्र,
अब वो कपड़े बदल रही होगी,

सो गयी होगी वो शफ़क़अँदाम,
सब्ज़ कंदील जल रही होगी,

सुर्ख़ और सब्ज़ वादियों की तरफ़,
वो मेरे साथ चल रही होगी,

चढ़ते चढ़ते किसी पहाड़ी पर,
अब वो करवट बदल रही होगी,

पेड़ की छाल से रगड़ खाकर,
वो तने से फिसल रही होगी,

नीलगूं झील नाफ़ तक पहने,
सन्दलीं जिस्म मल रही होगी,

होके वो ख़्वाब-ए-ऐश से बेदार,
कितनी ही देर शल रही होगी,

चादर-ए-अब्र - बादल की चादर, शफक़अँदाम - शाम या सुबह की लालिमा जैसे बदन वाली, सब्ज़ - हरी, कंदील - लालटेन, सुर्ख़ - लाल, नीलगूं - नीला रंग, नाफ़ - नाभि, सन्दलीं - चंदन, ख़्वाब-ए-ऐश - आराम देने वाला ख़्वाब, बेदार - जागना, शल – थकना,

ग़ज़ल

ख़ूब है शौक़ का ये पहलू भी,
मैं भी बर्बाद हो गया, तू भी,

हुस्न-ए-मग़मूम तम्किनत में तेरी,
फ़र्क़ आया न यक सर-ए-मू भी,

ये न सोचा था, ज़ेर-ए-साया-ए-ज़ुल्फ,
कि बिछड़ जाएगी ये ख़ुशबू भी,

हुस्न कहता था, छेड़ने वाले,
छेड़ना ही तू बस नहीं, छू भी,

हाय वो उसका मौजखेज़ बदन,
मैं तो प्यासा रहा लब-ए-जू भी,

याद आते हैं मोजिज़े अपने,
और उसके बदन का जादू भी,

यासमीं ! उसकी ख़ास महरम-ए-राज़,
याद आया करेगी अब तू भी,

शौक़ - इच्छा, पहलू - सिरा, हुस्न-ए-मग़मूम - परेशान हुस्न, तम्किनत में तेरी - ठाट बाट, यक सर-ए-मू - एक बाल के बराबर, ज़ेर-ए-साया-ए-ज़ुल्फ - बालों के साये के नीचे, मौजखेज़ - मौज की तरह लहराने वाला बदन, लब-ए-जू - नदी के किनारे, मोजिज़े - चमत्कार, यासमीं - चमेली, महरम-ए-राज़ - राज़ जानने वाला दोस्त,

याद से उसकी है, मेरा परहेज़,
ऐ सबा, अब न अइयो तू भी,

हैं यही "जौन एलिया" जो कभी,
सख़्त मग़रूर भी थे, बदख़ू भी,

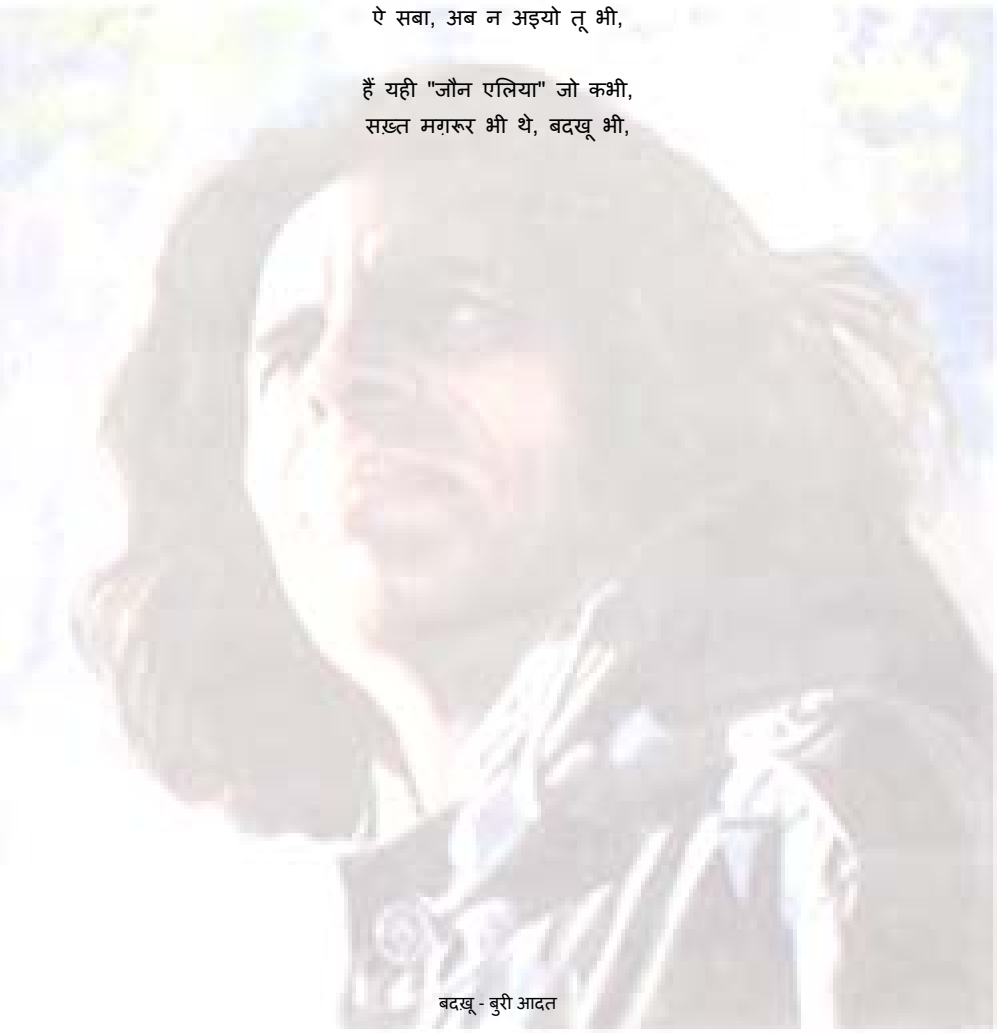

बदख़ू - बुरी आदत

गज़ल

बेदिली, क्या यूँ ही दिन गुज़र जाएँगे,
सिर्फ़ ज़िंदा रहे हम तो मर जाएँगे,

रक़्स है रंग पर, रंग हमरक़्स हैं,
सब बिछड़ जाएँगे, सब बिखर जाएँगे,

ये ख़राबातियान-ए-ख़िरदबाख्ता,
सुबह होते ही सब काम पर जाएँगे,

कितनी दिलकश हो तुम, कितना दिलजू हूँ मैं,
क्या सितम है कि हम लोग मर जाएँगे,

है ग़नीमत कि असरार-ए-हस्ती से हम,
बेख़बर आए हैं, बेख़बर जाएँगे,

दो आदमियों के लिये लोग का लफ्ज़ इस्तेमाल करना, कतन जाइz नहीं, अगर आप चाहें तो पहला मिसरा इस तरह पढ़ें,
"कितने दिलकश हो तुम, कितने दिलजो हैं हम"

बेदिली - उदासी, रक़्स - नाच, हमरक़्स - एक साथ नाचना, ये ये ख़राबातियान-ए-ख़िरदबाख्ता - ये शराब पीने वाले अक्ल से हारे हुए लोग, दिलजू - सुंदर, ग़नीमत - ठीक है, असरार - राज़,

ग़ज़ल

तेरा ज़ियाँ रहा हूँ मैं, अपना ज़ियाँ रहूँगा मैं,
तल्ख़ है मेरी ज़िंदगी, तल्खज़बां रहूँगा मैं,

तेरे हुज़ूर, तुझसे दूर, जलती रहेगी ज़िंदगी,
शोलाबजां रहा हूँ मैं, शोलाबजां रहूँगा मैं,

तुझको तबाह कर गये, तेरी वफ़ा के वलवले,
ये मेरा ग़म है, मेरा ग़म, इसमें तपां रहूँगा मैं,

हैफ़, नहीं है देखभाल मेरी, नसीब में तेरे,
यानी मता-ए-बर्दा-ए-कमनजरां रहूँगा मैं,

जाज़ की धुन उदास है, दिल भी बहुत उदास है,
जाने कहाँ बसेगी तू, जाने कहाँ रहूँगा मैं,

हम हैं जुदा जुदा मगर, फ़न की बिसात-ए-रंग पर,
रक़सकिनां रहेगी तू, ज़मज़माख्वाँ रहूँगा मैं,

ज़ियाँ - नुकसान, तल्ख - कड़वा, तल्खज़बां - कड़वा बोलने वाला, हुज़ूर - सभा, शोलाबजां - अंदर ही अंदर जलना, वलवले - उमंगें, तपां - जलता, हैफ़ - अफ़सोस, मता - पूंजी, बर्दा - दास , कमनज़रां - आँख वाला अँधा, जाज़ - एक प्रकार का विदेशी संगीत, फ़न - कला, बिसात-ए-रंग - रंग की शतरंज, रक़सकिनां - नाचने वाली, ज़मज़माख्वाँ - गीत गाने वाला,

ग़ज़ल

हार जा ऐ निगाह-ए-नाकारा,
गुम उफ़क़ में हुआ है तैयारा,

हाय वो महमिल-ए-फ़ज़ा, परवाज़
चाँद को ले गया है सैयारा,

सुबह उसको, विदा करके मैं,
निस्फशब तक फिरा हूँ आवारा,

साँस क्या हैं, कि मेरे सीने में,
हर नफ़स चल रहा है इक आरा,

कुछ कहा भी जो उससे हाल तो कब,
कुछ तलाफ़ी रही न कुफ़्फ़ारा,

क्या था आख़िर वो मेरा इश्क़-ए-अजीब,
इश्क़ का ख़ूं कि इश्क़-ए-ख़ूंख्वारा,

नाज़ को जिसने अपना हक़ समझा,
क्या तुम्हें याद है वो बेचारा,

निगाह-ए-नाकारा - देखने में असफल, उफ़क़ - क्षितिज, तैयारा - हवाई जहाज़, महमिल-ए-फ़ज़ा - वातावरण की पालकी, परवाज़ - उड़ाकर, सैयारा - घूमने वाला तारा, निस्फशब - आधी रात, आरा - लकड़ी काटने का औज़ार, तलाफ़ी - नुक़सान की भरपाई, कुफ़्फ़ारा - पाप का फल, इश्क़-ए-अजीब - अजीब प्यार, ख़ूं - खून, इश्क़-ए-ख़ूंख्वारा - खून पीने वाला इश्क़, नाज़ - नखरे उठाने को,

चाँद है आज कुछ निढाल निढाल,
क्या बहुत थक गया है हरकारा,

इस मुसलसल शब-ए-जुदाई में,
खून थूका गया है, महपारा,

हो गई है मेरे सफ़र की सहर,
कूच का बज रहा है नक़्क़रा,

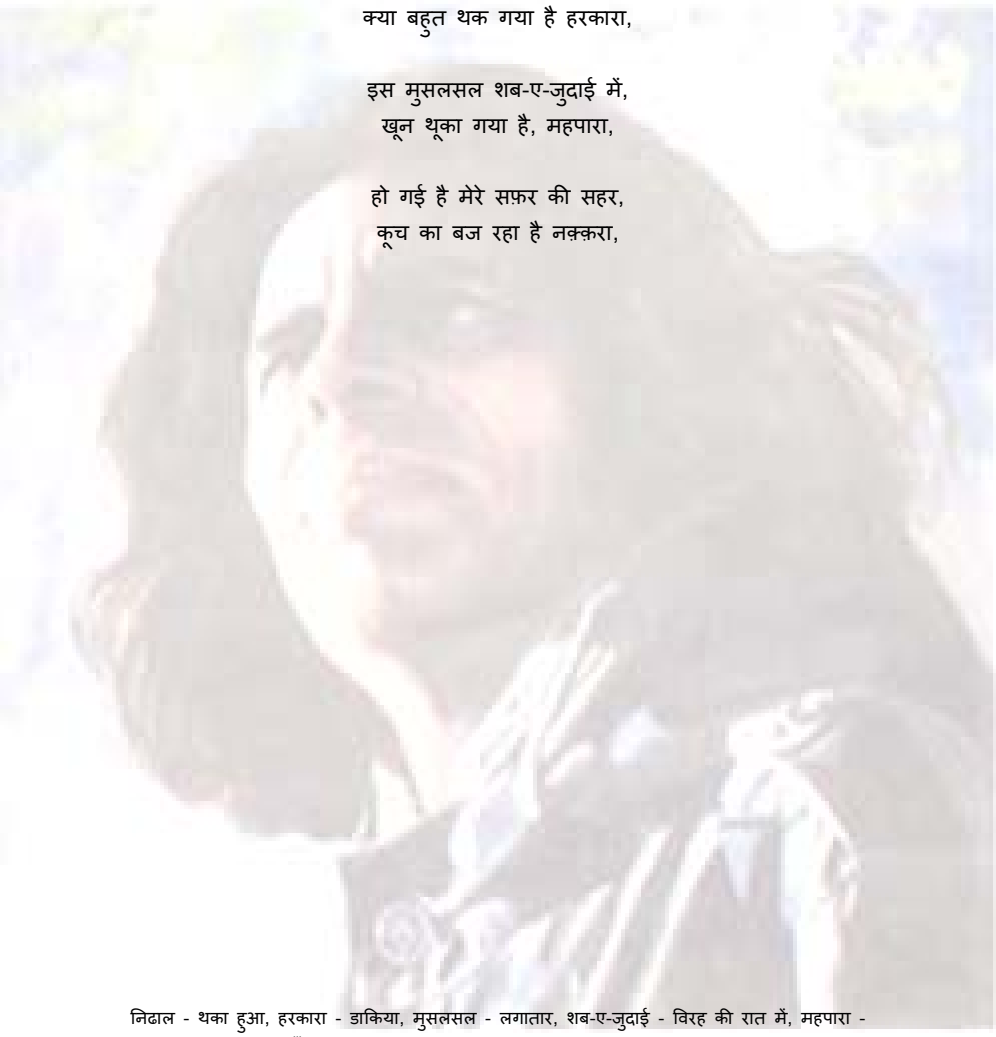

निढाल - थका हुआ, हरकारा - डाकिया, मुसलसल - लगातार, शब-ए-जुदाई - विरह की रात में, महपारा - चाँद का टुकड़ा, सहर - सुबह, कूच - जाना, नक़्क़रा - नगाड़ा,

ग़ज़ल

हाल ये है की ख़्वाहिश-ए-पुर्सिश-ए-हाल भी नहीं,
उसका ख़याल भी नहीं, अपना ख़याल भी नहीं,

ऐ शजर-ए-हयात-ए-शौक़, ऐसी ख़िज़ाँ रसीदगी !,
पोशिश-ए-बर्ग-ए-गुल तो क्या, जिस्म पे छाल भी नहीं,

मुझमें वो शख़्स हो चुका, जिसका कोई हिसाब था,
सूद है क्या, ज़ियाँ है क्या, इसका सवाल भी नहीं,

मस्त हैं अपने हाल में, दिलज़दगान-ओ-दिलबरां,
सुबह सलाम तो कुजा, बहस-ओ-जिदाल भी नहीं,

तू मेरा हौसला तो देख, दाद तो दे कि अब मुझे,
शौक़-ए-कमाल भी नहीं, ख़ौफ़-ए-ज़वाल भी नहीं,

ख़ेमागह-ए-निगाह को लूट लिया गया है क्या,
आज उफक़ के दोश पर, गर्द की शॉल भी नहीं,

उफ़ ये फ़ज़ा-ए-एहतियात ता, कहीं उड़ न जायें हम,
बाद-ए-जुनूब भी नहीं, बाद-ए-शुमाल भी नहीं,

इस मिसरे में "पोसिश" शब्द प्यारे भाई अज़हर अब्बास हाशमी की देन है

ख़्वाहिश-ए-पुर्सिश-ए-हाल - इच्छाओं के हाल चाल पूछने वाला, शजर-ए-हयात-ए-शौक़ - इच्छाओं की ज़िंदगी का पेड़, ख़िज़ाँ रसीदगी - पतझड़ का मिलना, पोशिश-ए-बर्ग-ए-गुल - फूल की पत्ती का पहनावा, सूद - फ़ायदा ज़ियाँ - नुक़सान, दिलज़दगान-ओ-दिलबरां - चोट खाया हुआ दिल और प्रेमिका, कुजा - कहाँ, बहस-ओ-जदाल - बहस और लड़ाई, शौक़-ए-कमाल - कमाल करने का शौक़, ख़ौफ़-ए-ज़वाल - पतन का डर, ख़ेमागह-ए-निगाह को - निगाह के डेरे को, उफक़ - क्षितिज, दोश - कंधे, गर्द - धूल, फ़ज़ा-ए-एहतियात - सावधानी के वातावरण, ता - तक, बाद-ए-जुनूब - दक्षिण की हवा, बाद-ए-शुमाल - उत्तर की हवा,

वजह-ए-मुआश-ए-बेदिलां, यास है अब मगर कहाँ,
उसके वुरूद का गुमां, फ़र्ज़-ए-मुहाल भी नहीं,

ग़ारत-ए-रोज़-ओ-शब तो देख, वक़्त का ये ग़ज़ब तो देख,
कल तो निढाल भी था मैं, आज निढाल भी नहीं,

मेरे ज़मान-ओ-ज़ात का, है ये मुआमला कि अब,
सुबह-ए-फिराक़ भी नहीं, शाम-ए-विसाल भी नहीं,

पहले हमारे ज़हन में हुस्न की इक मिसाल थी,
अब तो हमारे ज़हन में, कोई मिसाल भी नहीं,

मैं भी बहुत अजीब हूँ, इतना अजीब हूँ कि बस,
खुद को तबाह कर लिया, और मलाल भी नहीं,

वजह-ए-मुआश-ए-बेदिलां - रोज़ी रोटी की निराशा की वजह, यास - निराशा, वुरूद - उतरना, गुमां शंका, फ़र्ज़-ए-मुहाल भी नहीं - फ़र्ज़ को आडया करना मुश्किल भी नहीं है, ग़ारत-ए-रोज़-ओ-शब - लुटते हुए दिन रात, निढाल - थका हुआ,ज़मान-ओ-ज़ात - व्यक्तित्वा का ज़माना, मुआमला - मामला, सुबह-ए-फिराक़ - जुदाई की सुबह, शाम-ए-विसाल - मिलन की शाम, ज़हन - दिमाग़, मलाल - दुख,

ग़ज़ल

सर ही अब फोड़िये नदामत में,
नींद आने लगी है फुरक़त में,

हैं दलीलें तेरे ख़िलाफ़ मगर,
सोचता हूँ तेरी हिमायत में,

रूह ने इश्क़ का फ़रेब दिया,
जिस्म को जिस्म की अदालत में,

अब फक़त आदतों की वर्ज़िश है,
रूह शामिल नहीं शिकायत में,

इश्क़ को दरमियाँ न लाओ की मैं,
चीखता हूँ बदन की उसरत में,

ये कुछ आसान तो नहीं कि हम,
रूठते अब भी हैं मुरव्वत में,

वो जो तामीर होने वाली थी,
लग गयी आग उस इमारत में,

नदामत - शर्मिंदगी, फुरक़त - जुदाई, हिमायत - तरफ़दारी में, फक़त - सिर्फ़, वर्ज़िश - कसरत, दरमियाँ - बीच में, उसरत - परेशानी, मुरव्वत - आदर, तामीर - निर्माण,

अपने हुजरे का क्या बयाँ कि यहाँ,
ख़ून थूका गया शरारत में,

वो ख़ला है कि सोचता हूँ मैं,
उससे क्या गुफ्तगू हो ख़िल्वत में,

ज़िंदगी किस तरह बसर होगी,
दिल नहीं लग रहा मुहब्बत में,

<u>दो गज़ला</u>

हासिल-ए-कुन है ये जहान-ए-ख़राब,
यही मुमकिन था इतनी उजलत में,

फिर बनाया ख़ुदा ने आदम को,
अपनी सूरत पे ऐसी सूरत में,

और फिर आदमी ने ग़ौर किया,
छिपकली की लतीफ़ सन`अत में,

ऐ ख़ुदा (जो कहीं नहीं मौजूद)
क्या लिखा है हमारी क़िस्मत में,

हुजरे - कुटिया, बयाँ - बयान, ख़ला - ख़ाली जगह, ख़िल्वत - अकेलापन, हासिल-ए-कुन है ये जहान-ए-ख़राब - ख़ुदा ने जब दुनिया बनाने के लिए ये लफ्ज़ कहा, (कुन), उजलत - जल्दबाज़ी, आदम - दुनिया का पहला इंसान, सूरत - हाल में, लतीफ़ - नाज़ुक, सन`अत - कारीगरी,

गज़ल

नया इक रिश्ता पैदा क्यूँ करें हम,
बिछड़ना है तो झगड़ा क्यूँ करें हम,

ख़ामोशी से अदा हो रस्म-ए-दूरी,
कोई हंगामा बरपा क्यूँ करें हम,

ये काफ़ी है कि हम दुश्मन नहीं हैं,
वफ़ादारी का दावा क्यूँ करें हम,

वफ़ा, इख्लास, क़ुर्बानी, मुहब्बत,
अब इन लफ़्ज़ों का पीछा क्यूँ करें हम,

सुना दें अस्मत-ए-मरियम का क़िस्सा ?
पर अब इस बाब को वा क्यूँ करें हम,

ज़ुलेख़ा-ए-अज़ीज़ाँ बात ये है,
भला घाटे का सौदा क्यूँ करें हम,

हमारी ही तमन्ना क्यूँ करो तुम,
तुम्हारी ही तमन्ना क्यूँ करें हम,

रस्म-ए-दूरी - डोर होने की रस्म, इख्लास - मेल मिलाप, अस्मत-ए-मरियम - मरियम की इज़्ज़त, बाब - दरवाज़ा, वा - खुला हुआ, ज़ुलेख़ा-ए-अज़ीज़ाँ - प्यारी ज़ुलेखा, (ज़ुलेखा) - मिस्र के एक अमीर आदमी की बीवी का नाम

किया था एहेद जब लम्हों में हमने,
तो सारी उम्र ईफा क्यूँ करें हम,

उठाकर क्यूँ न फेंकें सारी चीज़ें,
फ़क़त कमरों में टहला क्यूँ करें हम,

जो इक नस्ल-ए-फ़रोमाया को पहुँचे,
वो सरमाया इकट्ठा क्यूँ करें हम,

नहीं दुनिया को जब परवाह हमारी,
तो फिर दुनिया की परवाह क्यूँ करें हम,

बरहना हैं सर-ए-बाज़ार तो क्या ?
भला अंधों से परदा क्यूँ करें हम,

हैं बाशिंदे इसी बस्ती के हम भी,
सो ख़ुद पर भी भरोसा क्यूँ करें हम,

चबा लें क्यूँ न ख़ुद ही अपना ढाँचा,
तुम्हें रातिब मुहैया क्यूँ करें हम,

पड़ी रहने दो इंसानों की लाशें,
ज़मीं का बोझ हल्का क्यूँ करें हम,

ये बस्ती है मुसलमानों की बस्ती,
यहाँ कार-ए-मसीहा क्यूँ करें हम,

एहेद - वादा, ईफा - पूरा, फ़क़त - सिर्फ़, नस्ल-ए-फ़रोमाया - नालायक, सरमाया - पूंजी, बरहना - नग्न, सर-ए-बाज़ार - बीच बाज़ार में, बाशिंदे - रहवासी, रातिब - ख़ुराक, मुहैया - उपलब्ध, कार-ए-मसीहा - इलाज करने का काम,

ग़ज़ल

सीना दहक रहा हो तो क्या चुप रहे कोई,
क्यूँ चीख़ चीख़ कर न गला छील ले कोई,

साबित हुआ सुकून-ए-दिल-ओ-जाँ कहीं नहीं,
रिश्तों में ढूंढता है तो, ढूँढा करे कोई,

तर्क-ए-ताल्लुक़ात कोई मसअला नहीं,
ये तो वो रास्ता है कि बस चल पड़े कोई,

दीवार जानता था जिसे मैं धूल थी,
अब मुझको ऐत्माद की दावत न दे कोई,

मैं ख़ुद ये चाहता हूँ कि हालात हों ख़राब,
मेरे ख़िलाफ़ ज़हर उगलता फिरे कोई,

ऐ शख़्स अब तो मुझको सभी कुछ क़ुबूल है,
ये भी क़ुबूल है कि तुझे छीन ले कोई,

हाँ ! ठीक है ! मैं अपनी अना का मरीज़ हूँ,
आख़िर मेरे मिज़ाज में क्यूँ दख्ल दे कोई,

इक शख़्स कर रहा है अभी तक वफ़ा का ज़िक्र,
काश उस ज़बांदराज़ का मुँह नोच ले कोई,

सुकून-ए-दिल-ओ-जाँ - दिल और जान का चैन, तर्क-ए-ताल्लुक़ात - रिश्ता तोड़ना, मसअला - मुद्दा, ऐत्माद - विश्वास, अना - मैं, मिज़ाज - स्वभाव, ज़बांदराज़ - लंबी ज़बान वाला (बहुत ज़बान चलाने वाला)

ग़ज़ल

जाने यहाँ हूँ, मैं, या मैं,
अपना गुमां हूँ, मैं, या मैं,

मेरी दूई है मेरा ज़ियाँ,
अपना ज़ियाँ हूँ, मैं, या मैं,

जाने कौन था वो, या वो,
जाने कहाँ हूँ, मैं, या मैं,

हर दम अपनी ज़द पर हूँ,
जा-ए-अमाँ हूँ, मैं, या मैं,

मैं जो हूँ इक हैरत का समाँ,
क्या वो समाँ हूँ, मैं, या मैं,

कौन है मुझमें शोलाबजां,
शोलाबजां हूँ, मैं या मैं,

आग, मेरे होने की आग,
तेरा धुआँ हूँ, मैं, या मैं,

गुमां - शंका, दूई - दो समझना, ज़ियाँ - नुक़सान, ज़द - निशाने पर, जा-ए-अमाँ - पनाह लेने की जगह,
हैरत - आश्चर्य, समाँ - माहौल, शोलाबजां - अंदर ही अंदर जलने वाला,

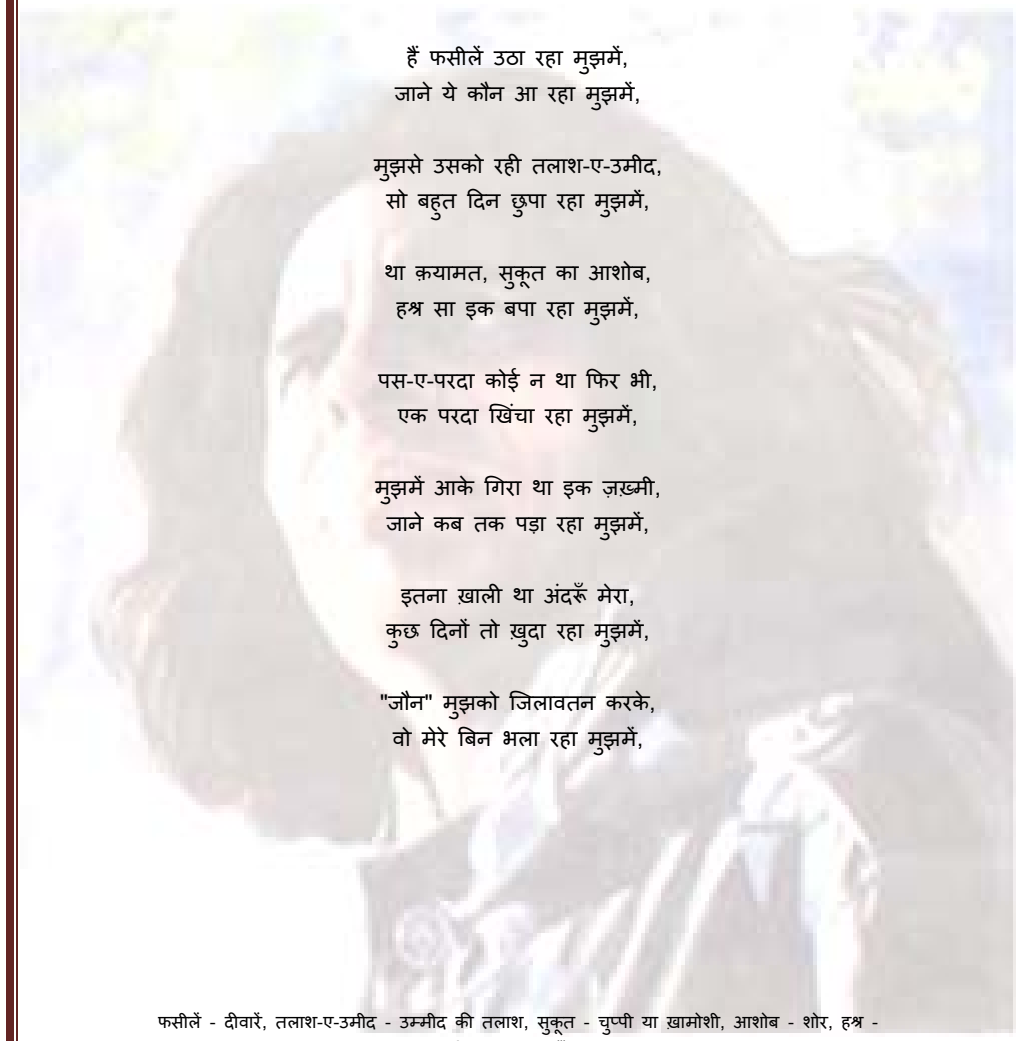

ग़ज़ल

हैं फसीलें उठा रहा मुझमें,
जाने ये कौन आ रहा मुझमें,

मुझसे उसको रही तलाश-ए-उमीद,
सो बहुत दिन छुपा रहा मुझमें,

था क़यामत, सुकूत का आशोब,
हश्र सा इक बपा रहा मुझमें,

पस-ए-परदा कोई न था फिर भी,
एक परदा खिंचा रहा मुझमें,

मुझमें आके गिरा था इक ज़ख़्मी,
जाने कब तक पड़ा रहा मुझमें,

इतना ख़ाली था अंदरूँ मेरा,
कुछ दिनों तो ख़ुदा रहा मुझमें,

"जौन" मुझको जिलावतन करके,
वो मेरे बिन भला रहा मुझमें,

फसीलें - दीवारें, तलाश-ए-उमीद - उम्मीद की तलाश, सुकूत - चुप्पी या ख़ामोशी, आशोब - शोर, हश्र - प्रलय, बपा - कायम, पस-ए-परदा - पर्दे के पीछे, अंदरूँ - अंदर का हिस्सा, जिलावतन - बेवतन

ग़ज़ल

तंगआग़ोश में आबाद करूँगा तुझको,
हूँ बहुत शाद, कि नाशाद करूँगा तुझको,

फ़िक्र-ए-ईजाद में गुम हूँ, मुझे ग़ाफिल न समझ,
अपने अंदाज़ पर ईजाद करूँगा तुझको,

नश्शा है राह की दूरी का, कि हमराह है तू,
जाने किस शहर में आबाद करूँगा तुझको,

मेरी बाहों में बहकने की सज़ा भी सुन ले,
अब बहुत देर से आज़ाद करूँगा तुझको.

मैं कि, रहता हूँ बसद नाज़गुरेज़ाँ तुझसे,
तू न होगा तो बहुत याद करूँगा तुझको,

तंगआग़ोश - बाहों में कस के, शाद - ख़ुश, नाशाद - दुखी, फ़िक्र-ए-ईजाद - अविष्कार करने की चिंता में,
ग़ाफिल - खोया हुआ, बसद नाज़गुरेज़ाँ - बहुत ज़्यादा रूठा हुआ,

गज़ल

किससे इज़हार-ए-मुद्दआ कीजे,
आप मिलते नहीं तो क्या कीजे,

हो न पाया ये फ़ैसला अब तक,
आप क्या कीजिये तो क्या कीजे,

आप थे जिसके चारागर, वो जवां,
सख़्त बीमार है दुआ कीजे,

एक ही फ़न तो हमने सीखा है,
जिससे मिलिए उसे ख़फा कीजे,

है तक़ाज़ा मेरी तबीयत का,
हर किसी को चराग़पा कीजे,

है तो बारे ये आलम-ए-असबाब,
बेसबब चीख़ने लगा कीजे,

आज हम क्या गिला करें उससे,
गिला-ए-तंगी-ए-क़बा कीजे,

किससे इज़हार-ए-मुद्दआ कीजे - लक्ष्य किसको बतायें, चारागर - चिकित्सक, फ़न - कला, तक़ाज़ा - इच्छा, चराग़पा - गुस्से में आपे से बाहर, बारे - आख़िरकार, आलम-ए-असबाब - कारणों की दुनिया, बेसबब - बिना कारण के, गीला-ए-तंगी-ए-क़बा - छोटी चादर का शिकवा,

नुत्क़ हैवान पर गिरां हैं अभी,
गुफ्तगू कम से कम किया कीजे,

हज़रत-ए-ज़ुल्फ-ए-ग़ालियाअफ्शां,
नाम अपना सबा सबा कीजे,

ज़िंदगी का अजब मुआमला है,
एक लम्हे में फ़ैसला कीजे,

मुझको आदत है रूठ जाने की,
आप मुझको मना लिया कीजे,

मिलते रहिये इसी तपाक के साथ,
बेवफ़ाई की इंतेहा कीजे,

कोहकन को है खुदकुशी ख़्वाहिश,
शाहबानो से इल्तिजा कीजे,

मुझसे कहती थीं वो शराब आँखें,
आप वो ज़हर मत पिया कीजे,

रंग हर रंग में है, दादतलब,
ख़ून थूकूं तो वाह वा कीजे,

नुत्क़ - बात, हैवान - जानवर, गिरां - भारी, हज़रत-ए-ज़ुल्फ-ए-ग़ालियाअफ्शां - बालों में लगाया जाने वाला सुगंधित सुनेहरा सिंदूर, सबा - हवा, तपाक - गर्मजोशी, इंतेहा - हद, कोहकन - फरहाद (एक प्रेमी जिसने अपनी प्रेमिका के लिये पहाड़ चीर के दूध की नदी निकाल दी थी), शाहबानो - राजा की बीवी, इल्तिजा - विनती, दादतलब - दाद पाने की इच्छा,

ग़ज़ल

गाहे गाहे बस अब यही हो क्या ?
तुमसे मिलकर बहुत ख़ुशी हो क्या ?

मिल रही हो बड़े तपाक के साथ
मुझको यकसर भुला चुकी हो क्या ?

याद हैं अब भी अपने ख़्वाब तुम्हें
मुझसे मिलकर उदास भी हो क्या ?

बस मुझे यूँ ही इक ख़याल आया
सोचती हो तो सोचती हो, क्या ?

अब मेरी कोई ज़िंदगी ही नहीं
अब भी तुम मेरी ज़िंदगी हो क्या ?

क्या कहा, इश्क़ जाविदानी है
आख़री बार मिल रही हो क्या ?

हाँ, फ़ज़ा याँ की सोई सोई सी है
तो बहुत तेज़ रोशनी हो क्या ?

गाहे गाहे - कभी कभी, तपाक - गर्मजोशी, यक्सर - पूरा, जाविदानी - अमर, फ़ज़ा - माहौल,

मेरे सब तंज़ बे-असर ही रहे
तुम बहुत दूर जा चुकी हो क्या ?

दिल में अब सोज़-ए-इंतेज़ार नहीं
शम्मअ-ए-उम्मीद, बुझ गयी हो क्या ?

इस समंदर पे तश्नाकाम हूँ मैं,
बान, तुम अब भी बह रही हो क्या ?

तंज़ - ताने, सोज़-ए-इंतेज़ार - इंतेज़ार की जलन, शम्मअ-ए-उम्मीद - उम्मीद का दिया, तश्नाकाम - प्यासा,
बान - अमरोहे की एक नदी का नाम,

ग़ज़ल

सरकार! अब जुनूँ की है, सरकार कुछ सुना ?
हैं बंद सारे शहर के बाज़ार, कुछ सुना ?

शहर-ए-क़लन्दराँ का हुआ है अजीब तौर,
सब हैं जहांपनाह से बेज़ार, कुछ सुना ?

मसरूफ़ कोई कातिब-ए-ग़ैबी है रोज़-ओ-शब,
क्या है भला नविश्ता-ए-दीवार ? कुछ सुना ?

आसार अब ये हैं कि गिरेबान-ए-शाह से,
उलझेंगे हाथ बरसर-ए-दरबार, कुछ सुना ?

एहल-ए-सितम से मारकाआरा है इक हुजूम,
जिसको नहीं मिला कोई सरदार, कुछ सुना ?

ख़ूनीं दिलान-ए-मरहला-ए-इम्तेहाँ ने आज,
क्या तम्किनत दिखाई सर-ए-दार कुछ सुना,

क्या लोग थे रंग बिछाते चले गये,
रफ़्तार थी कि ख़ून की रफ़्तार ? कुछ सुना ?

जुनूँ - पागलपन, शहर-ए-क़लन्दराँ - क़लन्दरों का शहर, तौर - तरीक़ा, बेज़ार - वंचित, मसरूफ़ - व्यस्त, कातिब-ए-ग़ैबी - भाग्य विधाता, रोज़-ओ-शब - दिन रात, नविश्ता-ए-दीवार - दीवार पर लिखा हुआ, गिरेबान-ए-शाह - राजा के गिरेबान से, बरसर-ए-दरबार - बभारे दरबार में, एहल-ए-सितम - सितम करने वाले, मारकाआरा - युद्ध करने के लिए तैयार होना, हुजूम - भीड़, ख़ूनीं दिलान-ए-मरहला-ए-इम्तेहाँ ने - प्यार की मंज़िल का इम्तिहान देने वाले ने, तम्किनत - ठाट बाट, सर-ए-दार - फाँसी के तख़्त पर,

ग़ज़ल

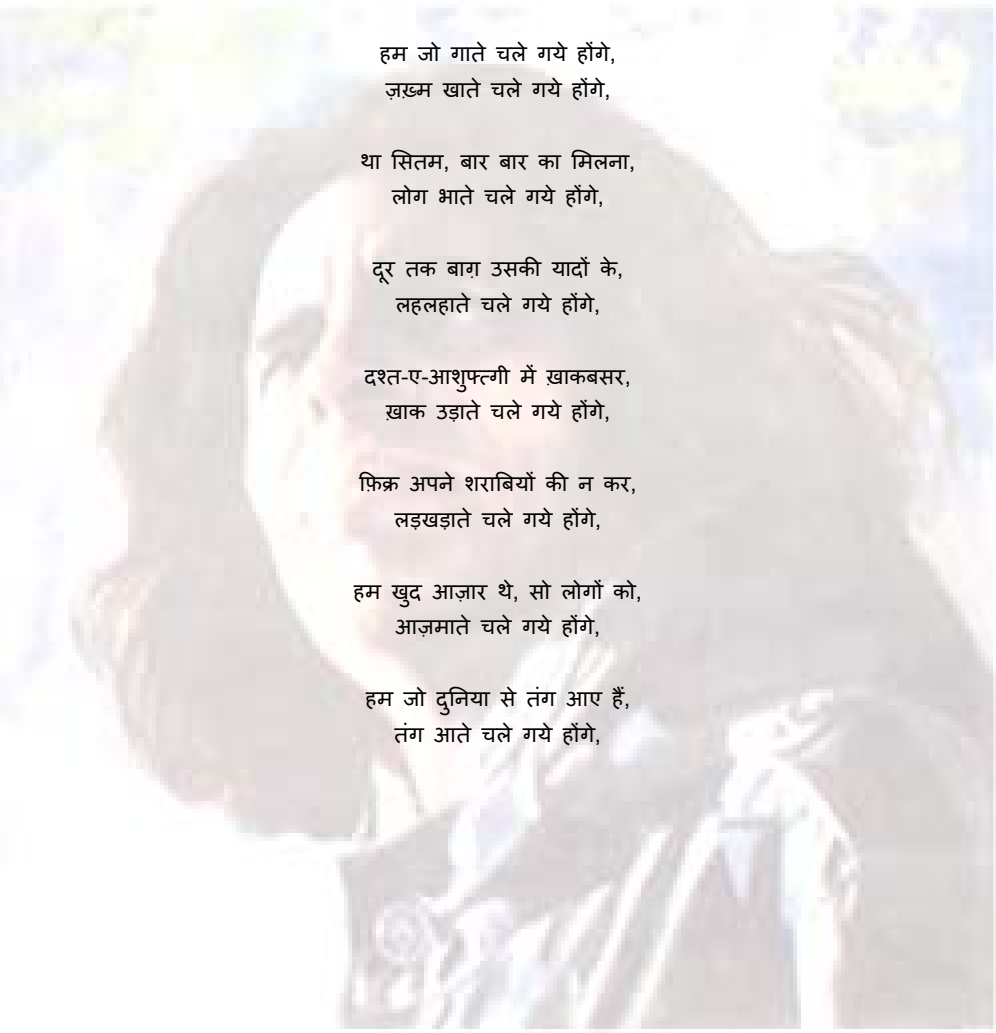

हम जो गाते चले गये होंगे,
ज़ख़्म खाते चले गये होंगे,

था सितम, बार बार का मिलना,
लोग भाते चले गये होंगे,

दूर तक बाग़ उसकी यादों के,
लहलहाते चले गये होंगे,

दश्त-ए-आशुफ्त्गी में ख़ाकबसर,
ख़ाक उड़ाते चले गये होंगे,

फ़िक्र अपने शराबियों की न कर,
लड़खड़ाते चले गये होंगे,

हम ख़ुद आज़ार थे, सो लोगों को,
आज़माते चले गये होंगे,

हम जो दुनिया से तंग आए हैं,
तंग आते चले गये होंगे,

दश्त-ए-आशुफ्त्गी - पागलपन का जंगल, ख़ाकबसर - परेशान लोग, ख़ाक - मिट्टी, आज़ार - बीमार

गज़ल

मेरा ये मशविरा है, इल्तिजा नईं,
तू मेरे पास से इस वक़्त जा नईं,

कोई दम चैन पड़ जाता मुझे भी,
मगर मैं खुद से दम भर को जुदा नईं,

मैं खुद से कुछ भी क्यूँ मनवा रहा हूँ,
मैं याँ अपनी तरफ भेजा हुआ नईं,

पता है जाने किसका, नाम मेरा,
मेरा कोई पता मेरा पता नईं,

सफ़र दरपेश है इक बेमसाफत,
मसाफत हो तो कोई फासला नईं,

ज़रा भी मुझसे तुम ग़ाफिल न रहियो,
मैं बेहोशी में भी बेमाजरा नईं,

दुख उसके हिज्र का अब क्या बताऊं,
कि जिसके वस्ल भी तो बेगिला नईं,

मशविरा - राय, इल्तिजा - विनती, दरपेश - सामने, बेमसाफत - सफ़र न होना, मसाफत - सफ़र का बहुवचन, ग़ाफिल - खोये हुए, बेमाजरा - बेहोश, हिज्र - विरह या जुदाई, वस्ल - मिलन, बेगिला - बिना शिकायत के,

हैं उस क़ामत सिवा भी कितने क़ामत,
पर इक हालत है, जो उसके सिवा नईं,

मुहब्बत कुछ न थी, जुज़ बदहवासी,
कि वो बंद-ए-क़बा हमसे खुला नईं,

वो ख़ुश्बू मुझसे बिछड़ी थी ये कहकर,
मनाना सबको पर अब रूठना नईं,

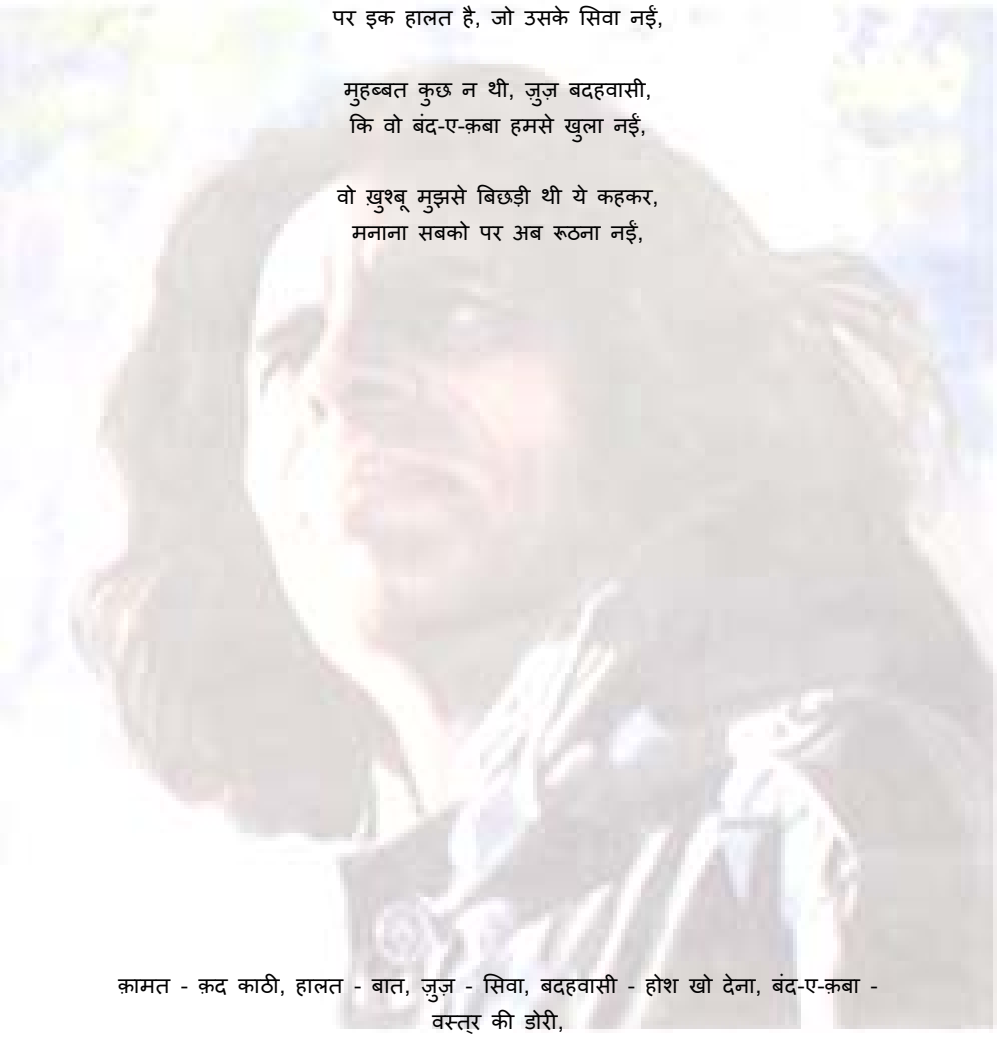

क़ामत - क़द काठी, हालत - बात, जुज़ - सिवा, बदहवासी - होश खो देना, बंद-ए-क़बा - वस्त्र की डोरी,

ग़ज़ल

यहाँ मानी का बेसूरत सिला नई,
अजब कुछ मैनें सोचा है, लिखा नई,

हैं सब इक दूसरे की जूस्तजू में,
मगर कोई किसी को भी मिला नई,

हमारा एक ही तो मुद्दआ था,
हमारा और कोई मुद्दआ नई,

कभी ख़ुद से मुकर जाने में क्या है,
मैं दस्तावेज़ पे लिख्खा हुआ नई,

यही सब कुछ था, जिस दम वो यहाँ था,
चले जाने पे उसके, जाने क्या नई,

बिछड़ के जान तेरे आस्ताँ से,
लगाया जी बहुत पर जी लगा नई,

जुदाई अपनी बेरूदाद सी थी,
कि मैं रोया न था, और फिर हंसा नई,

मानी - अर्थ, बेसूरत - बिना कारण, मुद्दआ - लक्ष्य, दम - घड़ी, आस्ताँ - चौखट, बेरूदाद - जो कहानी जैसी न हो,

वो हिज्र-ओ-वस्ल था, सब ख़्वाब दर ख़्वाब,
वो सारा माजरा जो था, वो था नई,

बड़ा बेआसरापन है, सो चुप रह,
नहीं है ये कोई मुज़दा ख़ुदा नई,

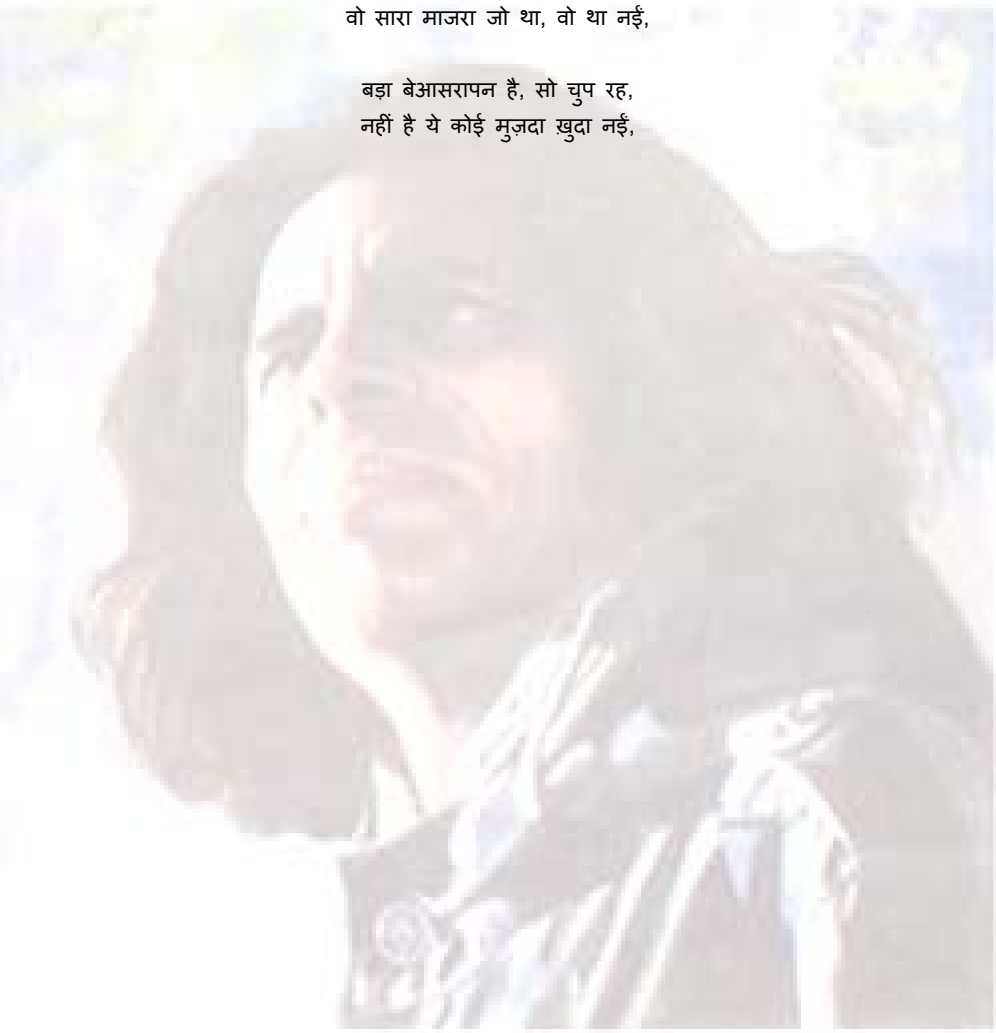

हिज्र-ओ-वस्ल - जुदाई और मिलन, ख़्वाब दर ख़्वाब - वहम, माजरा - तमाशा, मुज़दा - ख़ुशखबरी,

" क़तआत "

1

अब तो जिस तौर भी गुज़र जाए,
कोई इसरार ज़िंदगी से नहीं,
उसके ग़म में किया सभी को मुआफ़,
कोई शिकवा भी अब किसी से नहीं,

2

है ज़ुरूरी बहुत तवज्जा की,
याद आओ तो कम न याद आओ,
चाहिए मुझको जान-ओ-दिल का सुकूँ,
मेरे हक़ में अज़ाब बन जाओ,

3

मर चुका है दिल, मगर ज़िंदा हूँ मैं,
ज़हर जैसी कुछ दवायें चाहिए,
पूछती हैं आप, आप अच्छे तो हैं ?
जी मैं अच्छा हूँ, दुआएँ चाहिए,

4

चारासाज़ों की चारासाज़ी से,
दर्द बदनाम तो नहीं होगा,
हाँ दवा दो, मगर ये बतला दो,
मुझको आराम तो नहीं होगा ?

तौर - ढंग, इसरार - ज़िद, तवज्जा - ध्यान, जान-ओ-दिल का सुकूँ - दिल और जान का चैन, अज़ाब - मुसीबत, चारासाज़ों - चिकित्सकों, चारासाज़ी - इलाज,

5

वक़्त के रास्ते से हम तुम को,
एक ही साथ तो गुज़रना था,
हम तो जी भी नहीं सके इक साथ,
हमको तो एक साथ मारना था,

6

दिल में जिनका निशान भी न रहा,
क्यूँ न चेहरों पे अब वो रंग खिलें,
अब तो खाली है रूह जज़बों से,
अब भी क्या हम तपाक से न मिलें,

7

कोई ताल्लुक़ ही न रहे,
जबके सबब भी बाक़ी हो,
क्या मैं अब भी ज़िंदा हूँ,
क्या तुम अब भी बाक़ी हो,

8

हालत ये है कि गर्दिश-ए-हालात के सबब,
दिल भी मेरा तबाह है, हिम्मत भी पस्त है,
तुम सोचती बहुत हो तो फिर ये भी सोचना,
मेरी शिकस्त अस्ल में किसकी शिकस्त है,

तपाक - गर्मजोशी से मिलना, सबब - कारण, गर्दिश-ए-हालात - हालात की मुश्किलें,
पस्त - हारना, शिकस्त - हार,

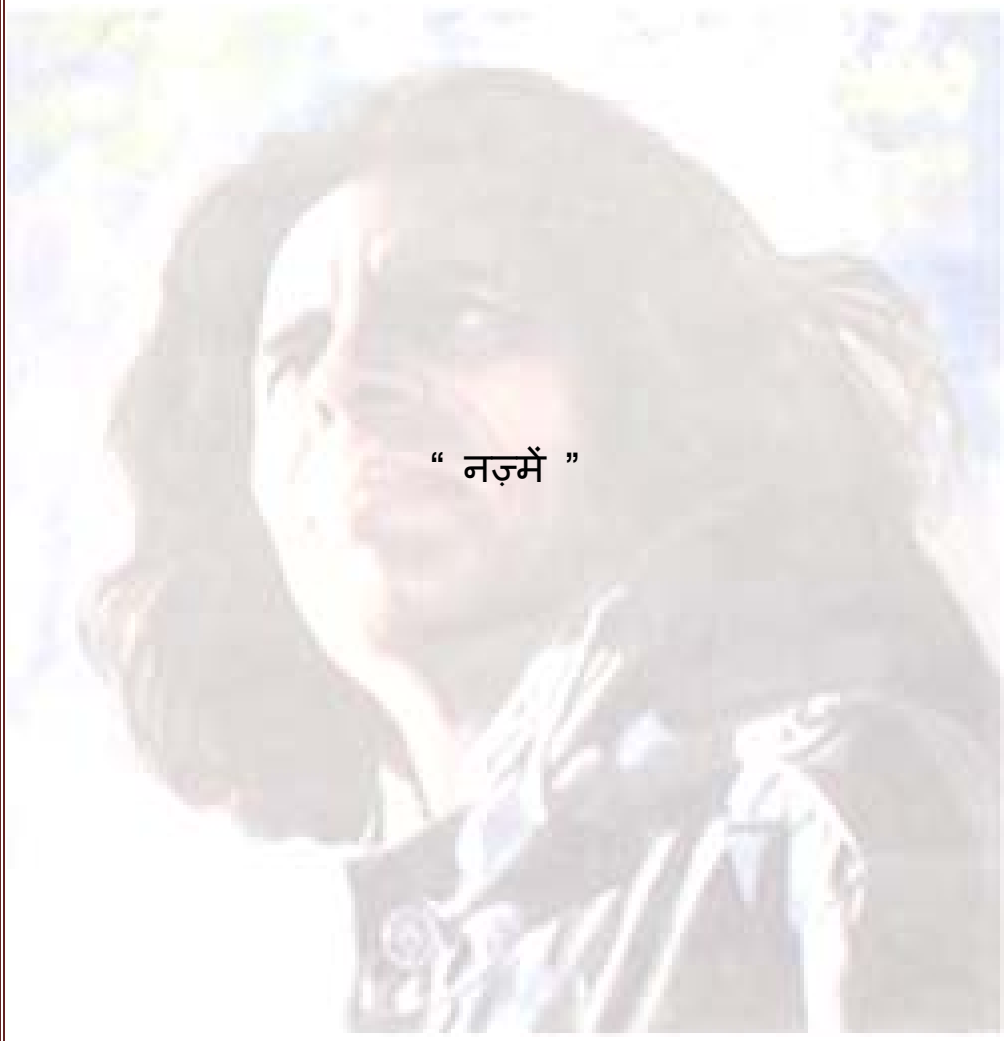

“ नज़्में ”

ता कुजा

कहाँ है सिम्त-ए-गुमाँ, वो जहान-ए-जाँपरवर
कि जिसकी शषजहती का फुसून-ए-चश्मकुशा,
दिलों में फैलता है, मंज़िलों में फैलता है,
जहाँ सुखन में समा`अत, नज़र ही मंज़र है,
जहाँ हरूफ, लबों से कलाम करते हैं,
जहाँ वजूद के माना, ख़िराम करते हैं,

सिम्त-ए-गुमाँ - शंका की तरफ, जहान-ए-जाँपरवर - दुनिया की आत्मा को संभालने वाला, शषजहती - छः दिशाएं, फुसून - जादू, चश्मकुशा - खुली हुई आँखें, सुखन - बात, समा`अत - सुनने की शक्ति, हरूफ - वर्ण का बहुवचन, कलाम - बात चीत, वजूद - अस्तित्व, माना - अर्थ, ख़िराम - चलना,

तुम्हारा फ़ैसला जानाँ

तुम्हारा फ़ैसला जानाँ, मुझे बेहद पसंद आया,
पसंद आना ही था जानाँ,
हमें अपने से इतनी दूर तक, जाना ही था जानाँ,

बजा है ख़ानुमासोज़ आरज़ुओं, तीराउमीदों,
सरासर ख़ूँशुदा ख्वाबों, नवाज़िशगर सराबों,
हाँ सराबों की क़सम यकसर बजा है,
अब हमारा जान-ओ-दिल के जाविदाँ,
दिल, जान, रिश्ते को,
और उसकी ज़ख़्मख़ुर्दा याद तक को बेनियाज़ाना,
भुला देना ही अच्छा है,
वो सरमाया, वो दिल से बेबहातर जान का सरमाया,
गँवा देना ही अच्छा है,
ज़ियाँ-ए-जाविदानी के गिलाअफ़रोज़ दागों को,
भुला देना ही अच्छा है,
तुम्हारा फ़ैसला जानाँ मुझे बेहद पसंद आया,

जानाँ - महबूब, बजा - ठीक, ख़ानुमासोज़ आरज़ुओं - घर का सारा सामान जला दे ऐसी इच्छाओं, तीराउमीदों - बुरी इच्छाएँ इच्छाएँ, ख़ूँशुदा - ख़ून में डूबे हुए, नवाज़िशगर - दानी, सराबों - मृगतृष्णा, यकसर - पूरा, जाविदाँ - अमर, ज़ख़्मख़ुर्दा - ज़ख़्मी, बेनियाज़ाना - लापरवाही से, सरमाया - पूंजी, बेबहातर - अजीब से भी अजीब, ज़ियाँ-ए-जाविदानी - अमर होने का नुक़सान, गिलाअफ़रोज़ दाग़ - शिकायत के चमकते हुए दाग़,

लिबास

तुझसे नहीं रहा है कोई नामा-ओ-पयाम
अरसा गुज़र गया है की बेइल्तिमास हूँ

तुझको यक़ीन आए न आए, ये और बात,
मैं तुझसे दूर रह के भी तेरे ही पास हूँ

मुमकिन कहाँ है तुझसे जुदाई मता-ए-जाँ,
तू है मेरा लिबास, मैं तेरा लिबास हूँ,

नामा-ओ-पयाम - ख़त और ख़बर, बेइल्तिमास - विनती के बिन, मता-ए-जाँ - जान की पूंजी,

मेरे गुस्से के बाद भी

"फारहा" ! क्या बहुत ज़रूरी है ?
हर किसी शेरसाज़ को पढ़ना
क्या मेरी शायरी में कम है गुदाज़ ?
क्या किसी दिलगुदाज़ को पढ़ना
यानी मेरे सिवा भी और किसी
शायर-ए-दिलनवाज़ को पढ़ना

क्या किसी और की हो तुम महबूब
क्यूँ किसी फनतराज़ को पढ़ना
हद है, ख़ुद तुमको भी नहीं आया
अपने क़ुरआन-ए-नाज़ को पढ़ना
यानी ख़ुद अपने ही करिश्मों की
दास्तान-ए-दराज़ को पढ़ना

ठीक है, गर तुम्हें पसंद नहीं
अपनी रूदाद-ए-राज़ को पढ़ना
वाक़ई, तुम को चाहिए भी नहीं
मुझ से बेइम्तियाज़ को पढ़ना
क्यूँ तुम्हारी अना क़ुबूल करे
मुझ से इक बेनियाज़ को पढ़ना

मेरे गुस्से के बाद भी तुमने
नहीं छोड़ा "मजाज़" को पढ़ना

"फारहा" - जौन एलिया की प्रेमिका का नाम, शेरसाज़ - शायर, गुदाज़ - सुंदरता, दिलगुदाज़ - सुंदर दिल वाला, शायर-ए-दिलनवाज़ - दिल देने वाला शायर, फनतराज़ - शायरी को सजाने वाला, दास्तान-ए-दराज़ - लंबी कहानी, रूदाद-ए-राज़ - रहस्यमयी कहानी, बेइम्तियाज़ - बदतमीज़, अना - आत्मसम्मान, बेनियाज़ - लापरवाह, मजाज़ - उर्दू के एक बहुत बड़े शायर का नाम "मजाज़ लखनवी"

काश ऐ काश

काश, ऐ काश, हम ठहर सकते,

ये सितारे, ये शबनमी आँसू,
न लुटाओ ये क़ीमती आँसू,
कल भी आँसू थे, आज भी आँसू,
हो गयी अपनी ज़िंदगी आँसू,

थी ये हसरत के ज़ख़्म भर सकते,
काश, ऐ काश, हम ठहर सकते,

जान-ए-जानाँ, ये नाज़नीं गेसू,
निकहतअफ्शां-ओ-सुम्बलीं, गेसू,
हाय आशोबआफ़रीं गेसू,
ये परेशान, अम्बरीं गेसू,

वाये हसरत की ये संवर सकते,
काश ,ऐ काश, हम ठहर सकते,

हमको ख़ुद से गुज़र ही जाना था,
यूँ हर इक ज़ख़्म भर ही जाना था,
जो था करना, वो कर ही जाना था,
ऐसे आलम में मर ही जाना था,

शर्म आती है, काश, मर जाते,
काश, ऐ काश, हम ठहर जाते,

निख़तअफ्शां-ओ-सुम्बलीं - ख़ुश्बू लुटाने वाले और ख़ुश्बूदार, गेसू - बाल, आशोबआफ़रीं - बधाई देने का शोर करते हुए, अम्बरीं - ख़ुश्बूदार, वाये - हाय, आलम - माहौल,

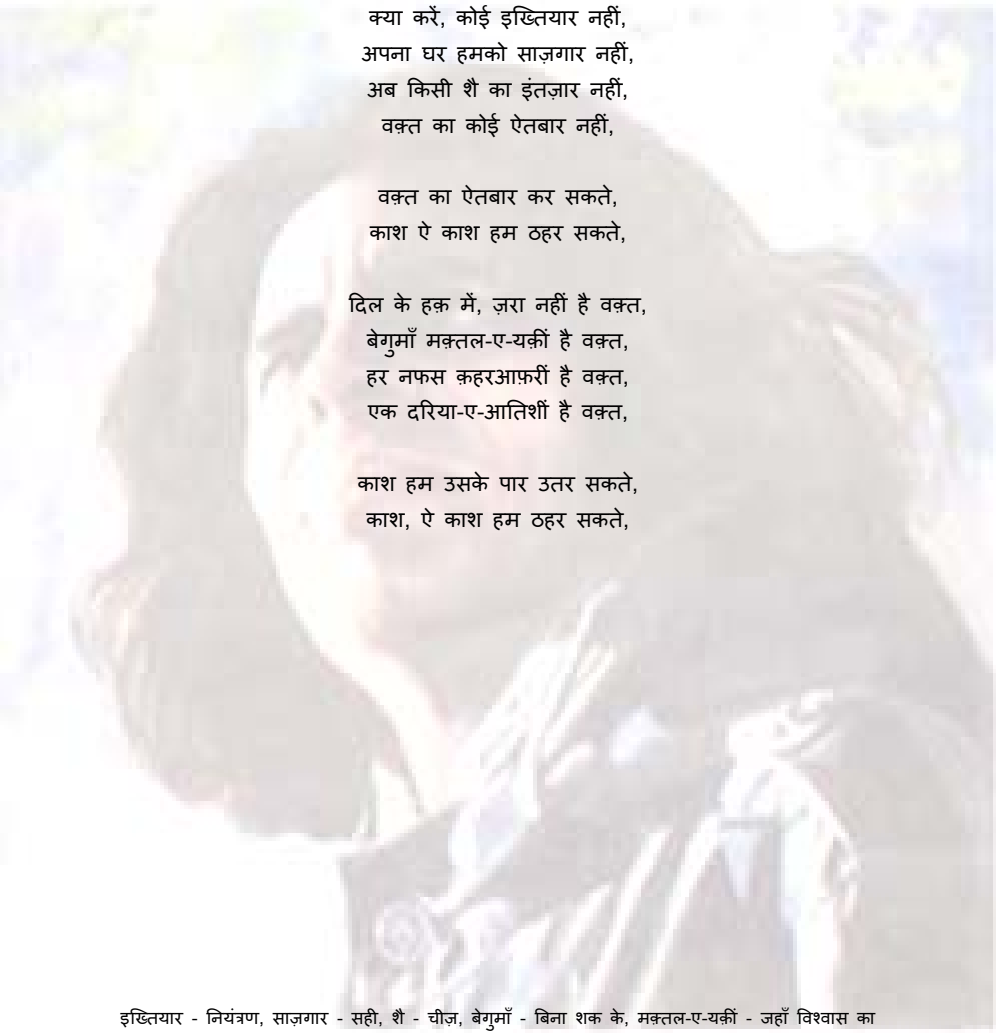

क्या करें, कोई इख्तियार नहीं,
अपना घर हमको साज़गार नहीं,
अब किसी शै का इंतज़ार नहीं,
वक़्त का कोई ऐतबार नहीं,

वक़्त का ऐतबार कर सकते,
काश ऐ काश हम ठहर सकते,

दिल के हक़ में, ज़रा नहीं है वक़्त,
बेगुमाँ मक़्तल-ए-यक़ीं है वक़्त,
हर नफस क़हरआफ़रीं है वक़्त,
एक दरिया-ए-आतिशीं है वक़्त,

काश हम उसके पार उतर सकते,
काश, ऐ काश हम ठहर सकते,

इख्तियार - नियंत्रण, साज़गार - सही, शै - चीज़, बेगुमाँ - बिना शक के, मक़्तल-ए-यक़ीं - जहाँ विश्वास का ख़ून हुआ हो, नफस - पल, क़हर की ख़बर देने वाला, दरिया-ए-आतिशीं - आग का दरिया,